WALIDAIN, ZAUJAIN AUR ASATIZA KE HUQOOQ (HINDI)

फ़तावा रज़विय्या के एक रिसाले

''अल हुक़ूक़ु लि त़रहिल उ़क़ूक़'' का ह़ाशिया मअ़ तख़रीज व इज़ाफ़ा

वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

मुसन्निफ़ : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

इस रिसाले में आप पढ़ेंगे .....

- बाप की तौहीन करने वाले का शरई हुक्म
- सौतेली मां की ता'ज़ीम व ह़ुर्मत
- मां-बाप में से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?
- मां-बाप के हुक़ूक़ के बारे में अह़ादीस
- वालिदैन के ना फ़रमान की इमामत का शरई हुक्म
- शागिर्द और उस्ताज़ के हुक़ूक़ का बयान
- ह़सद की मज़म्मत और ह़ासिद की सज़ा
- बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देने का अन्जाम
- इल्मे दीन की तौहीन करना कैसा ?

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

www.dawateislami.net

"वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़" का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब 'उर्दू' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम ह़ाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

नम्बर	उ़नवानात	सफ़्हा
1	निय्यतें.....	11
2	कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या.....	12
3	पेशे लफ़्ज़.....	15
4	पहले इसे पढ़िये.....	18
5	वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ए किराम के हुक़ूक़ की तफ़्सील और इन की अदाएगी के त़रीक़े.....	26
6	चार मसाइल पर मुश्तमिल एक इस्तिफ़्ता.....	26
7	मस्अलए ऊला.....	26
8	ना फ़रमान बेटे ने बाप की कुल जाइदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया और बाप की तज़्लील व तौहीन का मुर्तकिब हुवा, वोह कहां तक गुनहगार है ?.....	26
9	बाप की तौहीन करने वाला फ़ासिक़, फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर और ना फ़रमान है	27
10	बाप के ना फ़रमान के लिये वईदाते शदीदा.....	27
11	वालिद के गुस्ताख़ के लिये सख़्त वईदों पर मुश्तमिल ह़दीसें.....	28
12	तीन अश्ख़ास जन्नत से महरूम.....	29

www.dawateislami.net

13	दय्यूस की ता'रीफ़.....	29
14	मस्अलए सानिय्या.....	32
15	सौतेली मां का क्या ह़क़ है ? और इस पर तोहमते बद लगाने वाले सौतेले बेटे का क्या हुक्म है ?.....	32
16	किसी मुसलमान पर तोहमत लगाना ह़रामे क़त़ई है ख़ुसूसन तोहमते ज़िना..	32
17	तोहमते ज़िना लगाने वाले को अस्सी (80) कोड़े लगते हैं.....	32
18	ज़िना की तोहमत लगाने वाले की गवाही ना मक़्बूल है.....	32
19	सौतेली मां की ता'ज़ीम व हुरमत लाज़िमी है.....	32
20	ह़क़ीक़ी मां की त़रह़ सौतेली मां भी बेटे पर हमेशा के लिये ह़राम है.....	32
21	बाप के तअ़ल्लुक़ दारों के साथ भलाई की ताकीद.....	33
22	मस्अलए सालिसा.....	34
23	औलाद पर बाप का ह़क़ ज़ियादा है या मां का ?.....	34
24	मां-बाप के साथ नेक बरताव की ताकीद.....	35
25	अह़ादीसे करीमा से सुबूत कि मां का ह़क़, बाप के ह़क़ से ज़ाइद है.....	35
26	ख़िदमत में मां और ता'ज़ीम में बाप का ह़क़ ज़ियादा है.....	37

www.dawateislami.net

27	मस्अलए राबिआ़.....	39
28	शोहर और बीवी के दरमियान ज़ियादा ह़क़ किस का है और कहां तक ?..	39
29	ज़ौजा पर सब से बड़ा ह़क़ शोहर का है या'नी मां-बाप से भी ज़ियादा.....	39
30	वालिदैन के फ़ौत हो जाने के बा'द औलाद पर लागू होने वाले बारह हुक़ूक़ की तफ़्सील.....	40
31	उ़श्र से क्या मुराद है ? (ह़ाशिया).....	41
32	नमाज़ और रोज़े का कफ़्फ़ारा क्या है ? (ह़ाशिया).....	41
33	फ़ौत शुदा वालिदैन के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ इक्कीस (21) अह़ादीस.....	44
34	मां के ह़क़ के बारे में सह़ाबी का सुवाल और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जवाब	57
35	वालिदैन के ना फ़रमान की इमामत, उस के साथ मुआ़मलात और उस के लिये ता'ज़ीरे शरई़ से मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्ता.....	59
36	अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन को सताना सब से बड़ा गुनाह है.....	59
37	वालिदैन को सताने वाले के लिये अह़ादीस में सख़्त वईदें	60
38	तीन अश्ख़ास जन्नत में दाख़िल न होंगे.....	60

www.dawateislami.net

39	तीन शख़्सों के फ़र्ज़ व नफ़्ल अल्लाह तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता.......	60
40	वालिदैन को सताने वाला और उन को गाली देने वाला मलऊ़न है..........	61
41	मां को नाराज़ करने वाले की ज़बान पर वक़्ते नज़्अ़ कलिमा जारी ना होने का ख़ौफ़..	62
42	अ़व्वाम बिन हौशब رضی اللہ تعالٰی عنہ अइम्मए तब्ए़ ताबेई़न में से हैं इन का इन्तिक़ाल सिने 148 हिजरी में हुवा..	62
43	मां के गुस्ताख़ का सबक़ आमोज़ वाक़िआ़.....................................	63
44	ज़रूरिय्याते दीन से क्या मुराद है ? (हाशिया).................................	63
45	झूट बोलने और चोरी करने वाले की इमामत मकरूहे तह़रीमी है............	63
46	मां के गुस्ताख़ के पीछे नमाज़ सख़्त मकरूहे तह़रीमी, क़रीब ब ह़राम, वाजिबुल इआ़दा है..	63
47	वालिदैन के ना फ़रमान के साथ खाना पीना, उठना बैठना मन्अ़ है बल्कि उस से बुग़्ज़ व नफ़रत रखना चाहिये..	65
48	मां-बाप को सताने वाला सख़्त से सख़्त ता'ज़ीर का मुस्तह़िक़ है...........	65

www.dawateislami.net

49	अगर चोरी शरई गवाही से साबित हो जाए तो हाकिमे शरअ़ उस चोर का हाथ कलाई से काट देगा.....	65
50	क्या मरज़े मौत में अपने तमाम हुक़ूक़ मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ हो जाते हैं ?	67
51	हुक़ूक़े मालिया की मुआ़फ़ी वुरसा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ होगी.....	68
52	क्या क़र्ज़दार के लिये येह काफ़ी है कि क़र्ज़ ख़्वाह से कहे कि मुझ पर तुम्हारा जो क़र्ज़ है मुझे मुआ़फ़ कर दो या ज़रूरी है कि क़र्ज़ की मिक़्दार मुअ़य्यन करे.....	69
53	ग़ीबत कब हक़्क़ुल अ़ब्द होती है और उस की मुआ़फ़ी की क्या सूरत है ?...	72
54	शागिर्दों पर असातिज़ा के हुक़ूक़ का बयान.....	75
55	आ़लिमे दीन हर मुसलमान के हक़ में उ़मूमन और उस्ताज़े इ़ल्मे दीन अपने शागिर्द के हक़ में ख़ुसूसन नाइबे हुज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर ﷺ है.....	77
56	जो कोई उस्ताज़े इ़ल्मे दीन को किसी त़रह़ की ईज़ा पहुंचाए वोह इ़ल्म की बरकत से महरूम रहेगा.....	78
57	दीनी उ़लूम के ऐसे उस्ताज़ का मुक़ाबला करना कैसा जो कि उ़म्र रसीदा, फ़क़ीह, आ़लिमे दीन, मुत्तक़ी और परहेज़गार होने के साथ साथ सय्यिद भी हैं ?	79
58	फ़ल्सफ़ा की कुछ कुतुब पढ़ कर अपने दीनी उ़लूम के उस्ताज़ का मुक़ाबला करना कैसा ?.....	79

www.dawateislami.net

59	शख़्से मज़कूर ने नालाइक़ी का ह़क़ अदा कर दिया और बे शुमार वुजूह से शरीअ़त के दाइरे से बाहर क़दम रख चुका है.....	82
60	पहली वज्ह.....	82
61	उस्ताज़ की नाशुक्री ख़ौफ़नाक बला, तबाह कुन बीमारी और इ़ल्म की बरकात को ख़त्म करने वाली है.....	82
62	दूसरी वज्ह	85
63	उस्ताज़ के हुक़ूक़ का इन्कार करना मुसलमानों बल्कि तमाम अ़क़्ल वालों के इत्तिफ़ाक़ के ख़िलाफ़ है.....	85
64	तीसरी वज्ह	86
65	नेकी को ह़क़ीर जानने की मज़म्मत.....	86
66	चौथी वज्ह	88
67	इ़ल्मे दीन के उस्ताज़ की इब्तिदाई ता'लीम को ह़क़ीर जानने वाले का वबाल	88
68	एक नेक शख़्स का वाक़िआ़ जिस ने अपने बेटे को "सूरए फ़ातिह़ा" पढ़ाने वाले मुअ़ल्लिम को चार हज़ार दीनार शुक्रिये के तौ़र पर पेश किये.....	89
69	पांचवीं वज्ह.....	89
70	उस्ताज़ का मुक़ाबला करना उस की नाशुक्री से ज़ाइद है.....	89
71	उस्ताज़ के ह़क़ को वालिदैन के ह़क़ पर मुक़द्दम रखना चाहिये.....	90

www.dawateislami.net

72	उस्ताज़ के फ़ज़ाइल और उस का मक़ाम व मर्तबा.....	91
73	छटी वज्ह.....	92
74	सातवीं वज्ह.....	95
75	अपने आप को उस्ताज़ से अफ़्ज़ल क़रार देना हुक्मे शरअ़ के ख़िलाफ़ है	95
76	उस्ताज़ के अदबो एह़तिराम की ताकीद.....	95
77	आठवीं वज्ह.....	96
78	शागिर्द को उस्ताज़ के बिस्तर पर नहीं बैठना चाहिये अगर्चे उस्ताज़ मौजूद न हो	96
79	नवीं वज्ह.....	98
80	शागिर्द को उस्ताज़ से आगे नहीं बढ़ना चाहिये.....	98
81	दसवीं वज्ह.....	98
82	बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देना क़त्ई ह़राम है.....	98
83	मुसलमानों को तक्लीफ़ देने वाले के लिये सख़्त वईद है.....	98
84	ग्यारहवीं वज्ह.....	100
85	मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करने वाले की मज़म्मत	100
86	बारहवीं वज्ह.....	101
87	ह़सद की ता'रीफ़.....	101
88	ह़सद की मज़म्मत और ह़ासिद के लिये अह़ादीस से वईदे शदीद.....	102

www.dawateislami.net

89	तेरहवीं वज्ह.....	103
90	अगर एक मुसलमान ने किसी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम दे रखा हो तो दूसरा मुसलमान उसे निकाह़ का पैग़ाम न दे.....	104
91	किसी के सौदे पर सौदा करना ममनूअ़ है	104
92	चौदहवीं वज्ह.....	106
93	उस शख़्स की मज़म्मत जो छोटों पर मेहरबानी और बड़ों का एह़तिराम न करे	106
94	पन्दरहवीं वज्ह.....	108
95	उ़लमाए किराम के साथ बुरा सुलूक करने वाले की बुराई बयान से बाहर है	108
96	तीन शख़्सों के हुक़ूक़ को सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही कम समझता है	109
97	सोलहवीं वज्ह.....	109
98	हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल व औलाद को अज़िय्यत पहुंचाने की शदीद मज़म्मत.....	110
99	सतरहवीं वज्ह.....	111
100	इमामत का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?.....	112
101	अठ्ठारहवीं वज्ह.....	112

www.dawateislami.net

102	इल्म को हुसूले दुन्या का ज़रीआ़ बनाने वाले शख़्स की मज़म्मत में अह़ादीस	112
103	उन्नीसवीं वज्ह.....	113
104	उ़लूमे फ़ल्सफ़ा और मन्तिक़ पढ़ने की क़बाह़तें.....	114
105	कौन सा इल्म पढ़ना फ़र्ज़, कौन सा वाजिब और कौन सा ह़राम है ?.....	115
106	ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बारगाहे रिसालत में तौरात पढ़ने और इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाराज़ होने का तज़्किरा.....	118
107	येह मर्दूद फ़ल्सफ़ा कुफ़्र और गुमराही से भरा हुवा और जहालतों का मजमूआ़ है	121
108	जिस शख़्स ने शरई क़बीह़ के मुर्तकिब को कहा तू ने अच्छा किया तो वोह काफ़िर हो गया.....	125
109	बीसवीं वज्ह	126
110	फ़ल्सफ़े को फ़िक़्ह पर तरजीह़ देना ज़िमनन इल्मे दीन की तौहीन है.....	126
111	इल्मे दीन की सराह़तन तौहीन, कुफ़्र है.....	126
112	फ़ासिक़ की इमामत मकरूहे तह़रीमी है.....	127
113	फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनाहे अ़ज़ीम में मुब्तला हैं.....	127
114	मुतकल्लिमीन की इमामत का बयान.....	129
115	मुतकल्लिमीन की इमामत में अइम्मए किराम का फ़ैसला.....	130

www.dawateislami.net

116	फ़ल्सफ़ियों की इमामत का बयान.....	131
117	ग़ैरे अहल को इमाम बनाने वाला ख़ाइन है.....	133
118	फ़रमाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : अगर तुम्हें पसन्द हो कि तुम्हारी नमाज़ मक़्बूल हो तो ऐसा शख़्स इमाम बने जो तुम में से अफ़्ज़ल हो.....	135
119	फ़रमाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि अपने बेहतरीन आदमी को इमाम बनाओ क्यूंकि वोह तुम्हारे और तुम्हारे रब के दरमियान नुमाइन्दे हैं	135
120	ख़ुलासए जवाब.....	136
121	माख़ज़ो मराजेअ़.....	138

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

"हक़ तलफ़ी से बचें" (उर्दू) के बारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "12 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

("المعجم الکبیر" للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵، داراحیاء التراث العربی بیروت)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴿2﴾ ह़त्तल वुस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴿3﴾ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴿4﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿5﴾ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿6﴾ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿7﴾ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴿8﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴿9﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴿10﴾ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इ़ल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴿11﴾ इस किताब को पढ़ कर लोगों के हुक़ूक़ की अदाएगी की कोशिश करूंगा और ह़क़ तलफ़ी से बचूंगा ﴿12﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة और अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मेरे वलिये ने'मत, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़, अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बे मिसाल ज़हानत व फ़त़ानत, कमाल दरजए फ़क़ाहत और क़दीमो जदीद उ़लूम में कामिल दस्तरस व महारत रखते थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तक़रीबन एक हज़ार कुतुब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पचपन से ज़ाइद उ़लूमो फ़ुनून में तबह़्ह़ुरे इ़ल्मी पर दाल्ल हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जिन क़लमी काविशों को बैनल अक़्वामी शोहरत ह़ासिल हुई उन में **''कन्ज़ुल ईमान''**, **''ह़दाइक़े बख़्शिश''** और **''फ़तावा रज़विय्या''** (तख़रीज शुदा 33 जिल्दें) भी शामिल हैं, आख़िरुज़्ज़िक्र तो उ़लूमो फ़ुनून का ऐसा बह़रे बे करां है जो बेशुमार व मुस्तनद मसाइल और तह़क़ीक़ाते नादिरा को अपने अन्दर समोए हुवे है, जिसे पढ़ कर क़द्रदान इन्सान बे साख़्ता पुकार उठता है कि इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुज्तहिदाना बसीरत का परतौ हैं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुतुब रहती दुन्या तक मुसलमानों के लिये मश्अ़ले राह हैं, हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की जुम्ला तसानीफ़ का ह़स्बे इस्तित़ाअ़त ज़रूर मुत़ालआ़ करे।

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तख़्रीजे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्एे रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल

www.dawateislami.net

उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेशे लफ़्ज़

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी येही कोशिश रही है कि अपने बुज़ुर्गों की किताबें अह़सन अन्दाज़ में पेश करें, चुनान्चे, इस सिलसिले में इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن के कई कुतुबो रसाइल **मक्तबतुल मदीना** से त़ब्अ़ हो कर अ़वामो ख़वास से ख़िराजे तह़सीन पा चुके हैं, इस सिलसिले की एक और कड़ी आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का एक और रिसाला "**الحقوق لطرح العقوق**" पेशे ख़िदमत है, जिस का उर्दू नाम शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने "**वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़**" रखा है।

इस रिसाले में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن ने अपनी आ़दते करीमा के मुत़ाबिक़ कुरआनो ह़दीस की रौशनी में सैर ह़ासिल गुफ़्तगू फ़रमाई है, वालिदैन के हुक़ूक़ तफ़्सील से बयान फ़रमाए कि किस मुआ़मले में बाप को तरजीह़ ह़ासिल है और किस मुआ़मले में मां को, और जब वालिदैन के दरमियान झगड़ा हो जाए तो अब येह क्या करे ?

इसी त़रह़ उन की वफ़ात के बा'द औलाद पर क्या हुक़ूक़ लाज़िम हैं इन सब को बड़े ही जामेअ़ अन्दाज़ में बयान फ़रमाया और साथ ही वालिदैन को तक्लीफ़ देने वाली ना फ़रमान औलाद के लिये अह़ादीस में मौजूद वईदें भी एक जगह बयान फ़रमा दीं कि ना फ़रमान औलाद इन अह़ादीस की रौशनी में दर्से इ़ब्रत ह़ासिल कर के अपनी दुन्या व आख़िरत संवार सके चुनान्चे, येह रिसाला औलाद को वालिदैन के हुक़ूक़ सिखाने और उन के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत उजागर करने में बेहतरीन तस्नीफ़ है।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ौजैन के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल को भी बित्तफ़्सील बयान फ़रमाया है :

मज़ीद येह कि इस रिसाले में एक नालाइक़ शागिर्द के ह़क़ में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़ारसी ज़बान में एक सुवाल किया गया जो फ़ल्सफ़े की बुन्याद पर अपने आप को दीनी उस्ताज़ पर फ़ौक़िय्यत देता था चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में तफ़्सील के साथ उस्ताज़ के हुक़ूक़ बयान करते हुवे उस ना आ़क़िबत अन्देश शागिर्द का भरपूर रद फ़रमाते हैं जिस से ज़िम्नन फ़ल्सफ़ा सीखने और सिखाने की शरई ह़ैसिय्यत भी मा'लूम हो जाती है इसी त़रह़ इस रिसाले में और भी कई हुक़ूक़ बयान किये गए हैं जिसे पढ़ कर ही इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा हो सकता है।

चुनान्चे, इस "**रिसाले**" पर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के मदनी उ़लमाए किराम سلمهم الله المنعام ने बड़ी जां फ़शानी से काम किया है जिस का अन्दाज़ा ज़ैल में दी गई काम की तफ़्सील से लगाया जा सकता है :

1. आयात व अह़ादीस और दीगर इ़बारात के ह़वाला जात की मक़्दूर भर तख़्रीज की गई है।

2. मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी, उन की तस्हील और अ़रबी, फ़ारसी इ़बारात के तर्जमे का एहतिमाम किया गया है ताकि आ़म क़ारी को भी येह "रिसाला" पढ़ने में दुश्वारी मह़सूस न हो।

3. जहां क़ुरआनी आयात का तर्जमा नहीं था वहां "**कन्ज़ुल ईमान**" से तर्जमा डाल दिया गया है, और इसी त़रह़ जहां बा'ज़ इ़बारात का तर्जमा नहीं था वहां तर्जमा कर के आख़िर में बत़ौरे इम्तियाज़ "ت" लिख दिया गया है ताकि मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तर्जमे से इम्तियाज़ रहे।

www.dawateislami.net

4. आयाते कुरआनिया को मुनक़्क़श ब्रेकेट ﴿﴾, मत़ने अह़ादीस को डबल ब्रेकेट (()), किताबों के नाम और दीगर अहम इबारात का Inverted commas “” से वाज़ेह़ किया गया है।

5. नई गुफ़्तगू नई सत़्र में दर्ज की गई है ताकि पढ़ने वालों को ब आसानी मसाइल समझ आ सकें।

6. फ़ेहरिस्त में अहम निकात को जुदा जुदा लिख कर पूरे रिसाले का इजमाली ख़ाका पेश कर दिया गया है।

7. आख़िर में माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, इन की सिने वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

इस रिसाले के पेश करने में आप को जो ख़ूबियां दिखाई दें वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे करम, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी के फ़ैज़ से हैं और जो ख़ामियां नज़र आएं उन में यक़ीनन हमारी कोताही है।

क़ारिईन ख़ुसूसन उ़लमाए किराम دامت فیوضهم से गुज़ारिश है कि इस “रिसाले” के मे'यार को मज़ीद बेहतर बनाने के बारे में हमें अपनी क़ीमती आरा से तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं।

दुआ है कि **अल्लाह** तआ़ला इस “रिसाले” को अ़वामो ख़वास के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए !

آمین بجاہ النبی الامین صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہ واصحابہ وبارک وسلم!

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **(अल मदीनतुल इल्मिय्या)**

www.dawateislami.net

अस्ल क़िताब शुरूअ़ करने से पहले इसे पढ़िये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में वालिदैन, असातिज़ए किराम और मियां बीवी के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द सुवालात पेश किये गए, आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने उन सुवालात के जवाबात क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में बेहतरीन अन्दाज़ में दलाइल के साथ इरशाद फ़रमाए, क़ारिईन की सहूलत के लिये अस्ल किताब से पहले इन सुवालात के जवाबात का ख़ुलासा तरतीब वार पेश किया जा रहा है ताकि आइन्दा सफ़ह़ात पर आने वाले रिसाले ''الحقوق لطرح العقوق'' को समझने में आसानी रहे।

''इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की त़रफ़ से दिये गए सुवालात के जवाबात का आसान ख़ुलासा''

सुवाल नम्बर 1

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से सुवाल किया गया कि एक लड़के ने अपने वालिद की तौहीन की और उसे ज़लील किया और उस की तमाम जाइदाद पर क़ब्ज़ा कर के बाप के लिये कुछ न छोड़ा, ऐसे शख़्स का क्या हुक्म है ?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने जवाबन इरशाद फ़रमाया कि ऐसा शख़्स बहुत सख़्त गुनहगार और अल्लाह तआ़ला के सख़्त अ़ज़ाब का ह़क़दार है क्यूंकि बाप की ना फ़रमानी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी है और बाप की नाराज़ी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है, अगर वालिदैन राज़ी हैं तो उसे जन्नत मिलेगी अगर वालिदैन नाराज़ हों तो दोज़ख़ में जाएगा। लिहाज़ा उसे

www.dawateislami.net

चाहिये कि जल्द अज़ जल्द वालिदैन को राज़ी करे वरना उस की कोई फ़र्ज़ व नफ़्ल इबादत क़बूल न होगी और मरते वक़्त कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है, फिर आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने अपनी इस तमाम गुफ़्तगू पर अहादीसे करीमा पेश कीं जो आप इस रिसाले में आइन्दा सफ़हात पर मुलाहज़ा फ़रमाएंगे ।

सुवाल नम्बर 2

सय्यिदी आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से येह पूछा गया कि बेटे पर सौतेली मां का क्या हक़ है और जो सौतेली मां पर तोहमत लगाए उस का क्या हुक्म है ?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि किसी मुसलमान पर तोहमत लगाना क़त्अ़न हराम है और ज़िना की तोहमत लगाना वोह भी सौतेली मां पर, बहुत बड़ा गुनाह है, शरअ़न ऐसा शख़्स फ़ासिक़ और 80 कोड़ों का मुस्तहिक़ है और ऐसे शख़्स की गवाही भी मक़्बूल नहीं है ।

सुवाल नम्बर 3

सय्यिदी आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से सुवाल किया गया कि औलाद पर मां का हक़ ज़ियादा है या बाप का ?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इरशाद फ़रमाया कि औलाद पर मां और बाप दोनों का हक़ निहायत अ़ज़ीम है । अलबत्ता ! मां का हक़ बाप के हक़ से ज़ियादा है । फिर आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इस पर क़ुरआनी आयात और अहादीस पेश कीं और आख़िर में फ़रमाया कि मां का हक़ बाप से ज़ियादा होने से येह मुराद है कि ख़िदमत और लेने देने के मुआ़मलात में मां का हक़ ज़ियादा है जब कि अदबो एह़तिराम में बाप का हक़, मिसाल के तौ़र पर बेटे के पास सौ

www.dawateislami.net

रूपे हैं तो बेटा मां को पछत्तर और बाप को पच्चीस रूपे दे। इस के इलावा भी आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने बड़ी प्यारी मिसालें पेश फ़रमाईं। फिर आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने येह भी बयान फ़रमाया कि जब मां और बाप का आपस में झगड़ा हो जाए तो औलाद क्या करे, किस का साथ दे? जिस की तफ़्सील आप को इसी रिसाले में पढ़ने को मिलेगी जिसे पढ़ कर आप का दिल बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

सुवाल नम्बर 4

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से येह सुवाल भी किया गया कि मियां बीवी में से किस के हुक़ूक़ ज़ियादा हैं?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इरशाद फ़रमाया कि दोनों के एक दूसरे पर हुक़ूक़ बराबर हैं अलबत्ता! औ़रत पर शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी के बारे में अह़ादीस कसीर हैं जिन में शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी पर बहुत ज़ोर दिया गया है और एक ह़दीस में तो यहां तक है कि "औ़रत पर सब से बड़ा ह़क़ उस के शोहर का है या'नी मां-बाप से भी ज़ियादा और मर्द पर ज़ियादा ह़क़ मां का है या'नी बीवी से भी ज़ियादा।"

सुवाल नम्बर 5

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से एक सुवाल येह भी किया गया कि वालिदैन के इन्तिक़ाल के बा'द औलाद पर किन किन हुक़ूक़ की अदाएगी लाज़िम है?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने वालिदैन के इन्तिक़ाल के बा'द इन के हुक़ूक़ तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाए मसलन :

www.dawateislami.net

(1) उन की मौत के बा'द ग़ुस्ल, कफ़न, दफ़न और नमाज़ के मुआ़मलात में, सुन्नतों और मुस्तह़ब्बात का ख़याल रखे ।

(2) उन के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करता रहे ।

(3) सदक़ा, ख़ैरात और नेकियां कर के इन का सवाब वालिदैन को पहुंचाए ।

(4) उन पर क़र्ज़ हो तो उस की अदाएगी में जल्दी करे ।

(5) उन पर कोई फ़र्ज़ इबादत रह गई हो तो कोशिश कर के उस की अदाएगी करे मसलन नमाज़ व रोज़ा उन के ज़िम्मे बाक़ी हो तो उस का कफ़्फ़ारा (फ़िदया) दे ।

(6) तिहाई माल से ज़ाइद माल में उन की जाइज़ वसिय्यत को पूरा करने की कोशिश करे ।

(7) उन की क़सम उन की वफ़ात के बा'द भी सच्ची रखे मसलन जिन कामों से उन की ज़िन्दगी में बाज़ रहता था बा'दे वफ़ात भी रुका रहे ।

(8) हर जुमुआ़ उन की क़ब्र की ज़ियारत को जाए और वहां तिलावते क़ुरआन करे ।

(9) उन के रिश्तेदारों के साथ उ़म्र भर नेक सुलूक करे ।

(10) उन के दोस्तों का हमेशा अदबो एह़तिराम करे ।

(11) कभी किसी के वालिदैन को बुरा कह कर अपने वालिदैन को बुरा न कहलवाए ।

(12) और सब से बड़ा ह़क़ येह है कि गुनाह कर के क़ब्र में उन को तक्लीफ़ न पहुंचाए ।

अल ह़ासिल ! वालिदैन के इन्तिक़ाल के बा'द उन के हुक़ूक़ की इस क़दर तफ़्सील से ब ख़ूबी पता चल जाता है कि दीने इस्लाम में वालिदैन की वफ़ात के बा'द भी उन की क़द्रो मन्ज़िलत और मक़ाम बहुत बुलन्दो बाला है ।

www.dawateislami.net

सुवाल नम्बर 6

इस सुवाल में आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया कि एक शख़्स जो कुछ समझ बूझ रखता है अपने वालिदैन पर ज़ुल्मो सितम करता है ख़ुद भी उन्हें गालियां देता है और दूसरों से भी दिलवाता है और साथ ही झूट बोलने और चोरी करने जैसे बुरे अफ़्आ़ल से पहचाना जाता है लिहाज़ा ऐसे शख़्स का शरअ़न क्या हुक्म है, उस के पीछे नमाज़ पढ़ना, उस की दा'वत करना, और उस की दा'वत में शरीक होना उसे सदक़ा वग़ैरा देना कैसा है जो उस की ताईद करे और उस का साथ दे उस के बारे में क्या हुक्मे शरई है ?

आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने जवाब इरशाद फ़रमाया कि ऐसा शख़्स न सिर्फ़ गुनहगार बल्कि गुनहगारों का सरदार है, अ़ज़ाबे इलाही का ह़क़दार और बहुत बड़ा बदकार है ऐसे शख़्स को इमाम बनाना और उस के पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है और जितनी नमाज़ें पढ़ लीं उन नमाज़ों का दोबारा पढ़ना वाजिब है और जो कोई ऐसे शख़्स को इमाम बनाए वोह भी गुनहगार है क्यूंकि शरअ़न ऐसे से नफ़रत करने और ता'ज़ीम न करने का हुक्म है उस की दा'वत करना या उस के घर में दा'वत खाना बल्कि उस से दोस्ती करना भी जाइज़ नहीं, और जो उस की ताईद करते हैं वोह भी सख़्त गुनहगार हैं फिर आप عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इन अह़कामे शरइ़य्या पर अह़ादीस बयान फ़रमाईं ।

सुवाल नम्बर 7

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से सातवां सुवाल येह किया गया कि एक औ़रत जिसे बीमारी की ह़ालत में अपनी मौत का यक़ीन हो गया था उस ने कुछ रिश्तेदारों की मौजूदगी में अपने शोहर को मुख़ात़ब कर के अपनी ग़लति़यों और कोताहियों की मुआ़फ़ी चाही और अपने तमाम हुक़ूक़ भी शोहर को मुआ़फ़ कर दिये जब कि मह्र, जो शोहर ने अब तक अदा न किया था उसे

www.dawateislami.net

भी अ़लाहिदा से मुआ़फ़ किया, इसी त़रह़ शोहर ने भी अपने तमाम हुक़ूक़ बीवी को मुआ़फ़ कर दिये, अब पूछना येह है कि इस त़रह़ से दोनों के तमाम हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो गए या फिर हर हर ह़क़ व ख़त़ा की तफ़्सील बयान कर के मुआ़फ़ी मांगनी ज़रूरी थी, और बीवी ने शोहर को अपनी मौत के वक़्त जो महर मुआ़फ़ किया वोह मुआ़फ़ हो गया या फिर मरज़े मौत के ज़माने में होने की वज्ह से इस पर वसिय्यत के अह़काम नाफ़िज़ होंगे ?

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने क़वानीने शरइ़य्या की रौशनी में पुर दलील जवाब इरशाद फ़रमाया कि जहां तक शोहर और बीवी के आ़म हुक़ूक़ की मुआ़फ़ी का मुआ़मला है वोह तो मुआ़फ़ हो गए लेकिन बीवी के हुक़ूक़े मालिया मसलन महर वग़ैरा, तो वोह बीवी के वुरसा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है अगर वोह मुआ़फ़ कर दें तो मुआ़फ़, वरना वोह तक़ाज़ा कर सकते हैं, और बीवी के वोह हुक़ूक़ जो माल के इ़लावा हैं मसलन किसी बात पर नाराज़ी वग़ैरा, इसी त़रह़ शोहर के वोह हुक़ूक़ जिन का तअ़ल्लुक़ माल व ग़ैरे माल से है इस में जो कुछ शोहर और बीवी के इ़ल्म में थे वोह सब मुआ़फ़ हो गए और जो इ़ल्म में न थे मगर मा'मूली थे कि मा'लूम होने पर भी मुआ़फ़ कर देते तो वोह भी मुआ़फ़ हो गए।

हां अलबत्ता ! मियां बीवी के वोह हुक़ूक़ जिन की तफ़्सील जानने के बा'द दोनों में से कोई एक भी अपने ह़क़ को मुआ़फ़ नहीं करता तो ऐसे हुक़ूक़ के मुआ़फ़ होने या न होने के बारे में उ़लमाए किराम के दरमियान इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ उ़लमाए किराम कहते हैं : मुजमल या'नी मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में हुक़ूक़ की तफ़्सील बयान किये बिग़ैर भी मुआ़फ़ी त़लब करने की सूरत में तमाम हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो जाएंगे।

www.dawateislami.net

जब कि बा'ज़ दूसरे उ़लमाए किराम कहते हैं :

हर हर ह़क़ को तफ़्सील से बता कर मुआ़फ़ी मांगने की सूरत में ही हुक़ूक़ मुआ़फ़ होंगे वरना वोह हुक़ूक़ ज़िम्मे पर लाज़िम रहेंगे ।

चुनान्चे, इख़्तिलाफ़े अइम्मा ज़िक्र करने के बा'द सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ज़बरदस्त अन्दाज़ में मस्अले की तह़क़ीक़ पेश करते हैं कि :

वोह बड़े हुक़ूक़ जिन की तफ़्सील बयान की जाती तो साह़िबे ह़क़ मुआ़फ़ न करता तो उन जैसे हुक़ूक़ की मुआ़फ़ी के लिये तफ़्सील बयान करना ज़रूरी है। हां ! अगर उन हुक़ूक़ की मुआ़फ़ी के लिये ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जाएं कि "**दुन्या भर में सख़्त से सख़्त जो ह़क़ मुतसव्वर** (तसव्वुर किया जा सकता) **हो वोह सब मेरे लिये फ़र्ज़ कर के मुआ़फ़ कर दे**" और उस ने मुआ़फ़ कर दिये तो इस त़रह़ से बिग़ैर तफ़्सील बयान किये भी तमाम छोटे बड़े हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो जाएंगे ।

सुवाल नम्बर 8

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया कि उस्ताज़ के क्या हुक़ूक़ हैं ?

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने "मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल", "आ़लमगीरी", "ग़राइब", "तातार ख़ानिय्या" की रौशनी में इस सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाया कि उस्ताज़ के हुक़ूक़ को वालिदैन और तमाम मुसलमानों के हुक़ूक़ से भी मुक़द्दम रखे चुनान्चे, उस्ताज़ का हर त़रह़ से अदबो एह़तिराम करे, उस से आगे न चले, उस के बैठने की जगह पर न बैठे, उस से बात चीत में पहल न करे, चाहे उस्ताज़ ने एक ही ह़र्फ़ पढ़ाया हो फिर भी अदब करे, हां अलबत्ता ! जब किसी ऐसे काम के करने का हुक्म दे जो

www.dawateislami.net

शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो तो हरगिज़ हरगिज़ न करे कि ह़दीसे पाक में है : "अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त नहीं ।"

सुवाल नम्बर 9

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से आख़िरी सुवाल येह किया गया कि एक आ़लिम साह़िब जो सय्यिद, शरीफ़ुन्नसब, बुज़ुर्ग, मुत्तक़ी व परहेज़गार हैं मस्जिद में इमामत करते और बच्चों को दीनी ता'लीम देते हैं एक कम मर्तबा शख़्स ने उन सय्यिद साह़िब से इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया और फिर बा'द में किसी और से फ़ल्सफ़ा वग़ैरा पढ़ कर अपने उन्हीं उस्ताज़ पर बरतरी ज़ाहिर करना शुरूअ़ कर दी यहां तक कि पैसों की लालच में आ कर अपने उस्ताज़ को मस्जिद से निकलवाने की भी कोशिश शुरूअ़ कर दी ताकि ख़ुद उन की जगह पर क़ाबिज़ हो जाए, शरअ़न ऐसा शख़्स इमामत के लाइक़ है या नहीं ?

इस सुवाल के जवाब में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ कुरआनो ह़दीस और फ़ुक़हाए किराम के अक़्वाल की रौशनी में दलाइल के अम्बार लगा दिये, आ़लिम का शरई ह़क़, उस की शानो शौकत, उस का मक़ाम और मर्तबा ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान फ़रमाया ।

आख़िर में उस बद बात़िन शख़्स के बारे में हुक्मे शरई इरशाद फ़रमाया कि :

वोह बद तरीन फ़ासिक़ो फ़ाजिर है, उस्ताज़ की बे अदबी करने की वज्ह से सख़्त सज़ा का मुस्तह़िक़ है, न तो उस की इमामत जाइज़ और न ही किसी मुसलमान को उस की सोह़बत में बैठना जाइज़ ।

चुनान्चे, उस सय्यिद फ़क़ीह आ़लिमे दीन को इमामत से हटाना और उस की जगह फ़ल्सफ़े के दा'वेदार बे वुक़ूफ़ को मुक़र्रर करना नाजाइज़ है ।

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نحمده ونصلّي على رسوله الكريم

12 शा'बान सिने 1311 हिजरी

मस्अला : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन **इन मसाइल में**[1] **:**

मस्अलए ऊला

पिसर[2] ने अपने बाप की ना फ़रमानी इख़्तियार कर के **कुल जाइदादे पिदर**[3] पर क़ब्ज़ा कर लिया और **बाप के वासिते औक़ाते बसरी के कुछ न छोड़ा बल्कि दरपे तज़लील व तौहीने पिदर के है**[4] और **अल्लाह** جل شانہٗ **ने वासिते इताअ़ते पिदर के कलाम अपने में फ़रमाया है,**[5]

---

1 .....साइल ने यहां आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, रहबरे शरीअ़त, आ़शिक़े माहे रिसालत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن से यके बा'द दीगरे चार सुवालात किये जिन के आप عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن ने अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा तरतीब वार जवाबात इरशाद फ़रमाए।

2 .....बेटे।

3 .....बाप की तमाम जाइदाद।

4 .....बाप के पास गुज़र औक़ात के लिये कुछ नहीं छोड़ा बल्कि बाप को ज़लीलो रुस्वा करने में लगा हुवा है।

5 .....**अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने बाप की फ़रमांबरदारी के लिये अपने कलामे मजीद व फ़ुरक़ाने ह़मीद में ताकीद फ़रमाई है।

www.dawateislami.net

सूरते हाज़ा में **उस ने ख़िलाफ़े फ़रमूदए ख़ुदा किया, वोह मुन्किरे हुक्मे ख़ुदा हुवा या नहीं ?**[1] और **मुन्किरे कलामे रब्बानी के वासिते**[2] क्या हुक्मे शरअ़ शरीफ़ है ? और वोह कहां तक गुनहगार है ?

بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا (बयान फ़रमाओ, अज्र पाओ । ت)

अल जवाब

पिसरे मज़कूर, फ़ासिक़, फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर, आक़ है और इसे सख़्त अ़ज़ाब व ग़ज़बे इलाही का इस्तिह़क़ाक़[3], बाप की ना फ़रमानी **अल्लाह** जब्बारो क़ह्हार की ना फ़रमानी है और बाप की नाराज़ी **अल्लाह** जब्बारो क़ह्हार की नाराज़ी है, आदमी मां-बाप को राज़ी करे तो वोह उस के जन्नत हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के दोज़ख़ हैं, जब तक मां-बाप को राज़ी न करेगा उस का कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, **कोई अ़मले नेक अस्लन क़बूल न होगा**[4], अ़ज़ाबे आख़िरत के इ़लावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला नाज़िल होगी मरते वक़्त مَعَاذَاللّٰه कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है ।

ह़दीस में है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

---

1 .....इस सूरत में उस ने **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के पाक इरशाद के ख़िलाफ़ किया चुनान्चे, अब वोह **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म का इन्कार करने वाला हुवा या नहीं ?

2 .....**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के कलाम का इन्कार करने वाले के लिये ।

3 .....जिस फ़रज़न्द का ज़िक्र किया गया है, वोह बद चलन, बदकार, कबीरा गुनाह करने वाला, ना फ़रमान है और **अल्लाह** तआ़ला के सख़्त अ़ज़ाब और ग़ज़ब का मुस्तह़िक़ ।

4 .....कोई नेक काम हरगिज़ क़बूल नहीं होगा ।

www.dawateislami.net

((طَاعَةُ اللّٰهِ طَاعَةُ الوَالِدِ وَمَعْصِيَةُ اللّٰهِ مَعْصِيَةُ الوَالِدِ)).

رواه الطبراني عن أبي هريرة رضي اللّٰه تعالٰى عنه[1]۔

अल्लाह की इताअ़त है वालिद की इताअ़त, और अल्लाह की मा'सियत है वालिद की मा'सियत (त़बरानी ने इसे अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

दूसरी ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((رِضَى اللّٰهِ فِيْ رِضَى الْوَالِدِ وَسَخَطُ اللّٰهِ فِيْ سَخَطِ الْوَالِدِ))، رواه الترمذي وابن حبان في "صحيحه" والحاكم عن عبد اللّٰه بن عمرو رضي اللّٰه تعالٰى عنهما[2]۔

अल्लाह की रिज़ा वालिद की रिज़ा में है और अल्लाह की नाराज़ी वालिद की नाराज़ी में, (तिरमिज़ी और इब्ने ह़ब्बान ने अपनी ''सह़ीह़'' में और ह़ाकिम ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

तीसरी ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((هُمَا جَنَّتُكَ وَنَارُكَ))، رواه ابن ماجه عن أبي أمامة رضي اللّٰه تعالٰى عنه[3]۔

मां-बाप तेरी जन्नत और तेरी दोज़ख़ हैं, (इब्ने माजा ने अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसे रिवायत किया। ت)

---

1 ..... "المعجم الأوسط"، من اسمه أحمد، الحديث: ٢٢٥٥، ج١، ص٦١٤.

2 ..... "صحيح ابن حبان"، كتاب البر والإحسان، باب حق الوالدين، الحديث: ٤٣٠، ج١، ص٣٢٨، "سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، باب ما جاء من الفضل في رضا الوالدين، الحديث: ١٩٠٧، ج٣، ص٣٦٠.

3 ..... "سنن ابن ماجه"، كتاب الأدب، باب برّ الوالدين، الحديث: ٣٦٦٢، ج٤، ص١٨٦.

www.dawateislami.net

चौथी ह़दीस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((اَلْوَالِدُ أَوْسَطُ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ فَإِنْ شِئْتَ فَأَضِعْ ذٰلِكَ الْبَابَ أَوِ احْفَظْهُ)) رواه الترمذي وصححه وابن ماجه وابن حبان عن أبي الدرداء رضي الله تعالٰى عنه[1]۔

वालिद जन्नत के सब दरवाज़ों में बीच का दरवाज़ा है अब तू चाहे तो उस दरवाज़े को अपने हाथ से खो दे ख़्वाह निगाह रख (तिरमिज़ी ने इसे रिवायत किया और इस की तस्ह़ीह़ की, और इब्ने माजा व इब्ने ह़ब्बान ने अबू दरदा से इसे रिवायत किया। ت)

पांचवीं ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((ثَلَاثَةٌ لَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ: اَلْعَاقُّ لِوَالِدَيْهِ وَالدَّيُّوْثُ وَالرَّجُلَةُ مِنَ النِّسَاءِ))، رواه النسائي والبزار بإسناد جيّد والحاكم عن ابن عمر رضي الله تعالٰى عنهما[2]۔

तीन शख़्स जन्नत में न जाएंगे : मां-बाप की ना फ़रमानी करने वाला और **दय्यूस**[3] और वोह औ़रत कि मर्दानी वज़्अ़ बनाए। (निसाई और बज़्ज़ार ने अस्नादे जय्यिद के साथ और ह़ाकिम ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

1 ....."سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، باب ما جاء من الفضل في رضا الوالدين، الحديث: ١٩٠٦، ج٣، ص٣٥٩.

2 ....."المستدرك"، كتاب الإيمان، ثلاثة لا يدخلون الجنّة، الحديث: ٢٥٢، ج١، ص٢٥٢.

3 .....वोह नादान शख़्स जो इस बात की परवाह न करे कि उस की बीवी किस किस ग़ैर मर्द से मिलती है।

www.dawateislami.net

छटी ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((ثَلَاثَةٌ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ -عَزَّ وَجَلَّ- مِنْهُمْ صَرْفاً وَلَا عَدْلاً: عَاقٌّ وَمَنَّانٌ وَمُكَذِّبٌ بِقَدَرٍ))، رواه ابن أبي عاصم في "السنّة" بسند حسن عن أبي أمامة رضي الله تعالى عنه[1]۔

तीन शख़्सों का कोई फ़र्ज़ व नफ़्ल अल्लाह तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता : आ़क़ और सदक़ा दे कर एह़सान जताने वाला और हर नेकी व बदी को तक़दीरे इलाही से न मानने वाला, (इब्ने अबी आ़सिम ने ''अस्सुन्नह'' में सनदे ह़सन के साथ अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया। ت)

सातवीं ह़दीस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((كُلُّ الذُّنُوبِ يُؤَخِّرُ اللّٰهُ مِنْهَا مَا شَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا عُقُوقَ الْوَالِدَيْنِ فَإِنَّ اللّٰهَ يُعَجِّلَهُ لِصَاحِبِهِ فِي الْحَيَاةِ قَبْلَ الْمَمَاتِ)) رواه الحاكم والأصبهاني والطبراني عن أبي بكرة رضي الله تعالى عنه[2]۔

सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआ़ला चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां-बाप की ना फ़रमानी, कि इस की सज़ा जीते जी पहुंचाता है। (ह़ाकिम व अस्बहानी और त़बरानी ने अबू बकरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इसे रिवायत किया। ت)

---

1 ..... "السنة" لابن أبي عاصم، باب: ما ذكر عن النبي عليه السلام في المكذبين بقدر الله... إلخ، الحديث: ٣٣٢، ص٧٣.

2 ..... "المستدرك"، كتاب البرّ والصلة، باب كلّ الذنوب يؤخّر الله ماشاء منها إلّا عقوق الوالدين، الحديث: ٧٣٤٥، ج٥، ص٢١٧.

www.dawateislami.net

आठवीं ह़दीस में है : एक जवान नज़्अ़ में था **उसे कलिमा तल्क़ीन करते थे**[1] न कहा जाता था यहां तक कि हुज़ूरे अक़्दस, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : कह : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه अ़र्ज़ की : नहीं कहा जाता, मा'लूम हुवा कि मां नाराज़ है, उसे राज़ी किया तो कलिमा ज़बान से निकला।

(इमाम अह़मद और त़बरानी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इसे रिवायत किया। ت)

رواه الإمام أحمد والطبراني عن عبد اللّٰه بن أبي أوفى رضي اللّٰه تعالى عنه[2]

मगर इन उमूर से वोह आ़सी और उस का फ़े'ल मुख़ालिफ़े हुक्मे ख़ुदा हुवा, इस का मुन्किरे हुक्मे ख़ुदा होना लाज़िम नहीं आता[3] जब तक येह न कहे कि बाप की इत़ाअ़त शरअ़न ज़रूरी नहीं या مَعَاذَاللّٰه बाप की तौहीन व तज़लील जाइज़ है **जो मुत़लक़न बिला तावील ऐसा ए'तिक़ाद रखता हो वोह बेशक मुन्किरे हुक्मे इलाही होगा और उस पर सरीह़ इल्ज़ामे कुफ़्र**[4]

وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى، وَاللّٰهُ تَعَالٰى أَعْلَمُ وَعِلْمُهُ جَلَّ مَجْدُهُ أَتَمُّ وَأَحْكَمُ۔

---

1 .....या'नी उसे कलिमए त़य्यिबा याद दिलाते थे।

2 ..... "المسند"، الحديث: ١٩٤٢٨، ج٧، ص١٠٥، بتغير،
"الترغيب والترهيب"، الحديث: ١٦، ج٣، ص٢٢٦، (بحوالہ "طبرانی").
"مجمع الزوائد"، الحديث: ١٣٤٣٣، ج٨، ص٢٧٠، (بحوالہ "طبرانی").

3 .....मगर इन कामों (मां-बाप की ना फ़रमानी और उन को नाराज़ करने वग़ैरा) से गुनहगार और उस का येह काम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के पाक इरशाद के ख़िलाफ़ हुवा लेकिन इस से ख़ुदा तआ़ला के हुक्म का इन्कार लाज़िम नहीं आता।

4 ....जो यक़ीनी त़ौर पर बिग़ैर किसी तावील के ऐसा अ़क़ीदा रखता हो, वोह बेशक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म का इन्कार करने वाला होगा और वाज़ेह़ त़ौर पर कुफ़्र लाज़िम आएगा।

www.dawateislami.net

मस्अलए सानिय्या

सौती मादर[1] पर तोहमते बद त़रह़ त़रह़ की लगा दी उस के वासिते क्या हुक्म है ? और **सौतेली मादर का कुछ ह़क़ पिसरे अ़ल्लाती पर है या नहीं ?**[2]

अल जवाब

हुक़ूक़ तो मुसलमान पर हर मुसलमान रखता है और किसी मुसलमान को तोहमत लगानी ह़रामे क़त़ई ख़ुसूसन مَعَاذَاللہ अगर तोहमते ज़िना हो, जिस पर "क़ुरआने अ़ज़ीम" ने फ़रमाया :

﴿ یَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴾(3)

अल्लाह तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि अब ऐसा न कीजियो (अब ऐसा न करना) अगर ईमान रखते हो ।

तोहमते ज़िना लगाने वाले को अस्सी कोड़े लगते हैं और हमेशा को उस की गवाही **मर्दूद होती है**[4] **अल्लाह** तआ़ला ने उस का नाम फ़ासिक़ रखा, येह सब अह़काम हर मुसलमान के मुआ़मले में हैं अगर्चे उस से **कोई रिश्तए अ़लाक़ा अस्लन न हो**[5] और सौतेली मां तो एक अ़ज़ीम व **ख़ास अ़लाक़ा**[6] उस के बाप से रखती है जिस के बाइ़स उस की ता'ज़ीम व हुरमत उस पर बिला शुबा लाज़िम, इसी हुरमत के बाइ़स रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا ने उसे **ह़क़ीक़ी मां की मिस्ल ह़रामे अबदी किया ।**[7]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

1.....सौतेली मां ।

2.....सौतेली मां का ह़क़, शोहर के किसी और बीवी से पैदा होने वाले लड़के पर है या नहीं ? ।

3.....پ۱۸، النور: ۱۷.

4.....ना क़ाबिले क़बूल हो जाती है ।

5.....किसी त़रह़ कोई रिश्ता व तअ़ल्लुक़ न हो ।

6.....ख़ास तअ़ल्लुक़ ।

7.....सगी मां की त़रह़ सौतेली मां को भी सौतेले बेटे पर हमेशा हमेशा के लिये ह़राम किया ।

www.dawateislami.net

((إِنَّ أَبَرَّ البِرِّ صِلَةُ الْوَلَدِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ))، رواه مسلم عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما[1]۔

बेशक सब नेकोकारियों से बढ़ कर नेकोकारी येह है कि फ़रज़न्द अपने बाप के दोस्तों से अच्छा सुलूक करे (मुस्लिम ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

दूसरी ह़दीस में है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मां-बाप के साथ नेकोकारी के त़रीक़ों में येह भी शुमार फ़रमाया :

((وَإِكْرَامُ صَدِيقِهِمَا))، رواه أبو داود وابن ماجه وابن حبان في "صحاحهم" عن مالك بن ربيعة الساعدي رضي الله تعالى عنه[2].

उन के दोस्त की इ़ज़्ज़त करना (अबू दावूद, इब्ने माजा और इब्ने ह़ब्बान ने अपनी अपनी ''सिह़ाह़'' में मालिक बिन रबीआ़ साअ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

जब बाप के दोस्तों की निस्बत येह अह़काम, तो उस की मन्कूह़ा, उस की नामूस की ता'ज़ीमो तकरीम क्यूं न अह़क़्क़ व आकिद होगी[3] ख़ुसूसन जब कि उस की नाराज़ी में बाप की नाराज़ी हो कि बाप की नाराज़ी अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी है, واللہ تعالٰی اعلم

---

1 ....."صحيح مسلم"، كتاب البرّ والصلة، باب فضل صلة أصدقاء الأب والأمّ ونحوهما، الحديث: ٢٥٥٢، ص١٣٨٢.

2 ....."سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في برّ الوالدين، الحديث: ٥١٤٢، ج٤، ص٤٣٤.

3 .....जब बाप के दोस्तों के बारे में येह हुक्म है तो जो औ़रत उस के बाप के निकाह़ में हो उस की इ़ज़्ज़त व आबरू की ता'ज़ीम व तकरीम क्यूं कर बहुत ज़रूरी और लाज़िमी न होगी !

www.dawateislami.net

मस्अलए सालिसा

औलाद पर **हक़्क़े पिदर ज़ियादा है या हक़्क़े मादर**?[1]

بَیِّنُوا تُوْجَرُوْا (बयान फ़रमाओ, अज्र पाओ। ت)

अल जवाब

औलाद पर बाप का हक़ निहायत अज़ीम है और मां का हक़ इस से **आ'ज़म**।[2]

قال اللّٰه تعالٰی:

﴿ وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ ﴾

और हम ने ताकीद की आदमी को अपने मां-बाप के साथ नेक बरताव की, उसे पेट में रखे रही उस की मां तक्लीफ़ से, और उसे जना तक्लीफ़ से, और उस का पेट में रहना और दूध छुटना तीस महीने में है।[3]

इस आयए करीमा में रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मां-बाप दोनों के हक़ में ताकीद फ़रमा कर मां को फिर ख़ास अलग कर के गिना और उस की उन सख़्तियों और तक्लीफ़ों को जो उसे ह़म्ल व विलादत और दो बरस तक अपने **ख़ून का इत्र पिलाने में**[4] पेश आईं **जिन के बाइस उस का ह़क़ बहुत अशद्द व आ'ज़म हो गया**[5] शुमार फ़रमाया, इसी त़रह़ दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया :

1.....बाप का हक़ ज़ियादा है या मां का हक़?
2.....अज़ीम तर।
3.....پ۲۶، الأحقاف: ۱۵.
4.....ख़ून का निचोड़ या'नी दूध पिलाने में।
5.....जिन की वज्ह से मां का हक़ बहुत ही ज़ियादा और अज़ीम तरीन हो गया।

www.dawateislami.net

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ

ताकीद की हम ने आदमी को उस के मां-बाप के हक़ में, पेट में रखा उसे उस की मां ने सख़्ती पर सख़्ती उठा कर, और उस का दूध छुटना दो बरस में है, येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां-बाप का।[1]

यहां मां-बाप के हक़ की कोई **निहायत**[2] न रखी कि उन्हें अपने हक़्क़े जलील के साथ शुमार किया, फ़रमाता है : शुक्र बजा ला मेरा और अपने मां-बाप का, اللّٰہ أکبر اللّٰہ أکبر وحسبنا اللّٰہ ونعم الوکیل ولا حول ولا قوّۃ إلّا باللّٰہ العليّ العظیم येह दोनों आयतें और इसी त़रह़ बहुत हदीसें दलील हैं कि मां का हक़, बाप के हक़ से ज़ाइद है,

उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :

((سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ النَّاسِ أَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الْمَرْأَةِ؟ قَالَ: زَوْجُهَا، قُلْتُ: فَأَيُّ النَّاسِ أَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الرَّجُلِ؟ قَالَ: أُمُّهُ))، رواه البزار بسند حسن والحاكم[3]۔

या'नी मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : औ़रत पर सब से बड़ा हक़ किस का है ? फ़रमाया : शोहर का, मैं ने अ़र्ज़ की : और मर्द पर सब से बड़ा हक़ किस का है ? फ़रमाया : उस की मां का। (बज़्ज़ार ने इसे सनदे ह़सन के साथ और ह़ाकिम ने इसे रिवायत किया। ت)

---

1 .....پ٢١، لقمان: ١٤.

2 .....ह़द व इन्तिहा।

3 ....."المستدرك"، كتاب البرّ والصلة، باب بر أمّك ثمّ أباك ثمّ الأقرب فالأقرب، الحديث: ٧٣٢٦، ج٥، ص٢٠٨.

www.dawateislami.net

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ! مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: أَبُوْكَ))، رواه الشيخان في "صحيحهما"[1]۔

एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा कौन इस का मुस्तहिक़ है कि मैं उस के साथ नेक रफ़ाक़त करूं ? फ़रमाया : तेरी मां, अ़र्ज़ की : फिर ? फ़रमाया : तेरी मां, अ़र्ज़ की : फिर ? फ़रमाया : तेरी मां, अ़र्ज़ की : फिर ? फ़रमाया : तेरा बाप । (इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने अपनी अपनी ''सहीह़'' में इसे रिवायत किया । ت)

तीसरी ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((أُوْصِي الرَّجُلَ بِأُمِّهِ، أُوْصِي الرَّجُلَ بِأُمِّهِ، أُوْصِي الرَّجُلَ بِأُمِّهِ، أُوْصِي الرَّجُلَ بِأَبِيْهِ))، رواه الإمام أحمد وابن ماجه والحاكم والبيهقي في "السنن" عن أبي سلامة[2]۔

मैं आदमी को वसिय्यत करता हूं उस की मां के ह़क़ में, वसिय्यत करता हूं उस की मां के ह़क़ में, वसिय्यत करता हूं उस की मां के ह़क़ में, वसिय्यत करता हूं उस के बाप के ह़क़ में । (इमाम अह़मद और इब्ने माजा और ह़ाकिम और बैहक़ी ने ''सुनन'' में अबू सलामह से इसे रिवायत किया । ت)

1 ....."صحيح البخاري"، كتاب الأدب، الحديث: ٥٩٧١، ج٤، ص٩٣.

2 ....."المسند"، ج٦، ص٤٦٣، الحديث: ١٨٨١٢، "ابن ماجه"، كتاب الأدب، باب بر الوالدين، الحديث: ٣٦٥٧، ج٤، ص١٨٣، "المستدرك"، كتاب البرّ والصلة، باب برّ أمّك ثمّ أباك ثمّ الأقرب فالأقرب، ج٥، ص٢٠٨، الحديث: ٧٣٢٥.

www.dawateislami.net

मगर इस **ज़ियादत**[1] के येह मा'ना हैं कि ख़िदमत में, देने में बाप पर मां को तरजीह़ दे मसलन सौ रूपे हैं और कोई वज्हे ख़ास (ख़ास वज्ह) **मानेए तफ़्सीले मादर नहीं**[2] तो बाप को पच्चीस दे मां को पछत्तर, या मां-बाप दोनों ने एक साथ पानी मांगा तो पहले मां को पिलाए फिर बाप को, या दोनों सफ़र से आए हैं पहले मां के पाउं दबाए फिर बाप के, وَعَلٰی هٰذَا الْقِیاس[3], न येह कि अगर वालिदैन में **बाहम तनाज़ोअ़**[4] हो तो मां का साथ दे कर **مَعَاذَاللہ बाप के दरपे ईज़ा हो या उस पर किसी त़रह़ दुरुश्ती करे**[5] या उसे जवाब दे या बे अदबाना आंख मिला कर बात करे, येह सब बातें ह़राम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **मा'सियत**[6] हैं, और **अल्लाह** तआ़ला की मा'सियत में न मां की इत़ाअ़त न बाप की, तो उसे मां-बाप में किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं, वोह दोनों उस की जन्नत व नार हैं, जिसे ईज़ा देगा दोज़ख़ का मुस्तह़िक़ होगा وَالْعِیَاذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی[7], मा'सियते ख़ालिक़ में किसी की इत़ाअ़त नहीं, अगर मसलन मां चाहती है कि येह बाप को किसी त़रह़ का **आज़ार**[8] पहुंचाए और येह नहीं मानता तो वोह नाराज़ होती है, होने दे और हरगिज़ न माने, ऐसे ही बाप की त़रफ़ से मां के मुआ़मले में। उन की ऐसी नाराज़ियां कुछ क़ाबिले लिह़ाज़ न होंगी कि येह उन की **निरी ज़ियादती**[9] है कि इस से **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी चाहते हैं बल्कि हमारे उ़लमाए

---

1 .....बार बार वसिय्यत करने
2 .....मां को फ़ौक़िय्यत देने में मुमानअ़त की कोई ख़ास वज्ह नहीं
3 .....और इसी पर क़ियास कर लो। 4 .....बाहम झगड़ा।
5 .....مَعَاذَاللہ (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह कि) बाप को तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश या उस पर किसी त़रह़ सख़्ती करे।
6 .....ना फ़रमानी। 7 .....ख़ुदा की पनाह।
8 .....दुख या तक्लीफ़। 9 .....सरासर ज़ियादती।

www.dawateislami.net

किराम ने यूं तक़्सीम फ़रमाई है कि ख़िदमत में मां को तरजीह़ है जिस की मिसालें हम लिख आए, और ता'ज़ीम बाप की ज़ाइद है कि वोह उस की मां का भी ह़ाकिम व आक़ा है।

''आ़लमगीरी'' में है :

إذا تعذّر عليه جمع مراعاة حقّ الوالدين بأن يتأذّى أحدهما بمراعاة الآخر يرجّح حقّ الأب فيما يرجع إلى التعظيم والاحترام وحقّ الأمّ فيما يرجع إلى الخدمة والإنعام، وعن علاء الأئمّة الحمامي قال مشايخنا رحمهم اللّٰه تعالى: الأب يقدم على الأمّ في الاحترام والأمّ في الخدمة حتى لو دخلا عليه في البيت يقوم للأب ولو سألا منه مآء ولم يأخذ من يده أحدهما فيبدأ بالأمّ كذا في "القنية"، واللّٰه سبحانه وتعالى أعلم وعلمه جلّ مجده أحكم[1]۔

जब आदमी के लिये वालिदैन में से हर एक के ह़क़ की रिआ़यत मुश्किल हो जाए मसलन एक की रिआ़यत से दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचती है तो ता'ज़ीम व एह़तिराम में वालिद के ह़क़ की रिआ़यत करे और ख़िदमत में, देने में वालिदा के ह़क़ की, अ़ल्लामा हुमामी ने फ़रमाया हमारे इमाम फ़रमाते हैं कि : एह़तिराम में बाप मुक़द्दम है और ख़िदमत में मां, ह़त्ता कि अगर घर में दोनों उस के पास आए हैं तो बाप की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो और अगर दोनों ने उस से पानी मांगा और किसी ने उस के हाथ से पानी नहीं पकड़ा तो पहले वालिदा को पेश करे, इसी त़रह़ ''कुनिया'' में है।

واللّٰه سبحانه وتعالى أعلم وعلمه جلّ مجده أحكم.

---

1 ..... "الهندية"، كتاب الكراهية، الباب السادس والعشرون، ج٥، ص٣٦٥، و"القنية"، كتاب الكراهية، ص٢٤٢.

www.dawateislami.net

मस्अलए राबिआ़

माबैने ज़न व शोहर[1] हक़ ज़ियादा किस का है और कहां तक ?

अल जवाब

ज़न और शोहर में हर एक के दूसरे पर **हुक़ूक़े कसीरा**[2] वाजिब हैं इन में जो बजा न लाएगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, **एक अगर अदाए हक़ न करे तो दूसरा इसे दस्तावेज़ बना कर उस के हक़ साक़ित नहीं कर सकता मगर वोह हुक़ूक़ कि दूसरे के किसी हक़ पर मब्नी हों अगर येह उस का ऐसा हक़ तर्क करे वोह दूसरा उस के येह हुक़ूक़ कि उस पर मब्नी थे तर्क कर सकता है जैसे औ़रत का नानो नफ़्क़ा कि शोहर के यहां पाबन्द रहने का बदला है, अगर ना हक़ उस के यहां से चली जाएगी जब तक वापस न आएगी कुछ न पाएगी**[3] ग़रज़ वाजिब होने, मुत़ालबा होने, बे वज्हे शरई अदा न करने से गुनहगार होने में तो हुक़ूक़े ज़न व शोहर बराबर हैं हां ! **शोहर के हुक़ूक़ औ़रत पर ब कसरत हैं और इस पर वुजूब भी अशद्द व आकिद**[4], हम इस पर ह़दीस लिख चुके कि औ़रत पर सब से बड़ा हक़ शोहर का है या'नी मां-बाप से भी ज़ियादा, और मर्द पर सब से बड़ा हक़ मां का है या'नी ज़ौजा का (हक़) उस से (या'नी मां से) बल्कि बाप से भी कम, وَذٰلِكَ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ[5] ۔ واللّٰہ تعالی أعلم.

---

1 .....मियां और बीवी के दरमियान। 2 .....बहुत से हुक़ूक़।

3 .....अगर शोहर या बीवी में से कोई एक दूसरे का हक़ अदा न करे तो दूसरा इसे दलील बना कर उस के हक़ की अदाएगी को नहीं छोड़ सकता मगर वोह हुक़ूक़ कि दूसरे के किसी हक़ को अदा करने पर क़ाइम हों और उस ने वोह हक़ अदा करना भी छोड़ दिया तो दूसरा भी उस के येह हुक़ूक़ जो इस पर क़ाइम थे छोड़ सकता है मिसाल के त़ौर पर बीवी कि उस का नान-नफ़्क़ा शोहर पर उसी सूरत में लाज़िम है कि बीवी शोहर के घर रहे चुनान्चे, अगर बीवी शोहर के यहां से बिग़ैर किसी शरई मजबूरी के चली जाए तो अब शोहर पर उस का नफ़्क़ा वाजिब नहीं यहां तक कि वोह लौट आए।

4 .....और शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी औ़रत पर बहुत ज़ियादा लाज़िम और ज़रूरी है।

5 .....और येह इस वज्ह से है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन के बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है।

www.dawateislami.net

मस्अला : मसऊलए शौकत अ़ली साहिब फ़ारूक़ी 14 रबीउ़ल आख़िर 1320 हिजरी مَا قَوْلُكُم رَحِمَكُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इन दर ई मस्अला (आप पर अल्लाह तआ़ला की रह़मत हो, इस मस्अले के बारे में आप का क्या इरशाद है। ت) कि बा'द फ़ौत हो जाने वालिदैन के औलाद पर क्या ह़क़ वालिदैन का रहता है ? بَيِّنُوْا بِالْكِتَابِ تُؤْجَرُوْا بِالثَّوَابِ

अल जवाब

(1) सब से पहला ह़क़ बा'दे मौत उन के जनाज़े की **तजहीज़**[1] ग़ुस्ल व कफ़न व नमाज़ व दफ़्न है और इन कामों में सुननो मुस्तह़ब्बात की रिआ़यत जिस से उन के लिये हर ख़ूबी व बरकत व रह़मत व वुस्अ़त की उम्मीद हो।

(2) उन के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार हमेशा करते रहना इस से कभी ग़फ़्लत न करना।

(3) सदक़ा व ख़ैरात व **आ'माले सालिह़ा का सवाब**[2] उन्हें पहुंचाते रहना ह़स्बे त़ाक़त इस में कमी न करना, अपनी नमाज़ के साथ उन के लिये भी नमाज़ पढ़ना, अपने रोज़ों के साथ उन के वासिते़ भी रोज़े रखना बल्कि जो नेक काम करे सब का सवाब उन्हें और सब मुसलमानों को बख़्श देना कि उन सब को सवाब पहुंच जाएगा और उस के सवाब में कमी न होगी बल्कि बहुत तरक़्क़ियां पाएगा।

(4) उन पर कोई क़र्ज़ किसी का हो तो उस के अदा में ह़द दरजे की जल्दी व कोशिश करना और अपने माल से उन का क़र्ज़ अदा होने को दोनों जहान की

---

1 .....जनाज़े की तय्यारी। 2 .....नेक आ'माल का सवाब।

www.dawateislami.net

सआ़दत समझना, आप क़ुदरत न हो तो और अ़ज़ीज़ों क़रीबों फिर बाक़ी **अहले ख़ैर**[1] से उस की अदा में इमदाद लेना।

(5) उन पर कोई फ़र्ज़ रह गया तो ब क़दरे क़ुदरत **उस के अदा में सई बजा लाना**[2], ह़ज न किया हो तो **ख़ुद उन की त़रफ़ से ह़ज करना**[3] या ह़ज्जे बदल कराना, ज़कात या **उ़श्र**[4] का मुत़ालबा उन पर रहा तो उसे अदा करना, **नमाज़ या रोज़ा बाक़ी हो तो उस का कफ़्फ़ारा**[5] देना وَعَلٰی هٰذَا الْقِیاس[6] हर त़रह़ **उन की बराअते ज़िम्मा**[7] में जिद्दो जह्द करना।

---

1 .....नेक मालदारों। 2 .....उस की अदाएगी में कोशिश करना।

3 .....या'नी नाइब के त़ौर पर दूसरे की त़रफ़ से ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा करना कि जिस से उस दूसरे शख़्स का फ़र्ज़ अदा हो जाए, येह कुछ शराइत़ से मशरूत़ है जो "फ़तावा रज़विय्या", जि. 10, स. 659-660 पर मज़कूर हैं।

4 .....उ़श्र दसवें ह़िस्से को कहते हैं और शरअ़न उ़श्र से मुराद वोह ज़कात है जो उ़श्री ज़मीन (या'नी वोह ज़मीन जिसे बारिश वग़ैरा का पानी सैराब करे) में ज़राअ़त से मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करने की वज्ह से लाज़िम हो तो अब उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है और इस ज़कात का नाम उ़श्र है या'नी दसवां ह़िस्सा कि अक्सर सूरतों में दसवां ह़िस्सा फ़र्ज़ है अगर्चे बा'ज़ सूरतों में निस्फ़ उ़श्र या'नी बीसवां ह़िस्सा लिया जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 5, स. 916 मुलख़्ख़सन)

5 .....एक नमाज़ का कफ़्फ़ारा (फ़िदया) एक सदक़ए फ़ित्र है एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार तक़रीबन दो किलो और पचास ग्राम गेहूं या इस का आटा या इस की रक़म है। एक दिन में छे नमाज़ें : पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब हैं चुनान्चे, एक दिन की नमाज़ों के छे फ़िदये देने होंगे और एक रोज़े का फ़िदया भी एक सदक़ए फ़ित्र है याद रहे कि नमाज़ों का फ़िदया बा'दे वफ़ात ही दिया जा सकता है और रोज़ों का फ़िदया ज़िन्दगी में भी दिया जा सकता है जब कि ऐसी बीमारी में मुब्तला हो गया कि अब सिह्ह़त याब होने की उम्मीद न हो या बहुत ज़ियादा बूढ़ा हो गया हो जिसे "शैख़े फ़ानी" कहते हैं।

6 .....इसी पर मज़ीद क़ियास कर लें।

7 .....उन के ज़िम्मे पर जो ह़ुक़ूक़ लाज़िम हैं उन से छुटकारा दिलाने।

www.dawateislami.net

(6) उन्हों ने जो **वसिय्यते जाइज़ा शरइय्या**[1] की हो ह़त्तल इमकान उस के निफ़ाज़ में सई करना अगर्चे शरअ़न अपने ऊपर लाज़िम न हो, अगर्चे **अपने पर बार**[2] हो मसलन वोह निस्फ़ जाइदाद की वसिय्यत अपने किसी अ़ज़ीज़ ग़ैर वारिस या अजनबी मह़ज़ के लिये कर गए तो **शरअ़न तिहाई माल से ज़ियादा में बे इजाज़ते वारिसान नाफ़िज़ नहीं**[3] मगर औलाद को मुनासिब है कि उन की वसिय्यत मानें और उन की **ख़ुशी**[4] पूरी करने को **अपनी ख़्वाहिश पर मुक़द्दम जानें ।**[5]

(7) उन की क़सम **बा'दे मर्ग भी**[6] सच्ची ही रखना मसलन मां-बाप ने क़सम खाई थी कि मेरा बेटा फुलां जगह न जाएगा या फुलां से न मिलेगा या फुलां काम करेगा तो उन के बा'द येह ख़याल न करना कि अब वोह तो हैं नहीं उन की क़सम का क्या ख़याल, नहीं **बल्कि उस का वैसे ही पाबन्द रहना जैसा उन की ह़यात में रहता जब तक कोई ह़रजे शरई मानेअ़ न हो**[7] और कुछ **क़सम ही पर मौक़ूफ़ नहीं हर त़रह़ उमूरे जाइज़ा में बा'दे मर्ग**[8] भी उन की मर्ज़ी का पाबन्द रहना ।

(8) हर जुमुआ़ को उन की ज़ियारते क़ब्र के लिये जाना, वहां يٰسٓ शरीफ़ ऐसी आवाज़ से कि वोह सुनें पढ़ना और उस का सवाब उन की रूह़ को पहुंचाना, राह में जब कभी उन की क़ब्र आए बे सलामो फ़ातिह़ा न गुज़रना ।

---

1 .....ऐसी वसिय्यत जो शरअ़न जाइज़ है । 2 .....अपनी जान पर बोझ व मशक़्क़त ।
3 .....शरअ़न एक तिहाई माल से ज़ियादा में वारिसों की इजाज़त के बिग़ैर वसिय्यत जारी नहीं होती ।
4 .....ख़्वाहिश । 5 .....अपनी ख़्वाहिश पर फ़ौक़िय्यत दें ।
6 .....वफ़ात के बा'द भी ।
7 .....उन की वफ़ात के बा'द भी उन की खाई हुई क़सम पूरी करे जब तक कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा की ना फ़रमानी लाज़िम न आए ।
8 .....येह हुक्म सिर्फ़ क़सम ही पर ठहरा हुवा नहीं बल्कि हर जाइज़ काम में वफ़ात के बा'द ।

www.dawateislami.net

(9) उन के रिश्तेदारों के साथ उ़म्र भर नेक सुलूक किये जाना।

(10) उन के दोस्तों से दोस्ती निबाहना हमेशा उन का ए'ज़ाज़ व इकराम रखना।

(11) कभी किसी के मां-बाप को बुरा कह कर जवाब में उन्हें बुरा न कहलवाना।

(12) सब में सख़्त तर व आ़म तर व **मुदाम तर**[1] येह ह़क़ है कि कभी कोई गुनाह कर के उन्हें क़ब्र में रन्ज (ईज़ा) न पहुंचाना, उस के सब आ'माल की ख़बर मां-बाप को पहुंचती है, नेकियां देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और उन का चेहरा फ़रह़त से चमकता और दमकता रहता है, और गुनाह देखते हैं तो रन्जीदा होते हैं और उन के क़ल्ब (दिल) पर सदमा होता है मां-बाप का येह ह़क़ नहीं कि क़ब्र में भी उन्हें रन्ज पहुंचाइये।

अल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीम अ़ज़ीज़ करीम جَلَّ جَلَالُهٗ सदक़ा अपने ह़बीब रऊफ़ुर्रह़ीम علیہ وعلی آلہ أفضل الصلاۃ والتسلیم का हम सब मुसलमानों को नेकियों की तौफ़ीक़ दे, गुनाहों से बचाए, हमारे अकाबिर की क़ब्रों में हमेशा नूर व सुरूर पहुंचाए कि वोह क़ादिर है और हम आ़जिज़, वोह ग़नी है हम मोह़ताज,

وحسبنا اللّٰه ونعم الوكيل نعم المولى ونعم النصير ولا حول ولاقوّة إلّا باللّٰه العليّ العظيم، وصلّى اللّٰه تعالى على الشفيع الرفيع العفوّ الكريم الرؤوف الرحيم سيّدنا محمّد وآله وأصحابه أجمعين آمين!

والحمد للّٰه ربّ العالمين[2]۔

---

1 .....या'नी हमेशा हमेशा के लिये।

2 .....और **अल्लाह** हम को काफ़ी और बेहतरीन कारसाज़, क्या ही बेहतरीन आक़ा और बेहतरीन मददगार, न नेकी करने की ताक़त और न गुनाहों से बचने की क़ुव्वत है मगर **अल्लाह** बुलन्द व अ़ज़ीम ही की तौफ़ीक़ से, और **अल्लाह** तआ़ला का दुरूद हो शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले, बुलन्द, मेहरबान, करम फ़रमाने वाले रऊफ़ुर्रह़ीम हमारे सरदार मुह़म्मद और उन की आल और उन के तमाम अस्ह़ाब पर, और सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान वालों का पालने वाला है।

www.dawateislami.net

अब वोह ह़दीसें जिन से फ़क़ीर ने **येह हुक़ूक़ इस्तेख़्राज किये**[1] उन में से बा'ज़ **ब क़दरे किफ़ायत ज़िक्र करूं :**[2]

ह़दीस 1 : कि एक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मां-बाप के इन्तिक़ाल के बा'द कोई त़रीक़ा उन के साथ **नेकोई**[3] का बाक़ी है जिसे मैं बजा लाऊं । फ़रमाया :

((نَعَمْ! أَرْبَعَةٌ: اَلصَّلَاةُ عَلَيْهِمَا وَالْاِسْتِغْفَارُ لَهُمَا، وَإِنْفَاذُ عَهْدِهِمَا مِنْ بَعْدِهِمَا، وَإِكْرَامُ صَدِيْقِهِمَا، وَصِلَةُ الرَّحِمِ الَّتِيْ لَا رَحِمَ لَكَ إِلَّا مِنْ قِبَلِهِمَا فَهٰذَا الَّذِيْ بَقِيَ مِنْ بِرِّهِمَا بَعْدَ مَوْتِهِمَا))، رواه ابن النجار عن أبي أسيد الساعدي رضي الله تعالى عنه مع القصّة [4]، ورواه البيهقي في "سننه" عنه -رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ - قَالَ: ((قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

हां चार बातें हैं : उन पर नमाज़ और उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत, और उन की वसिय्यत नाफ़िज़ करना, और उन के दोस्तों की बुज़ुर्ग दाश्त (इ़ज़्ज़त), और जो रिश्ता सिर्फ़ उन्हीं की जानिब से हो नेक बरताव से उस का क़ाइम रखना, येह वोह नेकोई है कि उन की मौत के बा'द उन के साथ करनी बाक़ी है । (इब्ने नजार ने अबू उसैद साअ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसी क़िस्से के साथ रिवायत किया । और बैहक़ी ने अपनी "सुनन" में इन्हीं رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया,

---

1 .....येह हुक़ूक़ निकाले हैं ।
2 .....हस्बे ज़रूरत ज़िक्र करता हूं ।
3 .....नेकी करने ।
4 ....."كنز العمال"، كتاب النكاح، قسم الأفعال، باب في برّ الوالدين والأولاد ... إلخ، الحديث: ٤٥٩٢٦، الجزء: ١٦، ص٢٤٣، (بحوالہ ابن نجار).

www.dawateislami.net

لَا يَبْقَى لِلْوَلَدِ مِنْ بِرِّ الْوَالِدِ إِلَّا أَرْبَعٌ: اَلصَّلَاةُ عَلَيْهِ وَالدُّعَاءُ لَهُ وَإِنْفَاذُ عَهْدِهِ مِنْ بَعْدِهِ وَصِلَةُ رَحِمِهِ وَإِكْرَامُ صَدِيْقِهِ)) [1]۔

कहा : फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने : वालिद के साथ नेकी की चार बातें हैं : उस पर नमाज़ पढ़ना और उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करना, उस की वसिय्यत नाफ़िज़ करना, उस के रिश्तेदारों से नेक बरताव करना, उस के दोस्तों का एह़तिराम करना। ت)

ह़दीस 2 : कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((اِسْتِغْفَارُ الْوَلَدِ لِأَبِيْهِ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ مِنَ الْبِرِّ)) رواه ابن النجار عن أبي أسيد مالك بن زرارة رضي اللّٰه تعالى عنه [2]۔

मां-बाप के साथ नेक सुलूक से येह बात है कि औलाद उन के बा'द उन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करे (इब्ने नजार ने अबू उसैद मालिक बिन ज़रारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इसे रिवायत किया। ت)

ह़दीस 3 : कि फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((إِذَا تَرَكَ الْعَبْدُ الدُّعَاءَ لِلْوَالِدَيْنِ فَإِنَّهُ يَنْقَطِعُ عَنْهُ الرِّزْقُ))، رواه الطبراني في "التأريخ" والديلمي

आदमी जब मां-बाप के लिये दुआ छोड़ देता है उस का रिज़्क़ क़त़्अ हो जाता है। (त़बरानी ने "तारीख़" में और दैलमी

1 ....."السنن الكبرى"، كتاب الجنائز، باب ما يستحب لولي الميّت من التعجيل... إلخ، الحديث: ٧١٠٢، ج٤، ص١٠٢.

2 ....."كنز العمال"، كتاب النكاح، قسم الأقوال، الباب الثامن في برّ الوالدين، الحديث: ٤٥٤٤١، الجزء١٦، ص١٩٢، (بحوالہ ابن نجار).

www.dawateislami.net

ने अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसे रिवायत किया। ت)

عن أنس بن مالك رضي اللّٰه تعالى عنه[1]۔

ह़दीस 4 व 5: कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जब तुम में कोई शख़्स कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां-बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और उस के सवाब में कुछ न घटेगा (इस ह़दीस को त़बरानी ने ''औसत़'' में और इब्ने अ़साकिर ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया और ऐसे ही दैलमी ने ''मुस्नदे फ़िरदौस'' में मुआ़विय्या इब्ने ह़ैदा कुशैरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

((إِذَا تَصَدَّقَ أَحَدُكُمْ بِصَدَقَةٍ تَطَوُّعاً فَلْيَجْعَلْهَا عَنْ أَبَوَيْهِ فَيَكُوْنُ لَهُمَا أَجْرُهَا وَلَا يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا))، رواه الطبراني في "الأوسط" وابن عساكر عن عبد اللّٰه بن عمرو -رضي اللّٰه تعالى عنهما- ونحوه الديلمي في "مسند الفردوس" عن معاوية بن حَيْدَة القُشَيْرِيْ رضي اللّٰه تعالى عنه[2]۔

ह़दीस 6 : कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं अपने मां-बाप के साथ ज़िन्दगी में नेक सुलूक करता था अब वोह मर गए उन के साथ नेक सुलूक की क्या राह है ? फ़रमाया :

---

1 ....."كنز العمال"، كتاب النكاح، الحديث:٤٥٥٤٨، الجزء: ١٦، ص٢٠١، عن الديلمي.

2 ....."المعجم الأوسط"، من اسمه محمد، الحديث: ٧٧٢٦، ج٥، ص٣٩٤، و"مسند الفردوس"، الحديث: ٦٦٧٧، ج٢، ص٣٣٧.

www.dawateislami.net

إِنَّ مِنَ الْبِرِّ بَعْدَ الْمَوْتِ أَنْ تُصَلِّيَ لَهُمَا مَعَ صَلَاتِكَ وَتَصُوْمَ لَهُمَا مَعَ صِيَامِكَ))، رواه الدار قطني[1]۔

बा'दे मर्ग नेक सुलूक से येह है कि तू अपनी नमाज़ के साथ उन के लिये भी नमाज़ पढ़े और अपने रोज़ों के साथ उन के लिये रोज़े रखे (इसे दारे क़ुत़नी ने रिवायत किया। ت)

या'नी जब अपने सवाब मिलने के लिये कुछ नफ़्ल नमाज़ पढ़े या रोज़े रखे तो कुछ नफ़्ल नमाज़ उन की त़रफ़ से कि उन्हें सवाब पहुंचाए या नमाज़ रोज़ा जो नेक अ़मल करे साथ ही उन्हें सवाब पहुंचने की भी निय्यत कर ले कि उन्हें भी मिलेगा और तेरा भी कम न होगा।

كما يدل عليه لفظ "مع" يحتمل الوجهين بل هذا ألصق بالمعيّة.

जैसा कि लफ़्ज़ "मअ़" की इस पर दलालत है क्यूंकि इस में मज़कूरा दोनों एह़तिमाल हैं बल्कि आख़िरी वज्ह, मइय्यत को ज़ियादा मुनासिब है। (ت)

"मुह़ीत़" फिर "तातार ख़ानिया" फिर "रद्दुल मुह़तार" में है :

الأفضل لمن يتصدّق نفلاً أن ينوي لجميع المؤمنين والمؤمنات؛ لأنّها تصل إليهم ولا ينقص من أجره شيء[2]۔

जो शख़्स नफ़्ली सदक़ा दे उस के लिये अफ़्ज़ल येह है कि तमाम ईमान वालों की निय्यत करे, क्यूंकि उन्हें भी सवाब पहुंचेगा और इस का सवाब भी कम न होगा।

---

1 ....."ردّ المحتار"، كتاب الحجّ، ج٤، ص١٥ بتغير قليل، (عن الدار قطني)، و"المصنف" لابن أبي شيبة، الحديث: ٨، ج٣، ص ٢٦١، بتغير قليل.

2 ....."التاتارخانية"، كتاب الزكاة، ج٢، ص٣١٩، "الرّد"، كتاب الحج، ج٤، ص١٣.

www.dawateislami.net

ह़दीस 7 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((مَنْ حَجَّ عَنْ وَالِدَيْهِ أَوْ قَضَى عَنْهُمَا مَغْرَماً بَعَثَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الْأَبْرَارِ))، رواه الطبراني في "الأوسط" والدارقطني في "السنن" عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما[1]۔

जो अपने मां-बाप की त़रफ़ से ह़ज करे या उन का क़र्ज़ अदा करे रोज़े क़ियामत नेकों के साथ उठे (इसे त़बरानी ने ''औसत़'' में और दारे क़ुत़नी ने ''सुनन'' में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया। ت)

ह़दीस 8 : अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अस्सी हज़ार क़र्ज़ थे वक़्ते वफ़ात अपने साह़िबज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बुला कर फ़रमाया :

بِعْ فِيهَا أَمْوَالَ عُمَرَ فَإِنْ وَفَتْ وَإِلَّا فَسَلْ بَنِي عَدِيٍّ فَإِنْ وَفَتْ وَإِلَّا فَسَلْ قُرَيْشاً وَلَا تَعْدُهُمْ.

मेरे दैन (क़र्ज़) में अव्वल तो मेरा माल बेचना अगर काफ़ी हो जाए फ़बिहा, वरना मेरी क़ौम बनी अ़दी से मांग कर पूरा करना अगर यूं भी पूरा न हो तो क़ुरैश से मांगना और इन के सिवा औरों से सुवाल न करना।

फिर साह़िबज़ादे मौसूफ़ से फ़रमाया : اِضْمِنْهَا तुम मेरे क़र्ज़ की ज़मानत कर लो, वोह **ज़ामिन**[2] हो गए और अमीरुल मोमिनीन के दफ़्न से पहले अकाबिर मुहाजिरीन व अन्सार को गवाह कर लिया कि वोह अस्सी हज़ार मुझ पर हैं, एक हफ़्ता न गुज़रा था कि अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सारा क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया।

---

1 ....."المعجم الأوسط"، من اسمه أحمد، الحديث: ٧٨٠٠، ج٦، ص٨، و "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث:٢٥٨٥، ج٢، ص٣٢٨.

2 .....ज़िम्मेदार।

www.dawateislami.net

(इसे इब्ने सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "तृबक़ात" में उ़स्मान बिन उ़र्वा से रिवायत किया । ت)

روا ه ابن سعد في "الطبقات" عن عثمان بن عروة[1]

हृदीस 9 : क़बीलए जुहैना से एक बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरी मां ने ह़ज करने की मन्नत मानी थी वोह अदा न कर सकीं और उन का इन्तिक़ाल हो गया क्या मैं उन की त़रफ़ से ह़ज कर लूं ? फ़रमाया :

हां ! उस की त़रफ़ से ह़ज कर, भला तू देख तो तेरी मां पर अगर दैन (क़र्ज़) होता तो तू अदा करती या नहीं ? यूंही ख़ुदा का दैन अदा करो कि वोह ज़ियादा ह़क़ अदा का रखता है (इसे बुख़ारी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया । ت)

((نَعَمْ! حَجِّي عَنْهَا أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَةً؟ اِقْضُوا اللّٰهَ فَاللّٰهُ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ))،

رواه البخاري عن ابن عباس رضي اللّٰه تعالى عنهما[2]۔

हृदीस 10 : कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

इन्सान जब अपने वालिदैन की त़रफ़ से ह़ज करता है वोह ह़ज उस की और उस के वालिदैन की त़रफ़ से क़बूल किया जाता है

((إِذَا حَجَّ الرَّجُلُ عَنْ وَالِدَيْهِ تُقُبِّلَ مِنْهُ وَمِنْهُمَا واسْتَبْشَرَتْ أَرْوَاحُهُمَا فِي السَّمَاءِ وَكُتِبَ عِنْدَ اللّٰهِ بِرّاً))،

---

1 ......"الطبقات الكبرى"، ذكر استخلاف عمر رضي اللّٰه تعالى عنه، ج٣، ص٢٧٣.

2 ......"صحيح البخاري"، كتاب جزاء الصيد، باب الحجّ والنذور عن الميّت والرجل يحجّ عن المرأة، الحديث: ١٨٥٢، ج١، ص٦١١.

www.dawateislami.net

और उन की रूहें आस्मान में इस से शाद होती हैं, और येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मां-बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला लिखा जाता है (इसे दारे क़ुत्नी ने ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

رواه الدارقطني عن زيد بن أرقم رضي اللّٰه تعالى عنه[1]۔

ह़दीस 11 : कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जो अपने मां-बाप की त़रफ़ से ह़ज करे उन की त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाए और उसे दस ह़ज का सवाब ज़ियादा मिले। (दारे क़ुत्नी ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

((مَنْ حَجَّ عَنْ أَبِيهِ وَأُمِّهِ فَقَدْ قَضَى عَنْهُ حَجَّتَهُ وَكَانَ لَهُ فَضْلُ عَشَرِ حِجَجٍ))، رواه الدارقطني عن جابر بن عبد اللّٰه رضي اللّٰه تعالى عنهما[2]۔

ह़दीस 12 : कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जो अपने वालिदैन की वफ़ात के बा'द उन की त़रफ़ से ह़ज करे अल्लाह तआ़ला उस के लिये दोज़ख़ से आज़ादी लिखे और उन दोनों के वासिते पूरे ह़ज का सवाब हो जिस में अस्लन कमी न हो

((مَنْ حَجَّ عَنْ وَالِدَيْهِ بَعْدَ وَفَاتِهِمَا كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ عِتْقاً مِنَ النَّارِ وَكَانَ لِلْمَحْجُوجِ عَنْهُمَا أَجْرُ حِجَّةٍ تَامَّةٍ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمَا شَيْئاً))،

1 ..... "سنن الدارقطني"، كتاب الحجّ، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٤، ج٢، ص٣٢٨.

2 ..... "سنن الدار قطني"، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٧، ج٢، ص٣٢٩.

www.dawateislami.net

(इसे अस्बहानी ने "तरग़ीब" में और बैहक़ी ने "शो'ब" में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया। ت)

رواه الأصبهاني في "الترغيب" والبيهقي في "الشعب" عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما[1]۔

ह़दीस 13 : कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जो शख़्स अपने मां-बाप के बा'द उन की क़सम सच्ची करे और उन का क़र्ज़ अदा करे और किसी के मां-बाप को बुरा कह कर उन्हें बुरा न कहलवाए वोह वालिदैन के साथ नेकोकार लिखा जाता है अगर्चे उन की ज़िन्दगी में ना फ़रमान था और जो उन की क़सम पूरी न करे और उन का क़र्ज़ न उतारे औरों के वालिदैन को बुरा कह कर उन्हें बुरा कहलवाए वोह आ़क़ लिखा जाए अगर्चे उन की ह़यात में नेकोकार था (इसे त़बरानी ने "औसत़" में अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

((مَنْ بَرَّ قَسَمَهُمَا وَقَضَى دَيْنَهُمَا وَلَمْ يَسْتَسِبَّ لَهُمَا كُتِبَ بَارّاً وَإِنْ كَانَ عَاقّاً فِي حَيَاتِهِمَا وَمَنْ لَمْ يَبَرَّ قَسَمَهُمَا وَلَمْ يَقْضِ دَيْنَهُمَا وَاسْتَسَبَّ لَهُمَا كُتِبَ عَاقّاً وَإِنْ كَانَ بَارّاً فِي حَيَاتِهِمَا)) رواه الطبراني في "الأوسط" عن عبد الرحمن بن سمرة رضي الله تعالى عنه[2]۔

1 ....."شعب الإيمان"، الحديث: ٧٩١٢، ج٦، ص٢٠٥.

2 ....."المعجم الأوسط"، من اسمه محمد، الحديث: ٥٨١٩، ج٤، ص٢٣٢.

www.dawateislami.net

ह़दीस 14 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((مَنْ زَارَ قَبْرَ أَبَوَيْهِ أَوْ أَحَدِهِمَا فِيْ كُلِّ يَوْمِ جُمُعَةٍ مَرَّةً غَفَرَ اللّٰهُ لَهُ وَكَتَبَ بِرًّا))، رواه الإمام الترمذي العارف باللّٰه الحكيم في "نوادر الأصول" عن أبي هريرة رضي اللّٰه تعالى عنه[1]۔

जो अपने मां-बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुमुआ़ के दिन ज़ियारत को ह़ाज़िर हो **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाह बख़्श दे और मां-बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाए (इमाम आ़रिफ़ बिल्लाह ह़कीम तिरमिज़ी ने ''नवादिरुल उसूल'' में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इसे रिवायत किया। ت)

ह़दीस 15 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((مَنْ زَارَ قَبْرَ وَالِدَيْهِ أَوْ أَحَدِهِمَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَرَأَ عِنْدَهُ يٰسٓ غُفِرَ لَهُ)) رواه ابن عدي عن الصدّيق الأكبر رضي اللّٰه تعالى عنه[2]

وفي لفظ: ((مَنْ زَارَ قَبْرَ وَالِدَيْهِ أَوْ أَحَدِهِمَا فِيْ كُلِّ جُمُعَةٍ فَقَرَأَ عِنْدَهُ يٰسٓ غَفَرَ اللّٰهُ لَهُ بِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ مِنْهَا)) رواه هو والخليلي وأبو شيخ

जो शख़्स रोज़े जुमुआ़ अपने वालिदैन या एक की ज़ियारते क़ब्र करे और उस के पास يٰسٓ पढ़े, बख़्श दिया जाए (इसे इब्ने अ़दी ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया और दीगर अल्फ़ाज़ में येह है। ت) जो हर जुमुआ़ वालिदैन या एक की ज़ियारते क़ब्र कर के वहां يٰسٓ पढ़े, يٰسٓ शरीफ़ में जितने ह़र्फ़ हैं उन सब की गिनती

1 ..... "نوادر الأصول في معرفة أحاديث الرسول"، الأصل الخامس عشر، ص٩٧.

2 ..... "الكامل" لابن عدي، ج٦، ص٢٦٠.

www.dawateislami.net

के बराबर अल्लाह तआला उस के लिये मग़्फ़िरत फ़रमाए (इसे इब्ने अ़दी, ख़लीली, अबू शैख़, दैलमी, इब्ने नजार और राफ़ेई वग़ैरहुम ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा से, उन्हों ने अपने वालिदे गिरामी सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत किया। ت)

والديلمي وابن النجار والرافعي وغيرهم عن أمّ المؤمنين الصديقة عن أبيها الصدّيق الأكبر رضي اللّٰه تعالى عنهما عن النبي صلّى اللّٰه تعالى عليه وسلّم[1].

हदीस 16 : कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

जो ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की ज़ियारते क़ब्र करे हज्जे मक़्बूल के बराबर सवाब पाए, और जो ब कसरत उन की ज़ियारते क़ब्र करता हो, फ़िरिश्ते उस की क़ब्र की ज़ियारत को आएं (हकीम तिरमिज़ी और इब्ने अ़दी ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

((مَنْ زَارَ قَبْرَ أَبَوَيْهِ أَوْ أَحَدِهِمَا اِحْتِسَاباً كَانَ كَعَدْلِ حَجَّةٍ مَبْرُوْرَةٍ وَمَنْ كَانَ زَوَّاراً لَهُمَا زَارَتِ الْمَلَائِكَةُ قَبْرَهُ)) رواه الإمام الترمذي الحكيم وابن عدي عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالى عنهما[2]۔

---

1 ......"كنز العمال"، كتاب النكاح، الحديث:٤٥٥٣٥، ج١٦، ص١٩٩، (بحواله ابن عدي والخليل وأبي الشيخ والديلمي وابن النجار والرافعي)

2 ......"نوادر الأصول"، الأصل الخامس عشر، الحديث: ١٣١، ص٩٨، "الكامل" لابن عدي، ج٣، ص٢٩٥، بألفاظ متقاربة، و"كنز العمال"، الحديث: ٤٥٥٣٦، ج١٦، ص٢٠٠، (بحوالہ حکیم ترمذی).

www.dawateislami.net

इमाम इब्नुल जौज़ी मुहद्दिस किताब ''उ़यूनुल हिकायात'' में ब सनदे ख़ुद मुहम्मद इब्नुल अ़ब्बास वर्राक़ से रिवायत फ़रमाते हैं कि एक शख़्स अपने बेटे के साथ सफ़र को गया राह में बाप का इन्तिक़ाल हो गया वोह जंगल दरख़्ताने मक़ल या'नी **गोगल**[1] के पेड़ों का था उन के नीचे दफ़्न कर के बेटा जहां जाना था चला गया जब पलट कर आया उस मन्ज़िल में रात को पहुंचा बाप की क़ब्र पर न गया नागाह सुना कि कोई कहने वाला कहता है :

رَأَيْتُكَ تَطْوِي الدَّوْمَ لَيْلاً وَلَا تَرَى عَلَيْكَ لِأَهْلِ الدَّوْمِ أَنْ تَتَكَلَّمَا
وَبِالدَّوْمِ ثَاوٍ لَوْ ثَوَيْتَ مَكَانَهُ فَمَرَّ بِأَهْلِ الدَّوْمِ عَاجٍ فَسَلَّمَا[2]

''मैं ने तुझे देखा कि तू रात में उस जंगल को तै़ करता है और वोह जो इन पेड़ों में है उस से कलाम करना अपने ऊपर लाज़िम नहीं जानता ह़ालांकि इन दरख़्तों में वोह मुक़ीम है कि अगर तू उस की जगह होता और वोह यहां गुज़रता तो वोह राह से फिर कर आता और तेरी क़ब्र पर सलाम करता।''

ह़दीस 17 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَصِلَ أَبَاهُ فِي قَبْرِهِ فَلْيَصِلْ إِخْوَانَ أَبِيهِ مِنْ بَعْدِهِ))، رواه أبو يعلى وابن حبان عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما[3]۔

जो चाहे कि बाप की क़ब्र में उस के साथ हुस्ने सुलूक करे वोह बाप के बा'द उस के अ़ज़ीज़ों दोस्तों से नेक बरताव रखे (अबू या'ला व इब्ने ह़ब्बान ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

---

1 .....एक दरख़्त के ख़ुश्बूदार गूंद का नाम जो ज़ाइक़े में तल्ख़ और बहुत सी क़िस्म का होता है।

2 ....."شرح الصدور"، باب زيارة القبور... إلخ، ص٢١٩، (بحوالہ "عیون الحکایات").

3 ....."مسند أبي يعلى الموصلي"، الحديث: ٥٦٤٣، ج٥، ص١٢٦،
و"صحيح ابن حبان"، كتاب البر والإحسان، باب حقّ الوالدين، ج١، ص٣٢٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 18 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((مِنَ البِرِّ أَنْ تَصِلَ صَدِيقَ أَبِيكَ))، رواه الطبراني في "الأوسط" عن أنس رضي اللّٰه تعالى عنهما[1]۔

बाप के साथ नेकोकारी से है येह कि तू उस के दोस्त से नेक बरताव रखे। (त़बरानी ने "औसत़" में अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इसे रिवायत किया। ت)

ह़दीस 19 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((إِنَّ أَبَرَّ البِرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ بَعْدَ أَنْ يُوَلِّيَ الْأَبُ))، رواه الأئمّة أحمد والبخاري في "الأدب المفرد" ومسلم في "صحيحه" وأبو داود والترمذي عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالى عنهما[2]۔

बेशक बाप के साथ सब नेकोकारियों से बढ़ कर येह नेकोकारी है कि आदमी बाप के बा'द उस के दोस्तों से अच्छी रविश पर निबाहे। (इसे अइम्मए किराम अह़मद ने और बुख़ारी ने "अल अदबुल मुफ़रद" में, मुस्लिम ने अपनी "सह़ीह़" में और अबू दावूद व तिरमिज़ी ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया। ت)

---

1 ....."المعجم الأوسط"، من اسمه محمد، الحديث: ٧٣٠٣، ج٥، ص٢٧٢.

2 ....."صحيح مسلم"، كتاب البرّ والصلة، باب فضل صلة أصدقاء الأب والأمّ ونحوهما، الحديث: ٢٥٥٢، ص١٣٨٢،

و"كنز العمال"، كتاب النكاح، الحديث: ٤٥٤٥٤، ج١٦، ص١٩٣، (بحواله مسند ومسلم وأبي داود وترمذي).

www.dawateislami.net

ह़दीस 20 : कि फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((اِحْفَظْ وُدَّ أَبِيْكَ لَا تَقْطَعْهُ فَيُطْفِئَ اللّٰهُ نُوْرَكَ))، رواه البخاري في "الأدب المفرد" والطبراني في "الأوسط" والبيهقي في "الشعب" عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالى عنهما[1]۔

अपने मां-बाप की दोस्ती पर निगाह रख उसे क़त्अ़ न करना कि **अल्लाह** तआ़ला नूर तेरा बुझा देगा (इसे बुख़ारी ने "अल अदबुल मुफ़रद" में, त़बरानी ने "औसत़" में और बैहक़ी ने "शा'ब" में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया। ت)

ह़दीस 21 : कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

((تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ يَوْمَ الْإِثْنَيْنِ وَالْخَمِيْسِ عَلَى اللّٰهِ تَعَالَى وَتُعْرَضُ عَلَى الْأَنْبِيَاءِ وَعَلَى الْآبَاءِ وَالْأُمَّهَاتِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَيَفْرَحُوْنَ بِحَسَنَاتِهِمْ وَيَزْدَادُوْنَ وُجُوْهُهُمْ بَيْضاً وَنُزْهَةً فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُؤْذُوْا مَوْتَاكُمْ))، رواه الإمام الحكيم عن والد عبد العزيز رضي اللّٰه تعالى عنه[2]۔

हर **दो शम्बा व पंजशम्बा**[3] को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर आ'माल पेश होते हैं और अम्बियाए किराम علیہم الصلوٰۃ والتسلیم और मां-बाप के सामने हर जुमुआ़ को, वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई व ताबिश बढ़ जाती है, तो **अल्लाह** से डरो और अपने मुर्दों को अपने गुनाहों से रंज न पहुंचाओ (इसे इमाम ह़कीम ने अपने वालिद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया। ت)

---

1 ....."المعجم الأوسط"، من اسمه مطّلب، الحديث: ٨٦٣٣، ج٦، ص٢٣٨.

2 ....."نوادر الأصول"، الأصل السابع والستّون والمئة، الحديث: ١٠٧٥، ص٣٩٣.

3 .....या'नी पीर और जुमा'रात

www.dawateislami.net

बिल जुम्ला[1] वालिदैन का ह़क़ वोह नहीं कि इन्सान इस से कभी **ओ़हदा बर आ**[2] हो **वोह उस के ह़याते व वुजूद के सबब हैं**[3] तो जो कुछ ने'मतें दीनी व दुन्यवी पाएगा सब उन्हीं के तुफ़ैल में हुईं कि हर ने'मत व कमाल वुजूद पर मौक़ूफ़ है और वुजूद के सबब वोह हुवे तो सिर्फ़ मां-बाप होना ही ऐसे अ़ज़ीम ह़क़ का **मूजिब**[4] है जिस से बरिय्युज़्ज़िम्मा कभी नहीं हो सकता न कि इस के साथ उस की परवरिश में उन की कोशिशें, उस के आराम के लिये उन की तक्लीफ़ें ख़ुसूसन पेट में रखने, पैदा होने, दूध पिलाने में मां की अज़िय्यतें, उन का शुक्र कहां तक अदा हो सकता है ! ख़ुलासा येह कि वोह उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साए और उन की रबूबिय्यत व रह़मत के **मज़हर हैं**[5] व लिहाज़ा "क़ुरआने अ़ज़ीम" में **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपने ह़क़ के साथ उन का ह़क़ ज़िक्र फ़रमाया कि :

﴿اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ﴾[6] ह़क़ मान मेरा और अपने मां-बाप का ।

ह़दीस में है कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! एक राह में ऐसे गर्म पथ्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब हो जाता, मैं छे मील तक अपनी मां को अपनी गर्दन पर सुवार कर के ले गया हूं क्या मैं अब उस के ह़क़ से अदा (बरी) हो गया ?

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

1 .....ह़ासिले कलाम येह है कि । 2 .....बरिय्युज़्ज़िम्मा ।

3 .....वालिदैन उस की ज़िन्दगी और उस के दुन्या में आने का ज़रीआ़ हैं ।

4 .....बाइ़स । 5 .....ज़ाहिर होने की जगह हैं ।

6 .....پ: ٢١، لقمان: ١٤.

www.dawateislami.net

तेरे पैदा होने में जिस क़दर दर्दों के झटके उस ने उठाए हैं शायद उन में एक झटके का बदला हो सके। (इसे त़बरानी ने "औसत़" में बुरैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत किया। ت)

((لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ بِطَلْقَةٍ وَاحِدَةٍ))، رواه الطبراني في "الأوسط" عن بريدة رضي الله تعالٰى عنه[1]۔

अल्लाह عزّوجلّ **उक़ूक़**[2] से बचाए और अदाए हुक़ूक़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

آمين! آمين! برحمتك يا أرحم الراحمين وصلى الله تعالٰى على سيّدنا ومولانا محمد وآله وصحبه أجمعين آمين! والحمد لله ربّ العالمين، والله تعالى أعلم.

मस्अला : अज़ बंगाला ज़िल्अ़ कमरिला मौज़ए़ हरमन्डल मुर्सलहू मौलवी अ़ब्दुल जब्बार साहि़ब 25 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1320 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि एक शख़्स कुछ **लियाक़त रखने वाला**[3] अपने वालिदैन सालिह़ीन के साथ **जंगो जदल व ज़दो ज़र्ब**[4] व ज़ुल्मो सितम करता है और ख़ुद अपने वालिदैन को **त़ा'ने-तशनीअ़ व दुश्नाम करता है**[5] और लोगों से करवाता है, और **वोह शख़्स ग़ासिब व काज़िब व सारिक़ के साथ मौसूफ़ है**[6], ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ जाइज़ है या मकरूह? अगर मकरूह

---

1 ......"كنز العمال"، كتاب النكاح، الباب الثامن، الحديث: ٤٥٤٩٨، ج١٦، ص١٩٦، (بحواله طبراني في "الأوسط")، و"المعجم الصغير"، الحديث:٢٥٧، ج١، ص٩٣.

2 .....ना फ़रमानियों।

3 .....समझदार।

4 .....झगड़ा फ़साद, मार पीट।

5 .....बुरा भला कहता और गाली गलोच करता है।

6 .....और वोह शख़्स ह़क़ मारने, झूट बोलने और चोरी करने जैसे मज़मूम औसाफ़ से जाना पहचाना जाता है।

www.dawateislami.net

है तो कौन क़िस्म की मकरूह है ? और ऐसे शख़्स के पीछे जो कोई **ब सबबे ना वाक़िफ़ी के**[1] नमाज़ पढ़े तो नमाज़ उस को दोबारा पढ़ना होगी या नहीं ? और ऐसे **आक़ुले वालिदैन**[2] को दा'वत करना-करवाना, सदक़ा वग़ैरा देना, दिलवाना दुरुस्त है या नहीं ? और उस के मकान में दा'वत खाना कैसी है और वोह शख़्स **अज़ रूए शरअ़ शरीफ़ के किस ता'ज़ीर**[3] के लाइक़ है और उस की ताईद करने वाले पर अज़ रूए शरअ़ शरीफ़ क्या हुक्म है ? बा दलाइले क़ुरआनो ह़दीस व अक़्वाले अइम्मा इरशाद फ़रमाया जाए।

अल जवाब

ऐसा शख़्स अफ़्सकुल फ़ासिक़ीन व अख़बसे मुहीन व मुस्तह़िक़े ग़ज़बे शदीदे रब्बुल आ़लमीन व अ़ज़ाबे अ़ज़ीम व नारे जह़ीम है।[4]

ह़दीस 1 : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ، أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ، أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ؟))

मैं तुम्हें न बताऊं कि सब कबीरा गुनाहों से सख़्त तर गुनाह क्या है, क्या न बता दूं कि सब कबाइर से बद तर क्या है, क्या न बता दूं कि सब कबीरों से शदीद तर क्या है ?

सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : इरशाद हो ! फ़रमाया :

1.....इन मज़मूम औसाफ़ से ला इल्मी की वज्ह से।
2.....वालिदैन के ना फ़रमान 3.....शरीअ़ते मुत़ह्हरा के मुत़ाबिक़ किस सज़ा
4.....ऐसा शख़्स फ़ासिक़ों का सरदार, सब से बड़ा ख़बीसे ज़लील और अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के सख़्त ग़ज़ब का मुस्तह़िक़ और बहुत बड़े अ़ज़ाब व दोज़ख़ की आग का ह़क़दार है।

www.dawateislami.net

((اَلْإِشْرَاكُ بِاللّٰهِ وَعُقُوْقُ الْوَالِدَيْنِ))، الحديث، رواه الشيخان والترمذي عن أبي بكرة رضي اللّٰه تعالٰى عنه[1]۔

अल्लाह तआ़ला का शरीक ठहराना और मां-बाप को सताना, अल ह़दीस। (इसे इमाम बुख़ारी व मुस्लिम और तिरमिज़ी ने अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया। ت)

ह़दीस 2 : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((ثَلَاثَةٌ لَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ: اَلْعَاقُّ لِوَالِدَيْهِ وَالدَّيُّوْثُ وَالرَّجُلَةُ مِنَ النِّسَاءِ))، رواه النسائي والبزار بسندين جيدين والحاكم عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالٰى عنهما[2]۔

तीन शख़्स जन्नत में न जाएंगे : मां-बाप को सताने वाला और दय्यूस और मर्दों की वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत (निसाई और बज़्ज़ार ने जय्यिद सनदों के साथ और ह़ाकिम ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया। ت)

ह़दीस 3 : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((ثَلَاثَةٌ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ مِنْهُمْ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا: عَاقٌّ وَمَنَّانٌ وَمُكَذِّبٌ بِقَدَرٍ))، رواه ابن أبي عاصم في "السنّة" بسند حسن

तीन शख़्स हैं कि अल्लाह तआ़ला न उन के फ़र्ज़ क़बूल करे न नफ़्ल (1) मां बाप को ईज़ा देने वाला और (2) सदक़ा दे कर फ़क़ीर पर एह़सान रखने वाला और (3) तक़दीर का झुटलाने वाला।

---

1 ....."صحيح البخاري"، كتاب الشهادات، باب ما قيل في شهادة الزور، الحديث: ٢٦٥٤، ج٢، ص١٩٤، مختصراً.

2 ....."المستدرك"، كتاب الإيمان، باب ثلاثة لا يدخلون الجنّة، الحديث: ٢٥٢، ج١، ص٢٥٢، بألفاظ مختلفة.

www.dawateislami.net

(इसे आ़सिम ने "अस्सुन्नह" में ब सनदे ह़सन अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया ।)

عـن أبي أمامة رضي اللّٰه تعالى عنه[1]۔

ह़दीस 4 : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

मलऊ़न है जो अपने वालिदैन को सताए, मलऊ़न है जो अपने वालिदैन को सताए, मलऊ़न है जो अपने वालिदैन को सताए। (इसे त़बरानी और ह़ाकिम ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया । ت)

((مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ، مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ، مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ))، رواه الطبراني والحاكم عن أبي هريرة رضي اللّٰه تعالى عنه[2]۔

ह़दीस 5 : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

अल्लाह की ला'नत उस पर जो अपने मां-बाप को गाली दे (इब्ने ह़ब्बान ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसे रिवायत किया । ت)

((لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ سَبَّ وَالِدَيْهِ))، رواه ابن حبّان عن ابن عبّاس رضي اللّٰه تعالى عنه[3]۔

ह़दीस 6 : कि एक जवान को नज़्अ़ के वक़्त कलिमा तल्क़ीन किया, न कह सका, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : कह لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहा : मुझ से नहीं कहा जाता, फ़रमाया : क्यूं ? कहा : वोह शख़्स अपनी मां को सताता था, रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की मां को बुला कर फ़रमाया : येह तेरा बेटा है ? अ़र्ज़ की : हां, फ़रमाया :

1 ....."السنة" لابن أبي عاصم، باب: ما ذكر عن النبي عليه السلام في المكذبين بقدر اللّٰه... إلخ، الحديث: ٣٣٢، ص٧٣.

2 ....."المعجم الأوسط"، الحديث: ٨٤٩٧، ج٦، ص١٩٩، بألفاظ مختصر.

3 ....."الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الحدود، باب الزنا وحدّه، الحديث: ٤٤٠٠، ج٤، ص٢٩٩.

www.dawateislami.net

أَرَأَيْتِ لَوْ أُجِّجَتْ نَارٌ ضَخْمَةٌ
فَقِيْلَ لَكِ: إِنْ شَفَعْتِ لَهُ
خَلَّيْنَاهُ وَإِلَّا حَرَّقْنَاهُ أَكُنْتِ
تَشْفَعِيْنَ لَهُ؟

भला सुन तो अगर एक अ़ज़ीमुश्शान आग भड़काई जाए और कोई तुझ से कहे कि तू इस की शफ़ाअ़त करे जब तो हम इसे छोड़ते हैं वरना जला देंगे, क्या उस वक़्त तू इस की शफ़ाअ़त करेगी ?

अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! जब तो शफ़ाअ़त करूंगी, फ़रमाया : तो **अल्लाह** को और मुझे गवाह कर ले कि तू इस से राज़ी हो गई, उस ने अ़र्ज़ की : इलाही ! मैं तुझे और तेरे रसूल को गवाह करती हूं कि मैं अपने बेटे से राज़ी हुई, अब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवान से फ़रमाया : ऐ लड़के ! कह : لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ[1] जवान ने कलिमा पढ़ा और इन्तिक़ाल किया,

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَنْقَذَهُ بِيْ مِنَ النَّارِ))، رواه الطبراني عن عبد اللّٰه بن أبي أوفى رضي اللّٰه تعالى عنهما[2]۔

शुक्र उस ख़ुदा का जिस ने मेरे वसीले से इस को दोज़ख़ से बचा लिया। (इसे त़बरानी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया। ت)

ह़दीस 7 : अ़व्वाम बिन ह़ौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कि अजिल्ला अइम्मए तबए ताबेईन से हैं[3] 148 हिजरी में इन्तिक़ाल किया, फ़रमाते हैं : मैं एक मह़ल्ले

---

1 .....**अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं।

2 .....”الترغيب والترهيب“، الحديث: ١٦، ج٣، ص٢٢٦، (بحوالہ طبرانی)، و”مجمع الزوائد“، الحديث: ١٣٤٣٣، ج٨، ص٢٧٠.

3 .....उन बड़ी शानो शौकत वाले इमामों में से एक अ़ज़ीम इमाम हैं जिन्हों ने ईमान की हालत में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को देखने वालों को देखा।

www.dawateislami.net

में गया उस के किनारे पर क़ब्रिस्तान था अ़स्र के वक़्त एक क़ब्र **शक़ हुई**[1] और उस में से एक आदमी निकला जिस का सर गधे और बाक़ी बदन इन्सान का, उस ने तीन आवाज़ें गधे की त़रह़ कीं फिर क़ब्र बन्द हो गई, एक बुढ़िया बैठी **कात रही थी,**[2] एक औ़रत ने मुझ से कहा इन बड़ी बी को देखते हो ? मैं ने कहा : इस का क्या मुआ़मला है ? कहा : येह क़ब्र वाले की मां है वोह शराब पीता था जब शाम को आता मां नसीह़त करती कि ऐ बेटे ! ख़ुदा से डर, कब तक इस नापाक को पियेगा ? येह जवाब देता कि तू तो गधे की त़रह़ चिल्लाती है, येह शख़्स अ़स्र के बा'द मरा जब से हर रोज़ बा'दे अ़स्र इस की क़ब्र शक़ होती है और यूं तीन आवाज़ें गधे की कर के फिर बन्द हो जाती है। رواه الأصبهاني وغيره[3] (अस्बहानी वग़ैरा ने इसे रिवायत किया है। ت)

इसी त़रह़ **ग़सब व किज़्ब व सर्के की ह़ुरमतें**[4] **ज़रूरिय्याते दीन से हैं**[5] ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ सख़्त मकरूह है, मकरूहे तह़रीमी क़रीब ब ह़राम और वाजिबुल इआ़दा है कि **नादानिस्ता**[6] पढ़ ली हो तो फेरना वाजिब है।

---

1 .....खुली। 2 .....चरख़े पर रूई से धागा बुन रही थी।

3 ....."الترغيب والترهيب"، كتاب البر والصلة، الحديث:١٧، ج٣، ص٢٢٦، (بحوالہ اصبہانی) و"شرح الصدور" عن الأصبهاني، باب عذاب القبر، ص١٧٢.

4 .....नाजाइज़ क़ब्ज़ा करने, झूट बोलने और चोरी के ह़राम होने के अह़काम।

5 .....ज़रूरिय्याते दीन से मुराद वोह मसाइले दीन हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत, अम्बिया की नबुव्वत, जन्नत व नार, ह़श्र व नश्र वग़ैरा, मसलन येह ए'तिक़ाद हो कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं हुज़ूर के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता। (बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, जि. 1, स. 172, मुल्तक़त़न)

6 .....अन्जाने में।

www.dawateislami.net

"सग़ीरी" में है :

يكره تقديم الفاسق كراهة تحريم[1]۔

फ़ासिक़ को इमाम बनाना मकरूहे तह़रीमी है। 12 "सग़ीरी" (ت)

"ग़ुनिया" में है :

لو قدّموا فاسقاً يأثمون بناءً على أنّ كراهة تقديمه كراهة تحريم[2]۔

फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनहगार होंगे, क्यूंकि उसे इमाम बनाना मकरूहे तह़रीमी है 12 "ग़ुनिया" (ت)

"दुर्रे मुख़्तार" में है :

كلّ صلاة أدّيت مع كراهة التحريم وجب إعادتها[3]۔

हर वोह नमाज़ जो कराहते तह़रीमा के साथ अदा की गई हो उस का दोबारा पढ़ना वाजिब है 12

ऐसे अशद्द फ़ासिक़ फ़ाजिर[4] से शरअ़न **बुग़्ज़ रखने**[5] का हुक्म है और जिस बात में उस का ए'ज़ाज़ व इकराम निकले बे ज़रूरत व मजबूरी नाजाइज़ व ममनूअ़ है। "तबयीनुल ह़क़ाइक़" व "मराक़ियुल फ़लाह़", व "फ़त्हुल मुईन" व "ह़ाशिया दुर्रे मुख़्तार" लिल अ़ल्लामतुल त़ह़त़ावी वग़ैरहा में है :

الفاسق وجب عليهم إهانته شرعاً[6]۔

शरई त़ौर पर फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब है 12 ।

---

1 ......"صغيري شرح منية المصلّي"، مباحث الإمامة، ص٢٦٤.

2 ...... "غنية المتملي"، كتاب الصلاة، فصل في الإمامة، ص٥١٣.

3 ......"الدر المختار"،كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص ٦٣٠، بتغير قليل.

4 .....ऐसे सख़्त गुनहगार बदकार शख़्स ।

5 .....नफ़रत रखने ।

6 ...... "مراقي الفلاح"، ص٧٠،

"حاشية الطحطاوي على الدرّ"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج١، ص٢٤٣،

و"تبيين الحقائق"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج١، ص٣٤٥.

www.dawateislami.net

उस की दा'वत करना, कराना उस के यहां दा'वत खाना कुछ न चाहिये "सुनने अबी दावूद" व "जामेए तिरमिज़ी" में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((لَمَّا وَقَعَتْ بَنُوْ إِسْرَائِيْلَ فِي الْمَعَاصِيْ نَهَتْهُمْ عُلَمَاؤُهُمْ فَلَمْ يَنْتَهُوْا فَجَالَسُوْهُمْ فِيْ مَجَالِسِهِمْ وَآكَلُوْهُمْ وَشَارَبُوْهُمْ فَضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوْبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ فَلَعَنَهُمْ عَلٰى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ[1]۔

जब बनी इस्राईल गुनाहों में पड़े उन के उ़लमा ने मन्अ़ किया वोह बाज़ न आए येह उ़लमा उन के पास उन के जल्सों में बैठे उन के साथ खाना खाया, पानी पिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन मुजरिमों के दिलों का असर उन पास बैठने वालों पर भी डाला कि सब एक से हो गए फिर उन सब पर दावूद व ईसा बिन मरयम علیہم الصلاۃ والسلام की ज़बान से ला'नत फ़रमाई येह बदला था उन के गुनाहों और ह़द से बढ़ने का।

वोह सख़्त से सख़्त ता'ज़ीर (सज़ा) के क़ाबिल है जिस की मिक़्दार ह़ाकिमे शरअ़ की राए पर सिपुर्द है और अगर सर्क़ा, **शहादते शरइ़य्या**[2] से साबित हो जाए तो **ह़ाकिमे शरअ़**[3] उस का हाथ कलाई से काट देगा उस की ताईद करने वाले सब सख़्त गुनहगार हैं, قال اللّٰہ تعالی

---

1 ....."سنن الترمذي"، كتاب التفسير، الحديث: ٣٠٥٨، ج٥، ص٣٦، و"مشكاة المصابيح"، كتاب الأدب، الحديث: ٥١٤٨، ج٢، ص٢٤٠.

2 .....वोह चोरी जो चोर के ह़क़ में दो मर्दों के गवाही देने से साबित हो जाए शहादते शरइ़य्या कहलाती है।

3 .....शरीअ़ते मुत़ह्हरा की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा ह़ाकिम।

www.dawateislami.net

﴿ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ ﴾ (پ:٦، المائدة: ٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।*

अभी ह़दीस सुन चुके कि पास बैठने, साथ खाने वालों पर ला'नत उतरी, फिर ताईद करने कराने वालों का क्या ह़ाल होगा ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पनाह दे और मुसलमानों को तौफ़ीक़े तौबा बख़्शे, आमीन !

रहा सदक़ा देना, दिलाना, अगर उसे मोह़ताज, ज़रूरत मन्द, नंगा, भूका देखें तो ह़रज नहीं जब कि गुनाहों में उस की **ताईद व इआ़नत**[1] की निय्यत न हो।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((فِيْ كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ حَرَّاءَ أَجْرٌ)) رواه الشيخان عن أبي هريرة وفي الباب عن عبد اللّٰه بن عمرو وعن سراقه بن مالك رضي اللّٰه تعالى عنهم[2]۔

हर गर्म जिगर वाली में सवाब है। (इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने इसे अबू हुरैरा से रिवायत किया, और इस बाब में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र और सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से भी रिवायत है। ت)

सह़ीह़ ह़दीस में है कि कुत्ते को भी पानी पिलाना सवाब है (ह़त्ता कि अल्लाह तआ़ला ने इस सबब से फ़ाह़िशा औ़रत की भी मग़्फ़िरत फ़रमा दी जैसा कि "सिह़ाह़" में है। ت) حتى غفر اللّٰه تعالى به البغي كما في "الصحاح"[3] واللّٰه تعالى أعلم

---

1 .....ह़िमायत और मदद।

2 ....."صحيح البخاري"، كتاب الأدب، الحديث: ٦٠٠٩، ج٤، ص١٠٣، و"المسند"، الحديث: ١٧٥٩٥، ج٦، ص١٨٣.

3 ....."صحيح البخاري"، الحديث: ٣٣٢١، ج٢، ص٤٠٩، "صحيح مسلم"، كتاب السلام، الحديث: ٢٢٤٥، ص١٢٣٣.

www.dawateislami.net

मस्अला : 7 रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ 1321 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि हिन्दा को जब मरजुल मौत में **अपने मर्ग**[1] का यक़ीन हुवा तो अपने **शोहर ज़ैद को ब मुवाजहए चन्द मौजूदीन, मुख़ातब कर के अ़फ़्वे हुक़ूक़ व तक़्सीरात की मुस्तदई हुई**[2] और अपने **जुम्ला हुक़ूक़**[3] ज़ैद को मुआ़फ़ किये, **दैने महर**[4] को ब तफ़्सील अ़लाहिदा मुआ़फ़ किया, ज़ैद ने भी अपने **हुक़ूक़ व कुसूरे ख़िदमात** की मुआ़फ़ी दी, अब इस सूरत में किसी क़िस्म का मुवाख़ज़ा एक का दूसरे पर **इन्दल्लाह**[5] बाक़ी तो न रहा या **लफ़्ज़े मुजमल "जुम्ला हुक़ूक़ व कुसूर" काफ़ी न था**[6] अ़लाहिदा अ़लाहिदा हर ख़ता व ह़क़ की तशरीह़ ज़रूर थी और ज़ैद दैने महर से बरी हो गया या येह मुआ़फ़ी **ज़मानए मरज़ुल मौत की ह़ुक्मे वसिय्यत में मुतसव्वर हो कर दो सलस का मुवाख़ज़ा दार रहेगा**[7] अगर्चे वुरसा दुन्या में शर्म या रस्म के बाइ़स **मुतक़ाज़ी न हों**[8] بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا (बयान फ़रमाइये अज्र पाइये, ت)

---

1 .....अपनी मौत ।

2 .....उन लोगों के सामने जो उस वक़्त मौजूद थे अपने शोहर ज़ैद को मुख़ातब कर के अपनी ग़लतियों और कोताहियों की मुआ़फ़ी चाही ।

3 .....तमाम हुक़ूक़ ।

4 .....महर का क़र्ज़ या'नी वोह माल जो शोहर पर महर की मद में लाज़िम था और उस ने अभी तक अदा नहीं किया ।

5 .....अल्लाह तबारक व तआ़ला के नज़्दीक ।

6 .....या मुख़्तसर अल्फ़ाज़ "जुम्ला हुक़ूक़ व कुसूर" कह देना मुआ़फ़ी के लिये काफ़ी न था ।

7 .....ज़मानए मरज़ुल मौत में होने की वज्ह से वसिय्यत के अह़काम लागू होने पर, शोहर महर का दो तिहाई माल अदा करने का ज़िम्मेदार ठहरेगा ।

8 .....इस माल का तक़ाज़ा न करें ।

www.dawateislami.net

अल जवाब

आ़म हुक़ूक़ की मुआ़फ़ी जो ज़ैद ने हिन्दा और हिन्दा ने ज़ैद को की उन में हिन्दा के **हुक़ूक़े मालिया मिस्ले महर व दीगर दुयून की मुआ़फ़ी तो इजाज़ते वारिसाने हिन्दा पर मौक़ूफ़ रहेगी**[1] كـمـا بيّناه في الهبة من "فتاوانا"[2] (जैसा कि हम ने इसे अपने फ़तावा में हिबा के बाब में बयान किया है। ت) उन के सिवा हिन्दा के हुक़ूक़े ग़ैर मालिया और ज़ैद के हुक़ूक़े मालिया व ग़ैर मालिया जो कुछ **मुआ़फ़ कुनिन्दा**[3] ज़ैद ख़्वाह हिन्दा के इ़ल्म में था वोह सब मुआ़फ़ हो गया और जो इ़ल्म में न था मगर मा'मूली हुक़ूक़ सहल व असान से था कि बिल ख़ुसूस मा'लूम होता तो मुआ़फ़ी में **बाक**[4] न होता वोह भी मुआ़फ़ हो गया और जो इतना कसीर या अ़ज़ीम व शदीद था कि अगर तफ़्सीलन बताया जाए तो साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे **ऐसे आ़म मुजमल लफ़्ज़ में उन हुक़ूक़ की मुआ़फ़ी हो जाना उ़लमा में मुख़्तलिफ़ फ़ीह है**[5] बा'ज़ ब नज़रे ज़ाहिर लफ़्ज़ सब की मुआ़फ़ी मानते हैं और बा'ज़ बिल ख़ुसूस तफ़्सीलन इन का बता कर मुआ़फी मांगना ज़रूरी जानते हैं **अव्वल औसअ़ है और सानी अह़वत़**[6] ।

"मिनहुर्रौज़ुल अज़्हर" में है :

---

1 .....माली हुक़ूक़ मसलन महर और दूसरे क़र्ज़ों की मुआ़फ़ी तो हिन्दा के वारिसों की इजाज़त पर ठहरेगी।

2 ...... انظر "الفتاوى الرضوية"، كتاب الهبة، ج١٩، ص٢٨٥ و ٣٨٥.

3 .....मुआ़फ़ करने वाले। 4 .....अन्देशा।

5 .....मुख़्तसर अल्फ़ाज़ से मुआ़फ़ी होने या न होने में उ़लमाए किराम के दरमियान इख़्तिलाफ़ पाया जाता है।

6 .....**पहली सूरत** (जिस में मुख़्तसर अल्फ़ाज़ से हुक़ूक़ मुआ़फ़ कराए गए) में इस बात की गुन्जाइश है कि हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो भी सकते हैं और नहीं भी जब कि **दूसरी सूरत** (जिस में हुक़ूक़ तफ़्सील से बयान कर के मुआ़फ़ी त़लब की हो) में ज़ियादा एह़तियात़ है कि हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो जाएंगे إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ।

هل يكفيه أن يقول لك عليّ دين فاجعلني في حلّ أم لا بدّ أن يعيّن مقداره؟ ففي "النوازل": رجل له على آخر دين وهو لا يعلم بجميع ذلك فقال له المديون: أبرئني ممّا لك عليّ، فقال الدائن: أبرأتك، قال نصير: لا يبرأ إلّا عن مقدار ما يتوهّم أي: يظنّ أنّه عليه، وقال محمد بن سلمة: يبرأ عن الكلّ، قال الفقيه أبو الليث: حكم القضاء ما قاله محمد بن سلمة، وحكم الآخرة ما قاله نصير، وفي "القنية": من عليه حقوق فاستحلّ صاحبها ولم يفصّلها فجعله في حلّ يعذر إن علم أنّه لو فصّله يجعله في حلّ وإلّا فلا، قال بعضهم: إنّه حسن وإن روي أنّه يصير في حلّ مطلقاً، وفي "الخلاصة": "رجل قال لآخر: حلّلني من كلّ حقّ هو لك عليّ، وأبرأه إن كان صاحب الحقّ

"क्या मक़रूज़ के लिये येह काफ़ी है कि क़र्ज़ ख़्वाह से कहे कि मुझ पर तुम्हारा क़र्ज़ है मुझे मुआ़फ़ कर दे या ज़रूरी है कि क़र्ज़ की मिक़्दार मुअ़य्यन करे ? "नवाज़िल" में है कि एक आदमी का दूसरे पर क़र्ज़ है और उसे तमाम क़र्ज़ का इ़ल्म नहीं मक़रूज़ उसे कहता है कि तू मुझे अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे, उस ने कहा : मैं ने तुझे मुआ़फ़ कर दिया, नुसैर कहते हैं कि उसी क़दर मुआ़फ़ होगा जितना कि उस के गुमान में था, मुह़म्मद बिन सलमह कहते हैं कि तमाम मुआ़फ़ हो जाएगा, फ़क़ीह अबुल्लैस ने फ़रमाया : क़ाज़ी का फ़ैसला वोही है जो मुह़म्मद बिन सलमह का क़ौल है और आख़िरत का हुक्म वोह है जो नुसैर ने फ़रमाया। "कुनिया" में है कि जिस शख़्स पर किसी के कुछ हुक़ूक़ हों तो वोह साह़िबे ह़क़ से कहे कि मुझे मुआ़फ़ कर दे और हुक़ूक़ की तफ़्सील न करे साह़िबे ह़क़ उसे मुआ़फ़ कर दे तो अगर येह मा'लूम हो कि साह़िबे ह़क़ हुक़ूक़ की तफ़्सील को जान कर भी मुआ़फ़ कर देगा तो मुआ़फ़ हो जाएंगे वरना नहीं।

www.dawateislami.net

बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : येह तफ़्सील उ़म्दा है अगर्चे येह भी रिवायत है कि इस से बहर सूरत हुक़ूक़ मुआ़फ़ हो जाएंगे, और "ख़ुलासा" में है कि एक शख़्स ने दूसरे को कहा : तुम मुझे अपना हर ह़क़ मुआ़फ़ कर दो, उस ने मुआ़फ़ कर दिया, अगर साह़िबे ह़क़ को इ़ल्म है फिर तो मुआ़फ़ी मांगने वाला क़ज़ाअन व दियानतन (या'नी फ़ैसले के ए'तिबार से और अल्लाह के नज़्दीक भी) बरी हो जाएगा और अगर उसे इ़ल्म नहीं तो बिल इत्तिफ़ाक़ येह फ़ैसला होगा कि वोह क़ज़ाअन बरी हो गया, रहा दियानतन (अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक) तो इमाम मुह़म्मद के नज़्दीक दियानतन बरी नहीं होगा और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़्दीक बरी हो जाएगा इसी पर फ़तवा है, इन्तिहा । इस में ए'तिराज़ है कि येह फ़क़ीह अबुल्लैस के मुख़्तार के ख़िलाफ़ हो सकता है इन का क़ौल तक़्वा पर मब्नी हो । "मिनहुर्रौज़" का कलाम ख़त्म हुवा ।"

عالماً به برئ حكماً وديانةً، وإن لم يكن عالماً به يبرأ حكماً بالإجماع، وأمّا ديانةً فعند محمد رحمه اللّٰه تعالى لا يبرأ ديانة، وعند أبي يوسف -رحمه اللّٰه تعالى- يبرأ وعليه الفتوى"[1]، انتهى. وفيه أنّه خلاف ما اختار أبو الليث ولعلّ قوله مبنيّ على التقوى[2] اهـ. ما في "منح الروض".

---

1 ....."خلاصة الفتاوى"، كتاب الهبة، الجزء: ٤، ص٤٠٦.

2 ....."منح الروض الأزهر شرح الفقه الأكبر"، التوبة وشرائطها، ص١٥٩.

www.dawateislami.net

अक़ूलु (मैं कहता हूं) कि फ़क़ीह अबुल्लैस के मुख़्तार के ख़िलाफ़ होने में कलाम है क्यूंकि "ख़ुलासा" में इस बारे में गुफ़्तगू है कि एक शख़्स को हुक़ूक़ का बिल्कुल इल्म नहीं वोह उन्हें मुआफ़ कर देता है और फ़क़ीह अबुल्लैस का कलाम इस में है कि एक शख़्स के गुमान में हुक़ूक़ की एक मिक़्दार है जब कि वोह दर हक़ीक़त ज़ियादा थे और इन दोनों सूरतों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है क्यूंकि जो शख़्स मुत़लक़न अपने हुक़ूक़ मुआफ़ कर देता है उस का इरादा येह नहीं होता कि मैं सिर्फ़ वोह हुक़ूक़ मुआफ़ कर रहा हूं जो मेरे इल्म में हैं और जो शख़्स किसी मुअ़य्यन हक़ को मुआफ़ करता है तो उस का ज़ेह्न उसी त़रफ़ जाता है कि जितना मुझे इल्म है उसी क़दर मुआफ़ कर रहा हूं। (ت) واللہ تعالٰی اعلم

أقول: وفي مخالفته لما اختار الفقيه نظر فإنّ الكلام هاهنا في البراءة من الحقوق المجهولة لصاحبها أصلاً وثمّه فيما إذا ظنّ مقداراً وكان الواقع أزيد وبينهما بون بيّن فإنّ من جعل في حلّ مطلقاً لم يرد خصوص ما في علمه أمّا من جعل في حلّ من حقّ معلوم له فإنّما يذهب ذهنه إلى قدر ما في علمه، والله تعالٰى أعلم.

नीज़ "मिनहुर्रौज़" में है :

هل يكفيه أن يقول: اغتبتك فاجعلني في حلّ أم لا بدّ أن يبيّن مااغتاب؟ ففي "منسك ابن العجمي":

क्या येह काफ़ी है कि एक आदमी दूसरे से कहे कि मैं ने तुम्हारी ग़ीबत की है मुझे मुआफ़ कर दो, या येह ज़रूरी है कि येह भी बताए कि मैं ने तुम्हारी येह ग़ीबत

www.dawateislami.net

की है, इब्नुल अ़जमी के "मन्सक" में है कि अगर येह समझता है कि ग़ीबत के तफ़्सीलन बताने से फ़ितना पैदा होगा तो इस का इज़हार न करे, हमारे नज़दीक ना मा'लूम हुक़ूक़ के मुआ़फ़ करने का जवाज़ इस पर दलालत करता है लेकिन येह बात गुज़र चुकी है कि आया फ़ैसले के ए'तिबार से काफ़ी है या दियानत के तौ़र पर اھ (आ'ला ह़ज़रत قدس سرہ फ़रमाते हैं) अक़ूलु (मैं कहता हूं कि) यहां गुज़श्ता इख़्तिलाफ़ के जारी होने में कलाम है, क्यूंकि ग़ीबत उस वक़्त तक बन्दे का ह़क़ नहीं बनती जब तक उसे न पहुंच जाए, जब पहुंच जाए तो ना मा'लूम हुक़ूक़ में से न रहेगी, ख़ुद "मिनहुर्रौज़" में है कि फ़क़ीह अबुल्लैस ने फ़रमाया कि ग़ीबत करने वाला साह़िबे ह़क़ (जिस की ग़ीबत की गई) से मुआ़फ़ी मांगे बिग़ैर तौबा करे तो उस में लोगों ने मुख़्तलिफ़ बातें कही हैं, बा'ज़ ने कहा

لا يعلمه بها إن علم أنّ إعلامه يثير فتنة، ويدلّ عليه أنّ الإبراء عن الحقوق المجهولة جائز عندنا لكن سبق أنّه هل يكفيه حكومة أوديانة؟ اهـ، ما في "منح الروض [1]".

أقول: وفي جريان الخلاف المذكور هاهنا نظر فإنّ الغيبة لا تصير من حقوق العبد ما لم تبلغه وإذا بلغته لم تكن من الحقوق المجهولة وقد قال في "المنح" نفسه: ما نصّه قال الفقيه أبو الليث: قد تكلّم الناس في توبة المغتابين هل تجوز من غير أن يستحل من صاحبه؟ قال بعضهم: يجوز، وقال بعضهم: لا يجوز، وهو عندنا على وجهين أحدهما

1 ..... "منح الروض الأزهر شرح الفقه الأكبر"، التوبة وشرائطها، ص ١٦٠.

www.dawateislami.net

जाइज़ है और बा'ज़ ने कहा नाजाइज़ है, हमारे नज़दीक इस की दो सूरतें हैं : (1) वोह बात उस शख़्स तक पहुंच गई जिस की ग़ीबत की गई थी तो उस की तौबा येह है कि उस शख़्स से मुआ़फ़ी मांगे (2) और अगर ग़ीबत उस शख़्स तक नहीं पहुंची तो अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत की दुआ़ मांगे और अपने दिल में येह अ़हद करे कि फिर ग़ीबत नहीं करूंगा। "रौज़तुल उ़लमा" में है कि मैं ने अबू मुहम्मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा कि अगर ग़ीबत उस शख़्स तक नहीं पहुंची जिस की ग़ीबत की गई थी तो ग़ीबत करने वाले के लिये तौबा फ़ाइदा मन्द होगी ? उन्हों ने फ़रमाया : हां ! क्यूंकि उस ने बन्दे के ह़क़ के मुतअ़ल्लिक़ होने से पहले तौबा कर ली है, ग़ीबत बन्दे का ह़क़ उस वक़्त होगी जब उस तक पहुंच जाएगी, मैं ने कहा कि अगर तौबा के बा'द उस शख़्स तक ग़ीबत पहुंच जाए, फ़रमाया कि उस की तौबा बातिल

إن كان ذلك القول قد بلغ إلى الذي اغتابه فتوبته أن يستحل منه وإن لم يبلغ إليه فليستغفر اللّٰه سبحانه ويضمر أن لا يعود إلى مثله.

وفي "روضة العلماء": سألت أبا محمد رحمه اللّٰه تعالى فقلت له: إذا تاب صاحب الغيبة قبل وصولها إلى المغتاب عنه هل تنفعه توبة؟ قال: نعم! فإنّه تاب قبل أن يصير الذنب ذنباً أي: ذنباً يتعلّق به حقّ العبد؛ لأنّها إنّما تصير ذنباً إذا بلغت إليه، قلت: فإن بلغت إليه بعد توبته؟ قال: لا تبطل توبته بل يغفر اللّٰه تعالى لهما جميعاً المغتاب بالتوبة والمغتاب عنه

www.dawateislami.net

नहीं होगी बल्कि **अल्लाह** तआला दोनों को बख़्श देगा ग़ीबत करने वाले को तौबा की वज्ह से और जिस की ग़ीबत की गई उसे उस तक्लीफ़ की वज्ह से जो उसे ग़ीबत सुन कर हुई है, क्यूंकि **अल्लाह** तआला करीम है उस के मुतअ़ल्लिक़ येह नहीं कहा जा सकता कि वोह किसी की तौबा क़बूल फ़रमा कर रद फ़रमाए बल्कि दोनों को बख़्श देगा इन्तिहा....إلخ। (त)

بـمـا يـلـحقه من المشقّة؛ لأنّه تعالى كريم ولا يحمل من كـرمـه ردّ تـوبتـه بعد قبـولهـا بـل يـعـفـو عنهما جميعاً[1] انتهى ... إلخ.

फ़क़ीर कहता है غفراللہ تعالیٰ لہ **ऐसे हुक़ूक़े अ़ज़ीमा शदीदा[2] जिन की तफ़्सील बयान हो तो साहिबे हक़ से मुआफ़ी की उम्मीद न हो ज़ाहिरन मुजर्रद इजमाली अल्फ़ाज़ से मुआफ़ न हो सकें कि वोह दलालतन मख़्सूस हैं**[3] मगर अगर इन अल्फ़ाज़ से मुआफ़ी चाही कि

"दुन्या भर में सख़्त से सख़्त जो हक़ मुतसव्वर हो वोह सब मेरे लिये फ़र्ज़ कर के मुआफ़ कर दे"

और उस ने क़बूल किया तो अब ज़ाहिरन तमाम हुक़ूक़ बिला तफ़्सील भी मुआफ़ हो जाएं :

क्यूंकि उस ने कह दिया है कि मुझे हर हक़ मुआफ़ कर दे और साथ ही येह भी कह दिया है कि हर बड़े से बड़ा हक़ मेरे

لـلـنصّ على التعميم مع التنصيص بـالتـخصيص على كلّ حقّ شديد عظيم والصريح يفوق الدلالة

1 ......"منح الروض الأزهر شرح الفقه الأكبر"، التوبة وشرائطها، ص١٥٩.

2 .....ऐसे सख़्त बड़े हुक़ूक़ मसलन किसी पर तोहमते बद लगाना वग़ैरा।

3 .....या'नी मुत्तलअ़ होने के बा'द साहिबे हक़ से उस की मुआफ़ी की उम्मीद बईद है।

www.dawateislami.net

बारे में फ़र्ज़ कर के मुआ़फ़ कर दे और तस्रीह़ दलालत पर फ़ौक़िय्यत रखती है जैसे कि उ़लमा ने बहुत से मसाइल में तस्रीह़ की है। (ت) واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم

كما نصّوا عليه [1] في غير ما مسألة، واللّٰه سبحانه وتعالى أعلم.

मस्अला : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि बा'दे हुक़ूक़े वालिदैन के उस्ताद के हुक़ूक़ किस क़दर हैं जिस उस्ताद ने कुछ उ़लूमे दीनी और दुन्यवी की ता'लीम ह़ासिल की हो और इन उ़लूम के फ़ैज़ान से मनाफ़ेए़ दुन्यावी उस को व नीज़ दीनी ह़ासिल हुवे हों ऐसे उस्ताद के कुछ हुक़ूक़ अज़ रूए **आयए शरीफ़ा व ह़दीसे सह़ीह़ से**[2] बयान फ़रमाइयेगा, بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا

अल जवाब

''आ़लमगीरी'' में व नीज़ इमाम ह़ाफ़िज़ुद्दीन कुरदरी से है :

या'नी फ़रमाया इमाम ज़न्दवैसती ने : आ़लिम का ह़क़ जाहिल और उस्ताद का शागिर्द पर यक्सां है और वोह येह कि उस से पहले बात न करे और उस के बैठने की जगह उस की ग़ैबत (अ़द्मे मौजूदगी) में भी न बैठे और चलने में उस से आगे न बढ़े।

قال الزندويستي: حقّ العالم على الجاهل وحقّ الأستاذ على التلميذ واحد على السواء وهو أن لا يفتتح بالكلام قبله ولا يجلس مكانه وإن غاب ولا يرد على كلامه ولا يتقدّم عليه في مشيه [3]۔

---

1 ....."الدرّ"، كتاب النكاح، باب المهر، ج٤، ص٢٨٤.

2 .....आयते शरीफ़ा और सह़ीह़ ह़दीस के मुत़ाबिक़।

3 ....."الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثلاثون في المتفرّقات، ج٥، ص٣٧٣.

www.dawateislami.net

इसी में "ग़राइब" से है :

ينبغي للرجل أن يراعي حقوق أستاذه وآدابه لا يضن بشيء من ماله[1]۔

आदमी को चाहिये कि अपने उस्ताज़ के हुक़ूक़ व आदाब का लिहाज़ रखे अपने माल में किसी चीज़ से उस के साथ बुख़्ल न करे,

या'नी जो कुछ उसे दरकार हो ब ख़ुशी ख़ातिर (ख़ुशदिली से) हाज़िर करे और उस के क़बूल कर लेने में उस का एहसान और अपनी सआदत जाने।

इसी में "तातार ख़ानिय्या" से है :

يقدّم حقّ معلّمه على حقّ أبويه وسائر المسلمين ويتواضع لمن علّمه خيراً ولو حرفاً ولا ينبغي أن يخذله ولا يستأثر عليه أحداً فإن فعل ذلك فقد فصم عروة من عرى الإسلام، ومن إجلاله أن لا يقرع بابه بل ينتظر خروجه[2] اهـ مختصر.

या'नी उस्ताद के हक़ को अपने मां-बाप और तमाम मुसलमानों के हक़ से मुक़द्दम रखे और जिस ने इसे अच्छा इल्म सिखाया अगर्चे एक ही हर्फ़ पढ़ाया हो उस के लिये **तवाज़ोअ़ करे**[3] और लाइक़ नहीं कि किसी वक़्त उस की मदद से बाज़ रहे, अपने उस्ताद पर किसी को तरजीह न दे, अगर ऐसा करेगा तो उस ने इस्लाम की रस्सियों से एक रस्सी खोल दी, उस्ताज़ की ता'ज़ीम से है कि वोह अन्दर हो और येह हाज़िर हो तो उस के दरवाज़े पर हाथ न मारे बल्कि उस के बाहर आने का इन्तिज़ार करे اھ मुख़्तसरन।

1 ....."الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثلاثون في المتفرّقات، ج٥، ص٣٧٨.

2 .....المرجع السابق، ص٣٧٨-٣٧٩.

3 .....आजिज़ी करे।

www.dawateislami.net

قال الله تعالى (अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया) :

﴿ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ﴾ (1)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।"*

आ़लिमे दीन हर मुसलमान के ह़क़ में उ़मूमन और उस्तादे इ़ल्मे दीन अपने शागिर्द के ह़क़ में ख़ुसूसन नाइबे हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है, हां ! अगर किसी ख़िलाफ़े शरअ़ बात का हुक्म दे हरगिज़ न करे।

لَا طَاعَةَ لِأَحَدٍ فِي مَعْصِيَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى (2)۔ अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त नहीं है। (ت)

मगर इस न मानने में गुस्ताख़ी व बे अदबी से पेश न आए فإنّ المنكر لا يزال بمنكر (क्यूंकि ना पसन्दीदा चीज़ ना पसन्द अ़मल से ज़ाइल नहीं होती। ت) ना फ़रमानी अह़काम का जवाब उसी तक़रीर से वाज़ेह़ हो गया उस का वोह हुक्म कि ख़िलाफ़े शरअ़ हो **मुस्तसना**(3) किया

---

1 ......پ٢٦، الحجرات: ٤، ٥.

2 ......"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢٠٦٧٩، ج٧، ص٣٦٤.

3 .....अलग, अ़लाह़िदा।

www.dawateislami.net

जाएगा ब कमाले आ़जिज़ी व ज़ारी मा'ज़ेरत करे और बच्चे, और अगर उस का हुक्म मुबाह़ात में है तो **ह़त्तल वस्अ़**[1] उस की बजा आवरी में अपनी सआ़दत जाने और ना फ़रमानी का हुक्म मा'लूम हो चुका उस ने इस्लाम की गिरहों से एक गिरह खोल दी। उ़लमा फ़रमाते हैं जिस से उस के उस्ताद को किसी त़रह़ की ईज़ा पहुंचे वोह इल्म की बरकत से मह़रूम रहेगा और अगर उस के अह़काम वाजिबाते शरइय्या हैं जब तो ज़ाहिर है कि **इन का लुज़ूम**[2] और ज़ियादा हो गया इन में उस की ना फ़रमानी **सरीह़ राहे जहन्नम**[3] है, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ، وَاللّٰهُ تَعَالٰى أَعْلَمُ।

मस्अला : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि पंजाब के ज़िल्अ़ हज़ारा में रिवाज है कि अहले इल्म व तक़्वा को इमामत के लिये मुक़र्रर करते हैं वोह मस्जिद में रहते हैं अज़ान कहते हैं इमामत कराते हैं और जो त़ालिबे इल्म आए उसे क़ुरआने मजीद और दीनी उ़लूम पढ़ाते हैं, चूंकि वोह अपनी ज़रूरिय्यात पूरा करने की त़रफ़ तवज्जोह नहीं दे सकते इस लिये लोग उन की ज़रूरिय्यात पूरा

مسئلہ: چہ می فرمایند علمائے دین اندریں مسئلہ کہ درضلع ہزارہ از اضلاع پنجاب دستور آں چنانست کہ اہل علم وتقوٰی را در مساجد بہ امامت معین می کنند کہ ہمہ بمسجد نشینند واذان گویند وامامت نمایند وہر کہ از طلبۂ علم آید اورا درس قرآن عظیم وعلوم دینیہ دہند

1.....जहां तक मुमकिन हो सके।
2.....या'नी इन का पुख़्ता होना।
3.....वाज़ेह़ त़ौर पर जहन्नम का रास्ता।

www.dawateislami.net

وچوں ایشاں را از اشتغال بحوائج خود ها باز می دارند لاجرم تکفل معیشت آناں می کنند وحسب مقدور هدایا ونذور بخدمت ایشاں می گزارند وهم بریں معمول مردے شریف النسب کبیر السن عالم دین وورع متقی که از نسلِ پاك حضرات سادات ست بمسجدے از زمانه دراز مقرر وکارهائے مذکوره بحسن انتظام انجام میدارد وطلبه را قرآن وفقه می آموخت مردے از قوم گوجر که دریں دیار از اراذل واجلاف معدود شوند پیشهٔ آبائی ترك گرفته راه تعلم پیش گرفت وبریں سید قرآن خواند و"کنز" و"قدوری" وغیرهما کتب دینیه نیز باز

करने का ज़िम्मा ले लेते हैं और ह़स्बे तौफ़ीक़ हदिये और नज़राने उन की ख़िदमत में पेश करते हैं इसी त़रीक़े पर एक शख़्स शरीफ़ुन्नसब, उ़म्र रसीदा, आ़लिमे दीन, मुत्तक़ी, परहेज़गार जो सादात की नस्ले पाक से है मुद्दत से एक मस्जिद में मुक़र्रर था और मज़कूरए बाला काम अच्छी त़रह़ अदा करता था त़लबा को "क़ुरआने मजीद" और फ़िक़्ह पढ़ाता था गूजर क़ौम के एक आदमी ने कि जिन्हें यहां ह़क़ीर व कमज़ात समझा जाता है अपना आबाई पेशा तर्क कर के इ़ल्म ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दिया और इन्ही सय्यिद साह़िब से "क़ुरआने मजीद", "कन्ज़" और "क़दूरी" वग़ैरहुमा दीनी कुतुब पढ़ीं फिर उसे फ़लसफ़े का जुनून सुवार हुवा तो कुछ लोगों से त़बइ़यात व इलाहिय्यात का एक ह़िस्सा पढ़ा जैसे कि हिन्दुस्तान के मदारिस का त़रीक़ा है और अपने आप को बहुत बड़ा आ़लिम समझना शुरूअ़ कर दिया और जिस

www.dawateislami.net

هوائے فلسفہ درسرش جنبید
وبربعضے مردماں چیزے
ازطبعیات والٰہیات آناں آنچناں
کہ مقرر درس ہندیان ست
خواند وخود را عالم کبیر
گرفت وباوستاد اول کہ
معلم علم دین بود
بسر کشی برآمد وازطمع
ادراد معلوم کہ نصیب ائمہ
می شود بروے ثابت شود از
منصب امامت برآوردن وخود
بجائے اوقیام کردن
خواست وبربنائے حرفے چند
کہ از علوم فلسفیہ آموختہ
است خود را برآں فقیہ فضل
نہاد واولٰی تربامامت او نمود
حالانکہ زنہار نہ درعلم دین
ہمسنگ اوبود نہ دروزع
وتقوٰی ہمرنگ او حتی کہ از
حق اوستادیش منکر شد

उस्ताज़ ने उसे इल्मे दीन पढ़ाया था उस का मुक़ाबला शुरूअ़ कर दिया था और आमदनी के लालच में जो कि अइम्मए किराम को दी जाती है, उस्ताज़ को बर त़रफ़ करवा कर ख़ुद उस की जगह मुक़र्रर होने की कोशिश शुरूअ़ कर दी और फ़लसफ़े के चन्द मसाइल पढ़ लेने की वज्ह से उस फ़क़ीह पर अपनी फ़ज़ीलत बघारने लगा और अपने आप को इमामत का ज़ियादा ह़क़दार दिखाने लगा ह़ालांकि न इल्मे दीन में उस के बराबर है न तक़्वा व परहेज़गारी में ह़त्ता कि उस के ह़क़्क़े उस्ताज़ी का इन्कार कर दिया और इब्तिदा में "क़ुरआने मजीद" वग़ैरा पढ़ने को कुछ अहम्मिय्यत न दी और न ही इस बिना पर उस के ह़क़्क़े उस्ताज़ी को तस्लीम किया, आया ऐसा शख़्स इमामत के लाइक़ है या नहीं ? और अगर इमामत के लाइक़ है तो इमामत के लिये ज़ियादा बेहतर वोह सय्यिद साहिब हैं या येह शख़्स ? बहर ह़ाल क्या येह जाइज़ है कि उस

www.dawateislami.net

मुअ़म्मर शरीफ़ फ़क़ीह और मुत्तक़ी (सय्यिद) को बिला वज्ह इमामत से हटा दें और उस की जगह इस शख़्स को मुक़र्रर कर दें, और येह वाज़ेह़ है कि उस अ़लाक़े में जिस त़रह़ किसी को इमामत के लिये मुक़र्रर करने में उस की इ़ज़्ज़त है इसी त़रह़ उसे इमामत से बर त़रफ़ करने में उस की तौहीन और बे इ़ज़्ज़ती है अगर कोई शख़्स बहकाने पर उस काम के दरपे हो जाए तो शरअ़न गुनहगार और मुजरिम होगा या नहीं ? बयान फ़रमाएं और अल्लाह तआ़ला से अज्र पाएं। (ت)

ودر ابتدای امر قرآن وغیرہ
آموختن را وقعی نہ نہاد
وموجب حقوق اوستادی
ندانست آیا ایں چنیں کس
سزائے امامت است یانہ،
واگر باشد پس اولیٰ بامامت
آں سید ست یا ایں کس
وبہرحال آیا روا باشد کہ آں پیر
فقیہ، شریف، متقی رابے قصور
از منصب امامت بر اندازند
وایں کس رابجایش مقرر
سازند ومعلوم ست کہ درپس
اضلاع آنچنانکہ منصب امامت
موجب اعزاز وکرامت ست
ہمچناں درمعزولی ازاں
تذلیل واہانت ست اگر کسے
برغلانیدن متصدی ایں
کارشد شرعاً خاطی وآثم
بود یا نہ؟ بَیِّنُوا تُؤْجَرُوْا.

www.dawateislami.net

अल जवाब

الجواب: اللّٰھم ھدایة الحق والصواب ہر کرا در کوچۂ علم گزرے وبر فقہ وحدیث نظرے ست روشن تر از سپیدۂ صبح می داند کہ آنکس بایں حرکات خودش دادِ ناحفاظیہا داد وبوجوہ چند درچند قدم از دائرۂ شرع بیرون نہاد۔ ویکے ناسپاسی اوستاد کہ بلائیست ہائل ودائیست قاتل وبرکات علم رامزیل ومبطل العیاذ باللّٰہ سبحانہ وتعالی۔ سید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم فرمودہ است: ((لَا یَشْکُرُ اللّٰہَ مَنْ لَا یَشْکُرُ النَّاسَ))(1) خدائے را شکر نہ کند آنکہ مردماں راسپاس نیارد أخرجه أبو داود والترمذي وصحّحه عن أبي هريرة رضي اللّٰه تعالى عنه.

ऐ **अल्लाह** ! हमें हक़ और दुरुस्त रास्ते पर चला, जिसे कूचए इल्म में गुज़र और फ़िक़्ह व हदीस पर नज़र है वोह सुब्ह की सफ़ेदी से भी ज़ियादा वाज़ेह तौर पर जानता है कि उस शख़्स ने अपनी इन हरकतों से नालाइक़ी का हक़ अदा कर दिया है और कई वुजूह की बिना पर शरीअ़त के दाइरे से क़दम बाहर रख चुका है,

अव्वल : उस्ताज़ की ना शुक्री जो कि ख़ौफ़नाक बला और तबाह कुन बीमारी है और इल्म की बरकतों को ख़त्म करने वाली (ख़ुदा की पनाह) । दो जहान के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : "वोह आदमी **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र बजा नहीं लाता जो लोगों का शुक्रिय्या अदा नहीं करता ।" इसे अबू दावूद व तिरमिज़ी ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया और तिरमिज़ी ने इसे सहीह कहा ।

1 ......"سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في شكر المعروف، الحديث: ٤٨١١، ج٤، ص٣٣٥، و"سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، باب ما جاء في الشكر... إلخ، الحديث: ١٩٦١، ج٣، ص٣٨٤.

www.dawateislami.net

और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि : "जिस ने लोगों का शुक्रिय्या अदा नहीं किया उस ने اللہ عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं किया।

इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने "मुस्नद" में, इमाम तिरमिज़ी ने "जामेअ़" में, ज़िया ने "अल मुख़्तारह" में सनदे ह़सन के साथ अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से और अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद ने "ज़वाइदुल मुस्नद" में नो'मान बिन बशीर से नक़्ल किया है।

اللہ तआ़ला फ़रमाता है :

बेशक अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और ज़ियादा दूंगा और अगर ना शुक्री करोगे तो बेशक मेरा अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।

وفرموده است صلى الله تعالى عليه وسلم ((مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰهَ)) هر كه مردمان را شكر نه كرد خدائے عزوجل را سپاس نياورد.

أخرجه أحمد في "المسند" والترمذي في "الجامع" والضياء في "المختارة" بسند حسن عن أبي سعيد الخدري رضي الله تعالى عنه وعبد الله بن أحمد في "زوائد المسند" عن النعمان بن بشير رضي الله تعالى عنه[1].

حق عزوجل فرمايد: ﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝﴾[2] هر آئينه اگر سپاس آريد بيشك بيفزايم وبيشتر بخشم شما را واگر ناسپاسى ورزيد پس بدرستيكه عذاب من سخت ست.

---

1 ..... "سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، الحديث: ١٩٦٢، ج٣، ص٣٨٤.

2 ..... پ١٣، إبراهيم: ٧.

www.dawateislami.net

وفرمود جَلَّتْ عَظْمَتُهٗ: ﴿ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴾(1) بدرستیکه خدائے دوست نمی دارد هر بسیار دغل سخت ناسپاس را.

और अ़ज़मत वाले रब ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** दोस्त नहीं रखता बहुत दग़ा बाज़ सख़्त ना शुक्रे को ।

وفرمود عَزَّ شَأْنُهٗ ﴿هَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ﴾(2) ما کرا سزا میدهم.

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : हम किसे सज़ा देते हैं उसी को जो ना शुक्रा है ।

وسرور عالم صلی الله تعالی علیه وسلم فرمود ((مَنْ اُوْلِيَ مَعْرُوْفًا فَلَمْ يَجِدْ لَهٗ جَزَاءً اِلَّا الثَّنَاءَ فَقَدْ شَكَرَهٗ وَمَنْ كَتَمَهٗ فَقَدْ كَفَرَ))(3) هر که باوے احسانے کرده شد واورا عوض نیافت جز آنکه برائے محسن ثنائے نیك نموده پس به تحقیق که سپاس او بجا آورد

सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के साथ नेकी की गई वोह सिवाए ता'रीफ़ के एह़सान करने वाले के लिये कुछ न कर सका तो बेशक उस ने उस का शुक्रिय्या अदा कर दिया और जिस ने इस एह़सान को छुपाया तो बेशक उस ने ने'मत की ना शुक्री की ।" इसे इमाम बुख़ारी ने "अल अदबुल मुफ़रद"

1 ...... پ ۲۱، لقمان: ۱۸.

2 ...... پ ۲۲، سبا: ۱۷.

3 ......"صحیح ابن حبان"، کتاب الزكاة، الحديث: ۳٤۰٦، ج٤، ص ۱۷٥، و"الترغيب والترهيب"، کتاب الصدقات، الحديث: ۲، ج۲، ص ٤٤.

www.dawateislami.net

وھر کہ پوشید پس بدرستیکہ کافر نعمت شد. أخرجه البخاري في "الأدب المفرد" وأبوداود في "السنن" والترمذي في "الجامع" وابن حبان في "التقاسيم والأنواع" والمقدسي في "المختارة" برواة ثقات عن جابر بن عبد اللّٰه رضي اللّٰه تعالی عنهما ولفظ ت: ((مَنْ أُثْنٰى فَقَدْ شَكَرَ وَمَنْ كَتَمَ فَقَدْ كَفَرَ))(1).

और अबू दावूद ने "अस्सुनन", तिरमिज़ी ने "अल जामेअ़" इब्ने ह़ब्बान ने "अत्तक़ासीम वल अन्वाअ़" और मक़्दसी ने "अल मुख़्तारह" में सिक़ह रावियों के साथ जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से नक़्ल किया है, और तिरमिज़ी के अल्फ़ाज़ (येह हैं : (मن أثنى فقد شكر... إلخ) : (या'नी) "जिस ने ता'रीफ़ की उस ने शुक्रिय्या अदा किया और जिस ने छुपाया उस ने ना शुक्री की।"

دوم: انکار حقوقش کہ صریح خرق اجماع مسلمین بلکہ کافۂ عقلا ست وھذا غیر الکفران فإنّه ترك العمل وهذا جحد الأصل كما لا يخفى وتخصیصش بتلمذ ابتدائے سودش ندھد کہ اجماع مطلق است و درحدیث مصطفی صلی اللّٰه تعالی علیه وسلم

दुवुम : उस्ताज़ के हुक़ूक़ का इन्कार जो कि मुसलमानों बल्कि तमाम अ़क़्ल वालों के इत्तिफ़ाक़ के ख़िलाफ़ है। और येह बात ना शुक्री से जुदा है, क्यूंकि ना शुक्री तो येह है कि एह़सान के बदले कोई नेकी न की जाए और यहां तो अस्ल ही का इन्कार है, जैसा कि मख़्फ़ी नहीं। और येह कहना कि उस्ताज़ ने तो मुझे सिर्फ़ इब्तिदा में पढ़ाया था उस शख़्स के लिये कुछ

(1)......"سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في المتشبع بما لم يعطه، الحديث:٢٠٤١، ج٣،ص٤١٧.

www.dawateislami.net

मुफ़ीद नहीं, क्यूंकि इस बात पर इजमाअ़ है और मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस में है कि : "जिस ने थोड़े एह़सान का शुक्र अदा नहीं किया उस ने ज़ियादा का भी शुक्र नहीं किया।

इस ह़दीस को अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम ने "ज़वाइद" में ऐसी सनद के साथ बयान किया जिस में कोई ह़रज नहीं और बैहक़ी ने "सुनन" में नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत किया और ह़दीस का ततिम्मा है जो बैहक़ी के नज़दीक अतम है और इस को इब्ने अबिद्दुन्या ने "इस्ति़नाअ़ अल मा'रूफ़" में मुख़्तसरन ज़िक्र किया।

آمده ((مَنْ لَمْ يَشْكُرِ الْقَلِيْلَ لَمْ يَشْكُرِ الْكَثِيْرَ)) [1] هر كه اندك راشكر نكند بسيار راسپاس نيارد.

أخرجه عبد الله بن الإمام في "الزوائد" بإسناد لابأس به والبيهقي في "السنن" عن النعمان بن بشير رضي الله تعالى عنه وللحديث تتمة وهو عند البيهقي أتمّ وأورده ابن أبي الدنيا في "اصطناع المعروف" مختصراً.

सिवुम : येह कि उस ने नेकी को ह़क़ीर जाना और इब्तिदाई ता'लीम के एह़सान की कुछ क़दर न की और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हरगिज़ किसी भी नेकी को मा'मूली

سوم: آنكه اين تحقير نكوئى واحسان است كه تعليم ابتدائى رابجو نسنجيد. ومصطفٰى صلى الله تعالٰى عليه وسلم

1 ..... "الترغيب والترهيب"، كتاب الصدقات، الحديث: ٨، ج٢، ص٤٦،
"شعب الإيمان"، الحديث: ٩١١٩، ج٦، ص٥١٦،
و"المسند"، مسند الكوفيين، الحديث: ١٨٤٧٦، ج٦، ص٣٩٤.

www.dawateislami.net

न समझ अगर्चे इतनी नेकी हो कि तू अपने भाई से मुस्कुरा कर मिले।" इसे इमाम मुस्लिम ने अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया।

فرمود ((لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ شَيْئاً وَلَوْ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلِيْقٍ))[1] زنهار هيچ نكوئى راخوار مپندار اگرچه اين قدر كه برادر خود را بروئى كشاده پيش آئى. أخرجه مسلم عن أبي ذر رضي الله تعالى عنه.

और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया :

"ऐ मुसलमान औ़रतो ! कोई औ़रत भी अपनी पड़ोसन को ह़क़ीर न समझे या'नी उस के हदिय्ये व सदक़े को अगर्चे बकरी का सुम (खुर) ही हो।"

وفرمود صلى الله تعالى عليه وسلم ((يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لَا تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ))[2] اے زنان مسلمانان هرگز خورد وخوارنه پندارد هيچ زن زن همسايه خودرا يعنى هديه وتصدق اگرچه سُمِ گوسپند باشد.

इसे इमाम बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया।

أخرجه الشيخان عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.

---

1 ....."صحيح مسلم"، كتاب البرّ والصلة والآداب، الحديث: ٢٦٢٦، ص١٤١٣.

2 ....."صحيح البخاري"، كتاب الهبة وفضلها والتخريض عليها، باب الهبة وفضلها... إلخ، الحديث: ٢٥٦٦، ج٢، ص١٦٥.

www.dawateislami.net

ودرحدیث دیگر آمده ((وَلَوْ بِظِلْفٍ مُحْرَقٍ))[1] اگرچه سمِ سوخته بود.

और एक ह़दीस में है : "अगर्चे खुर जला हुवा ही हो।"

وتخصیص زنان از بہر آن ست کہ سخط وکفران در طبع ایشاں بیشتر از مردمان ست.

औ़रतों को ख़ास त़ौर पर इस लिये फ़रमाया कि ना पसन्दीदगी और ना शुक्री में औ़रतें मर्दों से बढ़ कर होती हैं।

سبحان اللّٰہ مگر درا بتدائے کار تعلیم نصوح وتربیت روح کمتر وحقیر تر از سمِ سوختۂ گوسپند ست کہ اوراوقع ندارند وحقے نہ شمارند.

سُبْحٰنَ اللّٰه लेकिन उस शख़्स ने पुर ख़ुलूस इब्तिदाई ता'लीम और रूह़ की परवरिश को जले हुवे खुर से भी ह़क़ीर और कम मर्तबा जाना कि उसे कुछ अहम्मिय्यत ही नहीं देता और न ही उस का कोई ह़क़ बजा लाता है।

چہارم: آنکہ ایں تحقیر راجعست والعیاذ باللّٰہ تعالی بسوئے تحقیر قرآن ومختصرات فقہ کہ ہر کہ اینہا آموخت گویا ہیچ نیاموخت العظمۃ للّٰہ اگر کار بالتزام کشیدی خود کفر قطعی بودے حالانکہ

चहारुम : उस्ताज़ की इब्तिदाई ता'लीम को ह़क़ीर जानना (ख़ुदा की पनाह) "क़ुरआने मजीद" और फ़िक़्ह की मुख़्तसर किताबों की बे अदबी की त़रफ़ ले जाता है गोया कि जिस ने इन्हें पढ़ा उस ने कुछ भी नहीं पढ़ा, सब बड़ाई **अल्लाह** ही के लिये है, अगर वोह शख़्स इसे लाज़िम पकड़ता तो मुआ़मला

[1] ....."المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢٧٥٢٠، ج١٠، ص٤٠٧.

www.dawateislami.net

نہ ازاں کہ حرام اشد وخبث ابعد باشد نسأل اللّٰہ العفو والعافیة.

यक़ीनन कुफ़्र की ह़द तक पहुंच जाता अब भी येह बात शदीद ह़राम और बद तरीन ख़बीस है, हम **अल्लाह** तआ़ला से अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत त़लब करते हैं।

علماء فرمودہ اند مردے صالح پسرش رامعلمی بمعلومے معین کرد همیں کہ فرزند سورۂ فاتحہ آموخت پدر چارهزار دینار بشکر فرستاد معلم گفت هنوز چہ دیدہ اند کہ اینها بخشیدہ اند پدر گفت زیں باز پسرم را معلم نباشی کہ عظمت قرآن دردل نداری، والعیاذ باللّٰه سبحانه وتعالی.

उ़लमा फ़रमाते हैं एक नेक आदमी ने अपने लड़के को एक उस्ताद के सिपुर्द किया अभी लड़के ने सूरए फ़ातिह़ा ही पढ़ी थी कि बाप ने चार हज़ार दीनार शुक्रिय्या के त़ौर पर भेजे, उस्ताद ने कहा : अभी आप ने क्या देखा है कि इतनी मेहरबानी फ़रमाई, बाप ने कहा : इस के बा'द मेरे लड़के को हरगिज़ न पढ़ाना कि तुम्हारे दिल में "क़ुरआने मजीद" की इ़ज़्ज़त ही नहीं है। **अल्लाह** की पनाह जो पाक व बुलन्दो बाला है।

پنجم: آنکہ باستاد بمقابلہ بر آمد وایںهم زائد ناسپاسی ست زیرا کہ اوترك شکرست وایں اتیان خلاف "ألا ترى أنّ من لم يذكر النعمة فقد كفرها كما أثبتنا

पन्जुम : येह कि उस्ताज़ का मुक़ाबला करना येह भी ना शुक्री से ज़ाइद है, क्यूंकि ना शुक्री तो येह है कि शुक्र न किया जाए और मुक़ाबले की सूरत में बजाए शुक्र के उस की मुख़ालफ़त भी है देखिये जो शख़्स एह़सान को पेशे नज़र नहीं रखता

www.dawateislami.net

उस ने एह्सान की ना शुक्री की है जैसे कि हम ने अहादीस से साबित किया और जिस ने एह्सान के बदले बुराई की उस ने तो ना शुक्री से भी बड़ा गुनाह किया और येह इसी त़रह है कि जैसे बाप की ना फ़रमानी की जाए, क्यूंकि उस्ताज़ को बाप के बराबर शुमार किया गया है, इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारे लिये बाप की हैसिय्यत रखता हूं मैं तुम्हें इ़ल्म सिखाता हूं।" इसे अह़मद, दारिमी, अबू दावूद, निसाई, इब्ने माजा और इब्ने ह़ब्बान ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

بالأحاديث ومن قابلها بإساءة فقد زاد" وایں دررنگ عقوق باپدرست چراکہ اوستاد را درورزانِ پدر نہادہ اند لہٰذا مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود ((إنَّمَا أنَا لَكُمْ بِمَنْزِلَةِ الْوَالِدِ أُعَلِّمُكُمْ))(1) ہمیں ست کہ من شما را بجائے پدرم علم می آموزم شما را

أخرجه أحمد والدارمي وأبوداود والنسائي وابن ماجة وابن حبان عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.

बल्कि उ़लमा फ़रमाते हैं कि उस्ताज़ के हक़ को वालिदैन के हक़ पर मुक़द्दम रखना चाहिये क्यूंकि वालिदैन के ज़रीए बदन की ज़िन्दगी है और उस्ताज़ रूह की ज़िन्दगी का सबब है।

بلکہ علماء گفتہ اند حق اوستاد را بر حق والدین مقدم دارد کہ ازایشاں حیات ابدان ست وایں سبب حیات روح ست.

---

(1)......"سنن أبي داود"، كتاب الطهارة، الحديث: ٨، ج١، ص٣٧.

www.dawateislami.net

“ऐनुल इल्म” में है : वालिदैन के साथ नेकी करनी चाहिये क्यूंकि उन की ना फ़रमानी बहुत बड़ा गुनाह है और उस्ताज़ के हक़ को वालिदैन के हक़ पर मुक़द्दम रखना चाहिये क्यूंकि वोह रूह की ज़िन्दगी का ज़रीआ है। (मुलख़्ख़सन)

في ”عين العلم“: يبر الوالدين فالعقوق من الكبائر يقدم حق المعلم على حقهما فهو سبب حياة الروح اھ ملخصاً.

अ़ल्लामा मनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه “जामेए सग़ीर” की शर्ह “तैसीर” में नक़्ल फ़रमाते हैं कि “जो शख़्स लोगों को इल्म सिखाए वोह बेहतरीन बाप है, क्यूंकि वोह बदन का नहीं रूह का बाप है।”

علامه مناوی رحمه اللّٰه تعالٰی در ”تیسیر شرح جامع صغیر“ می آرد:

مَنْ عَلَّمَ النَّاسَ ذَاكَ خَيْرُ أَبٍ
ذَاكَ أَبُو الرُّوحِ لَا أَبُو النُّطَفِ[1]

और ज़ाहिर है कि ना फ़रमानी की शामत कहां से कहां तक है, हत्ता कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे शिर्क के साथ ज़िक्र किया और बद तरीन कबीरा गुनाह ख़याल फ़रमाया। बुख़ारी, मुस्लिम और तिरमिज़ी ने अबू बकरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें सब से बड़ा

وخود پیداست که شامت عقوق از کجا تا کجاست تا آنکه مصطفیٰ صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم اورا در جنب اشراك باللّٰه داشت واز سخت ترین کبائر انگاشت فقد أخرج الشيخان والترمذي عن أبي بكرة رضي اللّٰه تعالى عنه

1 ......”التيسير“، حرف الهمزة، تحت الحديث: ٢٥٨٠، ج٢، ص٤٥٤.

www.dawateislami.net

गुनाह न बताऊं ? येह बात आप ने तीन दफ़्आ़ इरशाद फ़रमाई, सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : फ़रमाइये या रसूलल्लाह, आप ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना" और अगर इस क़िस्म की ह़दीसें गिनना शुरूअ़ कर दी जाएं तो इन के लिये दफ़्तर दरकार होगा।

शशुम : येह इसी त़रह़ है जिस त़रह़ एक ग़ुलाम अपने आक़ा से भाग जाए, त़बरानी ने ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने किसी आदमी को "क़ुरआने मजीद" की एक आयत पढ़ाई वोह उस का आक़ा है।"

قال قال رسول اللّٰه صلى اللّٰه تعالى عليه وسلم: ((أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ)) ثَلَاثًا، قُلْنَا: بَلَى يَارَسُوْلَ اللّٰه، قَالَ: ((اَلْإِشْرَاكُ بِاللّٰهِ وَعُقُوْقُ الْوَالِدَيْنِ)) [1] الحديث. وخود اگر احاديث ايں باب شمردن گيريم دفترى بايست املا كرد.

ششم: آنكه ايں معنى باباق غلام از آقائے خود ماناست طبرانى از ابوامامه رضى اللّٰه تعالى عنه روايت دارد كه مولائے عالم صلى اللّٰه تعالى عليه وسلم فرمود: مَنْ عَلَّمَ عَبْداً آيَةً مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالَى فَهُوَ مَوْلَاهُ [2] هر كه بنده را آيتے از كتاب عزوجل آموخت آقائے او شد.

---

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الشهادات، الحديث: ٢٦٥٤، ج٢، ص١٩٤.

"صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب الكبائر وأكبرها، الحديث: ١٤٣، ص٥٩.

2 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٧٥٢٨، ج٨، ص١١٢.

www.dawateislami.net

और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है आप फ़रमाते हैं : जिस ने मुझे एक ह़र्फ़ सिखाया पस तह़क़ीक़ उस ने मुझे अपना ग़ुलाम बना लिया अगर चाहे तो बेच दे और चाहे तो आज़ाद कर दे ।

واز امیر المؤمنین سیدنا علی مرتضی کرم اللّٰہ تعالٰی وجہہ الکریم می آرند کہ فرمود ((مَنْ عَلَّمَنِيْ حَرْفاً فَقَدْ صَيَّرَنِيْ عَبْداً إِنْ شَاءَ بَاعَ وَإِنْ شَاءَ أَعْتَقَ)) ہر کہ مرا حرفے آموخت پس بہ تحقیق مرا بندہ خود ساخت اگر خواہد فروشد واگر خواہد آزاد کند،

इमाम शम्सुद्दीन सख़ावी "मक़ासिदे ह़सना" में ह़दीस के अमीरुल मोमिनीन शा'बा बिन ह़ज्जाज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : जिस से मैं ने चार या पांच ह़दीसें लिखीं मैं उस का ता ह़यात ग़ुलाम हूं ।

وامام شمس الدین سخاوی در "مقاصد حسنہ" از امیر المؤمنین فی الحدیث شعبہ بن الحجاج رحمہ اللّٰہ تعالٰی می آرد کہ گفت ((مَنْ كَتَبْتُ عَنْهُ أَرْبَعَةَ أَحَادِيْثٍ أَوْ خَمْسَةٍ فَأَنَا عَبْدُهُ حَتّٰى أَمُوْتُ)) [1] ہر کہ از وے چار یا پنج حدیث نوشتم بندہ اش شدم تا آنکہ بمیرم. بلکہ در لفظ دگر گفت ((مَا كَتَبْتُ عَنْ

बल्कि दीगर लफ़्ज़ों में यूं फ़रमाया कि : जिस से मैं ने एक ह़दीस लिखी मैं उस का उ़म्र भर ग़ुलाम रहूंगा ।

1 ..... "المقاصد الحسنة"، حرف الميم، تحت الحديث: ١١٥٥، ص٤٢٨.

www.dawateislami.net

أَحَدٍ حَدِيْثاً إِلّاَ وَكُنْتُ لَهُ عَبْداً مَّا حَيِّي))[1] يعنى از هر كه يك حديث نوشته ام مدة العمر او را بنده ام.
وايں احاديث وروايات آں زعم باطل را نيز از بيخ برمى كند كه تعليم ابتدائى را قدرے ندانست.

येह ह़दीसें और रिवायतें उस बाति़ल ख़याल को जड़ से उखेड़ देती हैं कि इब्तिदाई ता'लीम की क्या क़द्र है !

وخود معلوم ست كه اباق از مولى كبيره ايست عظمى تا آنكه سيد عالم صلى الله تعالىٰ عليه وسلم آبق را كافر گفته است كما رواه مسلم عن جرير بن عبد الله البجلي رضي الله تعالى عنه[2] ونا پذيرا شدن نمازش دراحاديث كثيره وارد ست كحديث "مسلم" عنه[3] وحديث

और वाज़ेह़ है कि आक़ा से भाग जाना बहुत बड़ा गुनाह है ह़त्ता कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भागने वाले ग़ुलाम को काफ़िर फ़रमाया है जैसे कि इमाम मुस्लिम ने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया है और भागने वाले ग़ुलाम की नमाज़ों का ना मक़्बूल होना बहुत सी ह़दीसों में वारिद है जैसे कि इमाम मुस्लिम ने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह से, इमाम तिरमिज़ी ने अबू

1 ......"المقاصد الحسنة"، حرف الميم، تحت الحديث: ١١٥٥، ص٤٢٨.

2 ......"صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، الحديث:١٢٢، ص٥٣.

3 ......المرجع السابق، الحديث: ١٢٤، ص٥٤.

www.dawateislami.net

उमामा से, त़बरानी, इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़ब्बान ने ह़ज़रते जाबिर से, ह़ाकिम, "मो'जमे औसत़" और "मो'जमे सग़ीर" ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के ज़रीए नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत किया, तमाम रिवायात के नक़्ल करने से त़वालत पैदा होगी।

"الترمذي" عن أبي أمامة وحديث "الطبراني" و"ابني خزيمة" و"حبان" عن جابر وحديث "الحاكم" و"المعجمين الأوسط والصغير" عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهم كلّهم عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم والسرد يطول.

हफ़्तुम : येह कि अपने आप को उस्ताज़ से अफ़्ज़ल क़रार देता है और येह ख़िलाफ़े मामूर है त़बरानी ने "औसत़" में और इब्ने अ़दी ने "कामिल" में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत किया कि : "इ़ल्म सीखो और इ़ल्म के लिये अदबो एह़तिराम सीखो, जिस उस्ताद ने तुझे इ़ल्म सिखाया है उस के सामने आ़जिज़ी और इन्किसारी इख़्तियार करो ।" अ़क़्लमन्द और सआ़दत मन्द अगर उस्ताज़ से बढ़ भी जाएं तो इसे उस्ताज़

هفتم: خود را بر اوستاد فضل می نهد واین خلاف ماموراست أخرج الطبراني في "الأوسط" وابن عدي في "الكامل" عن أبي هريرة عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم: ((تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَتَعَلَّمُوا لِلْعِلْمِ السَّكِيْنَةَ وَالْوَقَارَ وَتَوَاضَعُوْا لِمَنْ تَعَلَّمُوْنَ مِنْهُ))[1] علم آموزید وبہر علم سکون ومهابت آموزید وپیش اوستاد کہ شما را تعلیم کردہ است تواضع وفروتنی ورزید بخردان سعادتمند

---

[1] ......"المعجم الأوسط"، من اسمه محمد، الحديث: ٦١٨٤، ج٤، ص٣٤٢.

www.dawateislami.net

اگر بر اوستاد چربانند هم
از برکت وفیض اوستاد دانند
وبیشتر از پیشتر بر روئے بر خاك
پایش مالند،

का फ़ैज़ और उस की बरकत समझते हैं और पहले से भी ज़ियादा उस्ताज़ के पाउं की मिट्टी चेहरे पर मलते हैं।

ع کاخر ای بادصبا ایں همه آوردهٔ تست

ع आख़िर ऐ बादे सबा ! येह सब तेरा ही एह़सान है

وبیخرداں شریر ولوند چوں
سرپنجهٔ توانائی یابند برپدر پیر
بسرهنگی شتابند وسراز خط
فرمانش تابند زود بینی که
چوں به پیری رسند
کیفر کفران از دست خود
چشند کما تدین تدان، وَلَعَذَابُ
الآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى

बे अ़क़्ल और शरीर और ना समझ जब ताक़त व तवानाई ह़ासिल कर लेते हैं तो बूढ़े बाप पर ही ज़ोर आज़माई करते हैं और उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी इख़्तियार करते हैं जल्द नज़र आ जाएगा कि जब खुद बूढ़े होंगे तो अपने किये हुवे की जज़ा चखेंगे, जैसा करोगे वैसा भरोगे और आख़िरत का अ़ज़ाब सख़्त और हमेशा रहने वाला है।

هشتم: آنکه علما فرموده اند
ازحق اوستاد بر شاگرد آنست
که برفراش او نه نشیند اگرچه
اوستاد حاضر نه باشد،

हश्तुम : येह कि उ़लमा फ़रमाते हैं कि उस्ताज़ का शागिर्द पर येह भी ह़क़ है कि उस्ताज़ के बिस्तर पर न बैठे अगर्चे उस्ताज़ मौजूद न हो।

www.dawateislami.net

في "ردّ المحتار حاشية للدرّ المختار" عن "منح الغفار" عن "الفتاوى البزازية" عن الإمام الزندويستي قال: حق العالم على الجاهل وحق الاستاذ على التلميذ واحد على السواء وهو أن لا يفتح الكلام قبله ولا يجلس مكانه وإن غاب ولا يرد عليه كلامه ولا يتقدم عليه في مشيه.[1]

"दुर्रे मुख़्तार" के हाशिये "रद्दुल मुह़तार" में "मिन्हुल ग़फ़्फ़ार" से इन्हों ने "फ़तावा बज़्ज़ाज़िया" से इन्हों ने इमाम ज़न्दवैसती से नक़्ल किया कि : आ़लिम का ह़क़ जाहिल पर और उस्ताज़ का ह़क़ शागिर्द पर बराबर है वोह येह है कि उस से पहले बात न करे और उस की जगह पर न बैठे अगर्चे वोह मौजूद न हो और उस की बात को रद न करे और चलने में उस से आगे न हो।

پس چگونہ روا باشد کہ اوستاد را بزور از منصبش افگنند وخود بجایش برآمدہ لافہا زنند حالانکہ از مجلس تا معاش واز منصب تا فراش فرقے کہ ہست پیدا است.

लिहाज़ा किस त़रह़ जाइज़ होगा कि उस्ताज़ को त़ाक़त के ज़रीए उस के मर्तबे से गिरा कर ख़ुद उस की जगह बैठा जाए और डींगें मारी जाएं ह़ालांकि बैठने की जगह और मआ़श में इसी त़रह़ बिस्तर और मर्तबे में वाज़ेह़ फ़र्क़ है (या'नी जब उस्ताज़ की जगह और उस के बिस्तर पर बैठना नहीं चाहिये तो उस के ज़रीअ़ए मआ़श और मर्तबे को छीनना किस त़रह़ दुरुस्त होगा ?)

---

1 ......"ردّ المحتار"، كتاب الخنثى، مسائل شتّى، ج١٠، ص٥٢٢.

www.dawateislami.net

نہم: ہمچنیں فرمودہ اند کہ تلمیذ را در رفتن وسخن گفتن براوستاد تقدم وسبقت نمی رسد کما سمعت آنفاً پس چساں گوارا آید کہ اورا بالجبر پسترنمایند وخودپیش وبیش گرفتہ برمنصۂ امامت برآیند۔

नहुम : इसी त़रह़ उ़लमा ने येह भी फ़रमाया है कि शागिर्द को बात करने और चलने में उस्ताज़ से आगे नहीं बढ़ना चाहिये जैसे कि अभी गुज़रा, फिर येह किस त़रह़ दुरुस्त होगा कि उस्ताज़ को मजबूर कर के पीछे हटा दिया जाए और खुद मन्सबे इमामत संभाल लिया जाए ?

دہم: آنکہ سیدموصوف گو اوستاد ایں کس مباش اما آخر مسلمانیست وایں کار کہ فلاں خواست بالبداہت موجب ایذائے اوست وایذائے مسلم بے وجہ شرعی حرام قطعی قال اللہ تعالیٰ: ﴿ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴾[1] آنانکہ آزار دہند مردان مومن وزنان مومنہ راب

दहुम : येह कि सय्यिद मौसूफ़ अगर्चे उस शख़्स के उस्ताज़ न हों आख़िर मुसलमान तो हैं और येह काम जो उस शख़्स ने इख़्तियार किया है वाज़ेह़ है इस में सय्यिद साह़िब की तक्लीफ़ है और मुसलमान को बिग़ैर किसी शरई वज्ह के तक्लीफ़ देना क़त़ई ह़राम है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : "और वोह लोग जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं बेशक उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया ।"

[1] ......پ ۲۲، الأحزاب: ۵۸.

www.dawateislami.net

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

"जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने अल्लाह तआ़ला को तक्लीफ़ दी।"

या'नी जिस ने अल्लाह तआ़ला को तक्लीफ़ दी बिल आख़िर अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार फ़रमाएगा।

इसे त़बरानी ने "औसत़" में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से ब सनदे ह़सन रिवायत किया।

और इमामे अजल्ल राफ़ेई ने सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत की मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"वोह शख़्स हमारे गुरौह में से नहीं है जो मुसलमान को धोका दे

جرم پس بہ تحقیق کہ بہتان وگناہ آشکارا برخود برداشتند، سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماید: ((مَنْ آذَى مُسْلِمًا فَقَدْ آذَانِيْ وَمَنْ آذَانِيْ فَقَدْ آذَى اللّٰهَ))[1] ہر کہ مسلمانے را آزار داد مرا اذیت رسانید وہر کہ مرا اذیت رسانید حق تعالیٰ را ایذا کرد، اے وہر کہ سبحانہ را ایذا کرد پس سرانجام ست کہ بگیرد او را

أخرجه الطبراني في "الأوسط" عن أنس رضي الله تعالى عنه بسند حسن.

وامام اجلّ رافعی از سیّدنا علی كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ روایت کرد مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمود: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ غَشَّ مُسْلِمًا أَوْضَرَّهُ أَوْمَاكَرَهَ))[2] از گروہ

1 ....."المعجم الأوسط"، باب السين، الحديث: ٣٦٠٧، ج٢، ص٣٨٧.

2 ....."المقاصد الحسنة"، حرف الميم، تحت الحديث: ١١٥٧، ص٤٢٩، "كنز العمال"، الحديث: ٧٨٢٢، ج٢، ص٢١٨.

www.dawateislami.net

या तक्लीफ़ पहुंचाए या उस के साथ मक्र करे।"

इस बारे में बे शुमार ह़दीसें हैं लेकिन सब अह़ादीस का इह़ाता पेशे नज़र नहीं।

याज़्दहुम : येह कि येह बात उस मुसलमान की बे इज़्ज़ती का सबब है जैसे कि सुवाल करने वाले ने बयान किया और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"जिस शख़्स के सामने किसी मुसलमान की बे इज़्ज़ती की जाए और ताक़त के बा वुजूद उस की इमदाद न करे तो क़ियामत के दिन Allah तआ़ला उसे बर्मला ज़लीलो रुस्वा करेगा।"

इसे इमाम अह़मद ने सहल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से अस्नादे ह़सन के साथ रिवायत किया, सब बड़ाई Allah के लिये है।

مانیست آنکہ بدغابد مسلمانے خواهد یاباوضرر رساند یا باوے بمکرپیش آید واحادیث درپں باب بسیارست بحیث لا مطمع في الاستقصاء.

یازدهم: آنکہ ایں معنی موجب تذلیل آں مسلمان ست کما بیّن السائل.

ومصطفی صلی اللّٰہ تعالٰی علیه وسلم فرمود:

((مَنْ أُذِلَّ عِنْدَهُ مُؤْمِنٌ فَلَمْ يَنْصُرْهُ وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَى أَنْ يَنْصُرَهُ أَذَلَّهُ اللّٰهُ عَلَى رُؤُوْسِ الْأَشْهَادِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)) (1)

یعنی هرکہ پیش اوتذلیل مسلمانے کردہ شود واو باوصف قدرت قیام بنصرت ننماید حق جَلَّ وعَلا اورا روزقیامت برملا ذلیل ورسوا

1 ..... "المسند"، مسند الكوفيين، الحديث: ١٥٩٨٥، ج٥، ص٤١٢، و"المعجم الكبير"، الحديث: ٥٥٥٤، ج٦، ص٧٣.

www.dawateislami.net

अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती को देख कर ख़ामोश रहना ऐसे अ़ज़ाब का बाइ़स है तो ख़ुद उसे ज़लील करने के दरपे होना और जिस मर्तबे की वज्ह से उसे मुसलमानों के नज़दीक इ़ज़्ज़त ह़ासिल हो उस में रख़्ना अन्दाज़ी की कोशिश करना किस क़दर अ़ज़ाब और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का सबब होगा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी पनाह में रखे

दवाज़्दहुम : ह़सद (येह कोशिश करना कि किसी का मर्तबा छिन जाए) की बुराई मोह़ताजे बयान नहीं, इस के लिये सिर्फ़ इतना ही काफ़ी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''आदमी के दिल में ईमान और ह़सद जम्अ़ नहीं होते ।''

فرماید. أخرجه الإمام أحمد عن سهل بن حنيف رضي الله تعالى عنه بإسناد حسن، العظمة لله، چوں سکوت بر تذلیل مسلم باعث چنیں عذاب مولم ست قیاس می باید کرد که خود به تذلیلش پرداختن ودر روجه اعزازی که او را پیش مسلمانان ست بے وجه رخنه انداختن چه قدر موجب عقاب وغضب رب الارباب باشد، والعیاذ بالله.

دوازدهم: آنکه شناعت حسد خود نه چنانست که محتاج بیان ست واگر هیچ نبودے جز آنکه مصطفی صلی الله تعالی علیه وسلم فرموده است ((لَا يَجْتَمِعُ فِي جَوْفِ عَبْدٍ اَلْإِيْمَانُ وَالْحَسَدُ)) [1] بهم نشود دردل

1 ..... "صحيح ابن حبان"، كتاب السير، باب فضل الجهاد، الحديث: ٤٥٨٧، ج٧، ص٦٣، و"شعب الإيمان"، باب في الحثّ... إلخ، الحديث: ٦٦٠٩، ج٥، ص٢٦٧.

www.dawateislami.net

بنده ایمان وحسد أخرجه ابن حبان في صحيحه ومن طريقه البيهقي عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.

इसे इब्ने ह़ब्बान ने अपनी ''सह़ीह़'' में, और इसी सनद से बैहक़ी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया ।

وفرموده است صلى الله تعالى عليه وسلم: ((إِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ، فَإِنَّ الْحَسَدَ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ أَوْ قَالَ: الْعُشْبَ)) [1] دور باشید از حسد که حسد می خورد حسنات را چنانکه میخورد آتش هیزم را یا فرمود گیاه را. أخرجه أبوداود والبيهقي عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه، وابن ماجة وغيره عن أنس رضي الله تعالى عنه ولفظه: ((اَلْحَسَدُ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ))[2]، الحديث.

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ह़सद से दूर रहो, क्यूंकि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग सूखी लकड़ी को, या फ़रमाया : घास को खा जाती है ।''

इसे अबू दावूद और बैहक़ी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से और इब्ने माजा वग़ैरा ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया । और इब्ने माजा के अल्फ़ाज़ येह हैं : ''ह़सद ((الحسد يأكل الحسنات... إلخ)) नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसा कि आग लकड़ी को खा जाती है ।'' अल ह़दीस ।

---

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في الحسد، الحديث: ٤٩٠٣، ج٤، ص٣٦١، "شعب الإيمان"، باب في الحثّ على ترك الغلّ والحسد، الحديث: ٦٦٠٨، ج٥، ص٢٦٦.

2 ..... "سنن ابن ماجه"، كتاب الزهد، باب الحسد، الحديث: ٤٢١٠، ج٤، ص٤٧٣.

www.dawateislami.net

और "मुस्नदुल फ़िरदौस" में मुआ़विय्या बिन हैदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़सद ईमान को इसी त़रह़ तबाह कर देता है जिस त़रह़ सबिर (या'नी ऐलवा) शहद को ।"	ودر"مسند الفردوس" ازمعاویہ بن حیدہ رضی اللہ تعالٰی عنہ مرویست کہ سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود: ((اَلْحَسَدُ یُفْسِدُ الْاِیْمَانَ کَمَا یُفْسِدُ الصَّبِرُ الْعَسَلَ)) (1) حسد تباہ می کند ایمان را چنانکہ تباہ میکند صَبِر شہد را،
सबिर صاد पर फ़त्ह़ा और باء के नीचे कसरा एक दरख़्त का इन्तिहाई कड़वा निचोड़ है फिर ह़सद उसे कहते हैं कि किसी की ने'मत के छिन जाने की आरज़ू की जाए जैसे कि उ़लमा ने ह़सद की ता'रीफ़ की है, फिर किसी की ने'मत को ख़त्म कर के ख़ुद उस की जगह पहुंचने की ख़्वाहिश का वबाल कहां तक होगा ।	وصَبِر بفتح صاد وکسر باء عصارہ درختے ست بہ تلخی معروف باز حسد نیست جز آنکہ از کسے زوال نعمتی خواہند کما عرفہ بذلك العلماء، پس بخودی خود قیام بازالۂ آں نمودن پیداست کہ وبال ونکالش تابکجا رسید نیست۔
सीज़्दहुम : येह कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुसलमानों के साथ बेहद शफ़्क़त है इस के बा वुजूद आप	**سیزدہم:** آنکہ شارع صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بکمال رحمت وعنایتے کہ برحال مسلمانان دارد

(1)......"كنز العمال"، كتاب الأخلاق، الحديث:٧٤٣٧، ج٢، ص١٨٦،
و"كشف الخفاء"، حرف الحاء المهملة، الحديث: ١١٢٩، ج١، ص٣١٧.

www.dawateislami.net

ने इस बात को जाइज़ न रखा कि एक मुसलमान ने किसी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम दे रखा हो तो दूसरा भी दे दे या एक आदमी सौदा कर रहा हो दूसरा भी उसी का सौदा करने लग जाए, इसे इमाम अह़मद, बुख़ारी और मुस्लिम ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई शख़्स अपने भाई के निकाह़ के पैग़ाम पर पैग़ाम न दे और न ही उस की बोली पर बोली लगाए" इस सिलसिले में उ़क़्बा बिन आ़मिर और इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से भी रिवायत है या'नी एक आदमी कोई चीज़ ख़रीद रहा है ख़रीदार और फ़रोख़्त करने वाला दोनों राज़ी हो चुके हैं एक और आदमी ज़ियादा क़ीमत दे कर वोह चीज़ ले जाता है,

روا نداشته است كه خِطبه بر خِطبه مسلمانے كنند يا سوم بر سوم وے نمايند أخرج الأئمة أحمد والشيخان عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه أنّ النبي صلى الله تعالى عليه وسلم قال: ((لَا يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيْهِ وَلَا يَسُوْمُ عَلَى سَوْمِهِ))(1) وفي الباب عن عقبة بن عامر وعن ابن عمر رضي الله تعالى عنهم. يعنى يكے مى خرد وبائع ومشترى بر چيزے تراضى كرده اند ديگرے آيد وبها افزايد وخود ببرد يا يكے مرد زنے را خواستگارى كرده است ورائے بر تزويج قرار بگرفته ديگرے بر خيزد وسببے انگيزد ومخطوبهٔ او را بحبالهٔ خود كشد اين همه ممنوع

(1)......"صحيح البخاري"، كتاب البيوع، باب لا يبيع... إلخ، الحديث: ٢١٤٠، ج٢، ص٢٩، "صحيح مسلم"، كتاب النكاح، الحديث: ١٤٠٨، ص٧٣٢.

www.dawateislami.net

ونا روا ست حالانکہ دریں صورتہا محض قرار داد ست نہ حصول پس چساں حلال باشد کہ بر مسلمانے دست تعدی دراز نمایند وازوے نعمت موجودہ حاصلہ بربایند ایں خود ستم صریح است.

या एक मर्द ने किसी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम दे रखा है और दोनों रिज़ामन्द हो चुके हैं एक और आदमी किसी त़रीक़े से उस औ़रत के साथ निकाह़ कर लेता है येह सब नाजाइज़ और ममनूअ़ है ह़ालांकि इन सूरतों में भी सिर्फ़ बात तै़ हुई थी, कुछ ह़ासिल न हुवा था, जब येह नाजाइज़ है तो येह किस त़रह़ जाइज़ होगा कि किसी को एक ने'मत ह़ासिल हो और उस पर ज़ियादती कर के उस ने'मत को छीन लिया जाए, येह सरासर ज़ुल्म है ।

ومصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود: ((اَلظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))(1) ستم تاریکیہا ست روز قیامت. أخرجه البخاري ومسلم والترمذي عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما، وبسندہ است قول او سبحانہ تعالٰی: ﴿اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ﴾(2)،

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ज़ुल्म क़ियामत के रोज़ कई अन्धेरों के बराबर होगा ।" (बुख़ारी, मुस्लिम और तिरमिज़ी ने इसे इब्ने उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत किया । ت) इस के लिये **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान काफ़ी है : अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की **ला'नत** ।

1 ...... "صحيح البخاري"، كتاب المظالم، الحديث: ٢٤٤٧، ج٢، ص١٢٧.

2 ......پ١٢، هود: ١٨.

www.dawateislami.net

والعياذ باللّٰه تعالى. (और अल्लाह अपनी पनाह में रखे ।)

चहारदहुम : येह कि ख़ास तौर पर येह बुराइयां जिस मुसलमान के साथ की जा रही हैं बूढ़ा और मुअ़म्मर है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह हम में से नहीं जो हमारे बच्चों पर मेहरबानी नहीं करता और हमारे बुज़ुर्गों की इ़ज़्ज़त को नहीं पहचानता ।" (इसे अह़मद, तिरमिज़ी और ह़ाकिम ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से ह़सन सनद बल्कि सह़ीह़ सनद के साथ रिवायत किया है ।)

और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : या'नी वोह शख़्स हमारे त़रीक़े पर नहीं जो बच्चों पर मेहरबानी नहीं करता

چہاردہم: آنکہ ایں مسلمان کہ باوے ایں چنیں بدیہا میرود بالخصوص پیر وکبیر السن ست وسید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيَعْرِفْ شَرَفَ كَبِيْرِنَا))[1]، از ما نیست ہر کہ مہر نکند برخورد ما وبزرگی نشناسد بہر کلان ما، أخرجه أحمد والترمذي والحاكم عن عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص رضي اللّٰه تعالى عنهما بسند حسن بل صحيح.

وفرمود صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَ يُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا))[2] یعنی بر روش

---

1 ...... "سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، الحديث: ١٩٢٧، ج٣، ص٣٦٩، "المسند"، الحديث: ٦٧٤٥، ج٢، ص٦٠٩، "المستدرك"، الحديث: ٢١٦، ج١، ص٢٣٧

2 ...... "سنن الترمذي"، كتاب البرّ والصلة، الحديث: ١٩٢٨، ج٣، ص٣٧٠.
و"المعجم الكبير"، ما أسند ابن عباس، الحديث: ١٢٢٧٦، ج١١، ص٣٥٥.

www.dawateislami.net

और बड़ों की इ़ज़्ज़त नहीं करता।" इसे इमाम अह़मद, तिरमिज़ी और इब्ने ह़ब्बान ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया और इस की सनद ह़सन है, और इसी की मिस्ल त़बरानी ने "मो'जमे कबीर" में वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया। और फ़रमाया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : या'नी वोह हम में से नहीं जो बच्चों पर शफ़्क़त नहीं करता और बड़ों का ह़क़ नहीं पहचानता, और वोह शख़्स जो मोमिनों के साथ ख़ियानत करता है, और आदमी उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक दूसरों के लिये वोही कुछ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। इसे त़बरानी ने "मो'जमे कबीर" में ज़मीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सनदे ह़सन के साथ रिवायत किया।

مانیست هر که بر خوردان رحم و مر پیران را توقیر نکند. أخرجه الأولان وابن حبان عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما وإسناده حسن، وبنحوه للطبراني في "المعجم الكبير" عن واثلة بن الأسقع رضي الله عنه. وفرمود صلى الله تعالى عليه وسلم: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَلَمْ يَعْرِفْ حَقَّ كَبِيْرِنَا وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ غَشَّنَا وَلَا يَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ مُؤْمِناً حَتّٰى يُحِبَّ لِلْمُؤْمِنِيْنَ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ))[1]، يعنى ازما نيست هر كه بر خورد سالان شفقت نيارد و مر سال خوردان را حق نشناسد ونه آنكه مؤمنان را خيانت كند ومسلمان مسلمان نمى شود تا آنكه همه مومنين راهمان خواهد كه از بهر جان خود ميخواهد أخرجه الطبراني في "الكبير" عن ضميرة رضي الله تعالى عنه بإسناد حسن.

1 ......"المعجم الكبير"، الحديث: ٨١٥٤، ج٨، ص٣٠٨.

www.dawateislami.net

और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला की ता'ज़ीम में से येह भी है कि सफ़ेद बालों वाले मुसलमान की इ़ज़्ज़त की जाए।" इसे अबू दावूद ने अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया।

وفرمود صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم: ((إِنَّ مِنْ إِجْلَالِ اللّٰہِ تَعَالَی إِکْرَامَ ذِي الشَّیْبَۃِ الْمُسْلِمِ))[1] الحدیث، از تعظیم خدا است بزرگ داشتن مسلمان سپید موی أخرجہ أبو داود عن أبي موسی رضي اللّٰہ تعالی عنہ.

पांज़दहुम : येह कि वोह मुअ़म्मर बिल ख़ुसूस इ़ल्मे दीन से बहरा वर है, और उ़लमा के साथ बुरा होना और उन के साथ बुराई करना इतना बुरा है कि बयान नहीं किया जा सकता।

پانزدھم: آنکہ آں پیر بالتخصیص علم دینی دارد وبا علما بد بودن ولوندی نمودن نچنداں بدست کہ بگفتن آید.

सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "वोह शख़्स मेरी उम्मत में से नहीं जो हमारे बड़े की ता'ज़ीम नहीं करता, और हमारे बच्चे पर मेहरबानी नहीं करता और हमारे आ़लिम का ह़क़ नहीं पहचानता।"

سرور عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم فرماید: ((لَیْسَ مِنْ أُمَّتِی مَنْ لَمْ یُجِلَّ کَبِیْرَنَا وَیَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَیَعْرِفْ لِعَالِمِنَا حَقَّہُ))[2] از امت من نیست آنکہ تعظیم نکند بزرگ ما را وشفقت ننماید خورد ما را وحق نشناسد عالم ما را.

---

1 ......"سنن أبي داود"، کتاب الأدب، الحدیث: ٤٨٤٣، ج٤، ص٣٤٤.

2 ......"المسند"، الحدیث: ٢٢٨١٩، ج٨، ص٤١٢، و"المستدرك"، کتاب العلم، الحدیث: ٤٢٩، ج١، ص٣٢٧.

www.dawateislami.net

इसे इमाम अह़मद ने ''मुस्नद'', ह़ाकिम ने ''मुस्तदरक'' और त़बरानी ने ''कबीर'' में उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सनदे ह़सन के साथ रिवायत किया।

और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तीन शख़्स हैं जिन के ह़क़ को सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही हल्का जानता है (1) वोह मुसलमान जिस के बाल सफ़ेद हो चुके हैं (2) आ़लिम (3) आ़दिल बादशाह।'' त़बरानी ने इसे अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ऐसी सनद के साथ रिवायत किया जिस की तह़सीन इमाम तिरमिज़ी ने इस ह़दीस के मतन के इ़लावा से की है।

शांज़ दहुम : येह कि वोह आ़लिम साह़िब बिल ख़ुसूस सय्यिद हैं, उस पाकीज़ा ख़ानदाने ज़ीशान की ता'ज़ीम अहम

أخرجه أحمد في "المسند" والحاكم في "المستدرك" والطبراني في "الكبير" عن عبادة بن الصامت رضي الله تعالى عنه بسند حسن.

وفرمود صلى الله تعالى عليه وسلم: ((ثَلَاثَةٌ لَا يَسْتَخِفُّ بِحَقِّهِمْ إِلَّا مُنَافِقٌ: ذُو الشَّيْبَةِ فِي الْإِسْلَامِ وَذُو الْعِلْمِ وَإِمَامٌ مُقْسِطٌ))[1] سه كسانند كه سبك نگيرد حق ايشان را مگر منافق يكي آنكه در اسلام مويش سپيد شد، دوم عالم، سوم پادشاه عادل. أخرجه الطبراني عن أبي أمامة رضي الله تعالى عنه بطريق حسّنها الترمذي لغير هذا المتن[2].

شانزدهم: آنكه آن ذى علم بالخصوص سيد ست وتعظيم اين نسل طاهر ونسب فاخر از

1 .....”المعجم الكبير“، عبيد الله بن زحر... إلخ، الحديث: ٧٨١٩، ج٨، ص٢٠٢.

2 .....انظر السند في ”سنن الترمذي“، كتاب الزهد، الحديث: ٢٤١٤، ج٤، ص١٨٢، و”الترغيب والترهيب“، كتاب العلم، الحديث: ١١، ج١، ص٦٥.

www.dawateislami.net

वाजिबात में से है उन्हें ईज़ा देना और उन की बद ख़्वाही करना सख़्त हलाकत का सबब है।

اهم واجبات وایذائے آنان و بدخواہی ایشان از اشد موبقات

अबुश्शैख़ इब्ने हृब्बान और दैलमी की रिवायत में है कि सय्यिदे अ़ालम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स मेरी आल, अन्सार और अहले अ़रब का ह़क़ नहीं पहचानता तो इन तीन वुजूहात में से कोई एक वज्ह है या तो वोह मुनाफ़िक़ है या ज़िना से पैदा हुवा है, या उस औ़रत का बच्चा है जो नापाकी के दिनों में ह़ामिला हुई हो।"

درحدیث ابوالشیخ ابن حبان ودیلمی آمدہ سید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود: ((مَنْ لَّمْ يَعْرِفْ حَقَّ عِتْرَتِي وَالْأَنْصَارِ وَالْعَرَبِ فَهُوَ لِإِحْدَى ثَلَاثٍ: إِمَّا مُنَافِقٌ وَإِمَّا وَلَدُ زَنْيَةٍ وَإِمَّا امْرَؤٌ حَمَلَتْ بِهِ أُمُّهُ فِي غَيْرِ طُهْرٍ)) [1]. ہرکہ نشناسد حق آل من وحق انصار واہل عرب آن بہریکے از سہ وجہ است یامنافق ست یابچۂ زنا یامَردے کہ مادرش باوردر ایام بے نمازی بارور شدہ است.

इब्ने अ़साकिर और अबू नुऐ़म ने अमीरुल मोमिनीन अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत किया कि :

وأخرج ابن عساكر وأبو نعيم عن أمير المؤمنين علي كرم الله تعالى وجهه أيضاً يرفعه إلى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم: ((مَنْ آذَى شَعْرَةً مِّنِّي فَقَدْ

---

1 ......"الصواعق المحرقة"، الباب الحادی عشر، المقصد الثاني، ص١٧٣، و"فردوس الأخبار"، حرف الميم، الحديث: ٦٣٧١، ج٢، ص٣٠٩ بتغير قليل.

www.dawateislami.net

जिस शख़्स ने मेरे एक बाल (या'नी मा'मूली सा तअ़ल्लुक़ रखने वाले) को तक्लीफ़ दी बेशक उस ने मुझे तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने **अल्लाह** को तक्लीफ़ दी, (अबू नुऐ़म ने येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद किये :) उस पर ज़मीनो आस्मान के भरने के बराबर ख़ुदा की ला'नत।"

آذَانِي وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللّٰهَ))، زَادَ أَبُوْنُعَيْمٍ: ((فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ مِلْءُ السَّمَاءِ وَمِلْءُ الْأَرْضِ))[1] یعنی سید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود: ہر کہ از من موئے (یعنی ادنٰی متعلقے) را ایذا داد پس بہ تحقیق مرا آزار رسانید وہر کہ مرا آزار رسانید پس بدرستی کہ حق عزوجل را اذیت کرد پس برونفرین خداست بپُری آسمان وبپُری زمین. واحادیث دراجلال عترت طاہرہ وتاکید حقوق آنہا خیمہ بسر حد تواتر زدہ است، وباللّٰہ التوفیق.

आले पाक की बुज़ुर्गी और इन के हुक़ूक़ की ताकीद के **मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसें**[2] ह़द्दे तवातुर को पहुंची हुई हैं, और तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है।

ہفدہم: آنکہ چون سید موصوف حسب تصریح سائل ہم بعلم وہم بتقوٰی وہم

हफ़्दहुम : येह कि जब सय्यिद साहि़ब मौसूफ़ साइल के कहने के मुत़ाबिक़ इ़ल्म व तक़्वा, उ़म्र और नसब में आ'ला और

---

1 ......"تأريخ دمشق"، الحديث: ٦٧٨٨، ج٥٤، ص٣٠٨، و"فيض القدير"، تحت الحديث: ٨٢٦٧، ج٦، ص٢٤، (بحوالہ "ابونعیم").

2 ......انظر "كنز العمال"، فضائل النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٣٥٣٤٧، الجزء١٢، ج٦، ص١٥٩.

www.dawateislami.net

بسن وهم بنسب اجل وافضل است مستحق بكرامت امامت وتعظيم تقديم هموں كه ايں چهار از وجوه احقيت ست كما صرّح به في "تنوير الأبصار"[1] وغيره عامة الأسفار پس منازعتش باوے صراحة برخلاف حكم شرع ست ﴿وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ﴾ (پ٢٨، الطلاق: ١)

अफ़्ज़ल हैं तो वोही इमामत की इ़ज़्ज़त व ता'ज़ीम के लाइक़ हैं और येह चारों बातें इमामत के ज़ियादा ह़क़दार होने का सबब हैं जैसे कि "तन्वीरुल अब्सार" वग़ैरा फ़िक़्ह की बड़ी बड़ी किताबों में तस्रीह़ है पस ऐसे शख़्स के साथ झगड़ा शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ है, "और जो अल्लाह की ह़दों से आगे बढ़ा बेशक उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।"

هیجدهم: آنکه ایں کس میخواهد که علم خود را ذریعهٔ تحصیل دنیا کند ودر حدیث مصطفی صلی الله تعالٰی علیه وسلم آمده است ((مَنْ أَكَلَ بِالْعِلْمِ طَمَسَ اللّٰهُ عَلَى وَجْهِهٖ وَرَدَّهٗ عَلَى عَقِبَيْهِ وَكَانَتِ النَّارُ أَوْلَى بِهٖ)) (2) یعنی هر که علم را ذریعهٔ

हीजदहुम : येह कि येह शख़्स चाहता है कि अपने इ़ल्म को दुन्या ह़ासिल करने का ज़रीआ़ बनाए। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में वारिद है कि : "या'नी जो शख़्स इ़ल्म को दुन्या कमाने का ज़रीआ़ बनाता है अल्लाह तआ़ला उस के चेहरे को बिगाड़ देगा और उसे उस की ऐड़ियों पर वापस लौटाएगा

1 ....."تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج٢، ص٣٥٠-٣٥٢.

2 ....."الجامع الصغير"، الحديث:٨٥١٦، ص٥١٨، (بحوالہ شیرازی).

و"كنز العمال"، الحديث: ٢٩٠٣٠، ج١٠، ص٨٥.

www.dawateislami.net

جلب مال نماید حق عزوجل روئے اورا مسخ فرماید واورا برھر دو پاشنہ اش باز گرداند وآتش دوزخ باوسزاوار تر باشد

أخرجه الشيرازي في "الألقاب" عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.

ودر حدیث دیگر است کہ فرمود صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: ((مَنِ ازْدَادَ عِلْماً وَلَمْ يَزْدَدْ فِي الدُّنْيَا زُهْداً لَمْ يَزْدَدْ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا بُعْداً)) (1) ھر کہ در علم افزود ودر دنیا بے رغبتی نیفزود از خدا نیفزود مگر دوری أخرجه الديلمي عن علي رضي الله تعالى عنه واحادیث دریں باب بسیار ست.

نوزدھم: آنکہ حرفے چند از فلسفہ مزخرفہ آموختن واندك فضلہ از کفار سفسطہ بگدیہ اندوختن پیش او گرامی

और दोज़ख़ की आग उस की ज़ियादा हक़दार है।" (शीराज़ी ने "अल्क़ाब" में अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की)।

और एक दूसरी ह़दीस में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने इल्म ज़ियादा ह़ासिल किया लेकिन दुन्या से बे रग़बती ज़ियादा न हुई उसे **अल्लाह** तआला से दूरी के सिवा कुछ न मिला।" (इसे दैलमी ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया) और इस बारे में बेशुमार ह़दीसें वारिद हैं।

नौज़दहुम : वोह शख़्स जिस के नज़दीक बनावटी बातों वाला फ़ल्सफ़ा सीखना और काफ़िरों की बेहूदगी के बाक़ी मांदा हिस्से को भीक मांग कर जम्अ़ करना

(1) "فردوس الأخبار"، حرف الميم، الحديث: ٦٢٩٨، ج٢، ص٣٠٣.

www.dawateislami.net

बहुद बड़ा काम है और फ़ख़्र व नाज़ का बाइस है जिस की बिना पर अपने आप को उस सय्यिद फ़क़ीह से इमामत के ज़ियादा लाइक़ समझता है हालांकि फ़ल्सफ़ियों के येह उ़लूम या'नी त़बीइय्यात और इलाहिय्यात जो बद तरीन गुमराहियों से पुर हैं ह़त्ता कि इन में कुफ़्रो शिर्क और ज़रूरिय्याते दीन के इन्कार के ढेर लगे हुवे हैं और बहुत सी बातें "क़ुरआने मजीद" और अम्बिया व मुर्सलीन के इरशादात के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि हम ने बा'ज़ बातों की तफ़्सील अपने रिसाले "مقامع الحديد على خدّ المنطق الجديد" में की है हम ने इस में उस ज़माने के फ़ल्सफ़े के दा'वेदारों पर क़ियामत क़ाइम कर दी है, और अल्लाह ही की तौफ़ीक़ और उसी पर पुख़्ता भरोसा है, इन उ़लूम का (बिग़ैर तरदीद के) पढ़ना क़त्अ़न ह़राम है।

کاریست بدیع و منیع وباعث
فخر وشرف رفیع کہ بربنایش
خود را ازاں سید فقیہ افضل
واولٰی تر بامامت می انگارد
حالانکہ ایں علوم فلاسفہ
اعنی طبیعیات والٰہیات آنہا کہ
مملو ومشحون است از ضلالاتِ
شنیعہ وبطالات قطیعہ تا آنکہ
درویے انبارہا ست از کفر
وشرك وانكار ضروريات دين
وخروارها از مضادّت قرآن
ومحادّت فرمان انبياء ومرسلين
صلوات الله وسلامه عليهم أجمعين،
وقد فصّلنا بعضها عن قريب في رسالة
لنا سمّيناها: "مقامع الحديد على خد
المنطق الجديد" أقمنا فيها الطامة
الكبرى على المتهورين من متفلسفي
الزمان وبالله التوفيق وعليه التكلان
قطعاً از علوم محرمہ است.

www.dawateislami.net

''दुर्रे मुख़्तार'' में है : बेशक इ़ल्म का पढ़ना फ़र्ज़े ऐन है, (यहां तक कि उन्हों ने फ़रमाया :) और कभी इ़ल्म का पढ़ना ह़राम होता है जैसे कि इ़ल्मे फ़ल्सफ़ा, शो'बदा, नुजूम, रमल, ह़िक्मते त़बइ़य्या और जादू।

في "الدر المختار": اعلم أنّ تعلّم العلم يكون فرض عين [إلى أن قال] وحراماً وهو علم الفلسفة والشعبدة والتنجيم والرمل وعلوم الطباعين والسحر[1].

और अ़ल्लामा ज़ैन बिन नजीम मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ''अल अश्बाह वन्नज़ाइर'' में फ़रमाते हैं : इ़ल्म का पढ़ना कभी ह़राम होता है जैसे कि फ़ल्सफ़ा।

وعلامه زين بن نجيم مصرى رحمه الله تعالى در "الأشباه والنظائر" فرمايد: العلم قد يكون حراماً وهو علم الفلسفة... إلخ[2]،

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने ''फ़तावा'' में फ़रमाते हैं : ह़िक्मते त़बइ़य्या का जो ह़िस्सा फ़लासफ़ा के त़रीक़े पर हो उस का पढ़ना ह़राम है।

علامه ابن حجر مكى رحمه الله تعالى در "فتاواى" خودش فرمود: ماكان منه (أي: من الطبيعي) على طريق الفلاسفة حرام[3].

इसी में है : इब्ने सलाह़ ने फ़ल्सफ़े और मन्ति़क़ की ह़ुरमत का फ़तवा दिया और इन्हें पढ़ने वाले पर सख़्त त़ा'न व तशनीअ़ की और इस बारे में त़वील गुफ़्तगू की, और बादशाहे इस्लाम पर

وهمدران ست أما الاشتغال بالفلسفة والمنطق فقد أفتى بتحريمه ابن الصلاح وشنع على المشتغل بهما وأطال في ذلك ويجب على الإمام إخراج أهلهما من مدارس الإسلام

1 ..... "الدرّ المختار"، المقدّمة، ج١، ص١٠٧-١١٠، ملتقطاً.
2 ..... "الأشباه والنظائر"، الفنّ الثالث، ص٣٢٨، ملخّصاً.
3 ..... "الفتاوى الحديثية"، مطلب: هل يجوز علم التنجيم، ص٦٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

वाजिब है कि ऐसे लोगों को इस्लामी मदारिस से निकाल कर क़ैद कर दे और इन के शर को रोके अगर्चे इन का ख़याल येह हो कि हम फ़लासफ़ा के अ़क़ाइद के क़ाइल नहीं, क्यूंकि इन की ह़ालत ख़ुद इन्हें झुटला रही है।

देखिये कैसे साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ त़ौर पर फ़रमा दिया कि फ़ल्सफ़ा ह़राम है और बादशाहे इस्लाम पर लाज़िम है कि फ़ल्सफ़ियों को मदारिसे इस्लामिय्या से निकाल कर क़ैद करे ताकि मुसलमान इन के शुरूर से मह़फ़ूज़ रहें और फ़ल्सफ़ी कि इन जहालातो वाहिय्यात को इ़ल्म कहता है और इस के ह़ुसूल में उ़म्र गुज़ार देता है अगर येह कहे कि मैं इसे दिल से क़बूल नहीं करता तो ख़ुद उस का ज़ाहिर ह़ाल उस की तक्ज़ीब कर रहा है। अगर फ़लासफ़ा के अ़क़ाइद को पसन्द नहीं करता तो फ़ल्सफ़े का पाबन्द क्यूं है कभी

وسجنهم وكفّ شرهم قال: وإن زعم أنّه غير معتقد لعقائدهم فإنّ حاله يكذبه(1).

ببیں چساں روشن وسپید
میگوید کہ فلسفہ حرام است
وبربادشاہ اسلام واجب کہ
اہل آں را از مدارس اسلام
بیروں کند وزنداں فرماید
تا شر آنہا بمسلماناں نرسد
ومرد متفلسف کہ دریں
جہالات مسمی بعلم توغل
دارد وعمر میگزارد اگر دعوی
کند کہ من بدل عقائد آنہا
راجائے ندادہ ام خود حال
او بہر تکذیب او بسند ست کہ
اگر نہ پسند ست چرا پائے

1 ......"الفتاوى الكبرى الفقهية" لابن حجر، كتاب الطهارة، باب الاستنجاء، ج١، ص٧٦.

www.dawateislami.net

ऐसा भी देखा है कि इन्सान एक चीज़ को ना पसन्द करे और फिर अपनी मरज़ी से अपनी तमाम उ़म्र उस में सर्फ़ कर दे और रातें उस के पीछे गुज़ार दे और मुद्दतों उस के साथ वाबस्ता रहे और उस के ह़ासिल करने पर फ़ख़्र करे और अपनी सर बुलन्दी का दा'वा करे हरगिज़ नहीं, येह सब पसन्दीदगी की अ़लामतें हैं वरना दुश्मन के साथ एक लह़ज़ा गुज़ारना भी मुश्किल होता है। ऐ जुदाई के कोए (दीन से दूर करने वाले) काश मेरे और तेरे दरमियान मशरिक़ और मग़रिब का फ़ासिला होता ! येह उन के मक़्सद के मुत़ाबिक़ उन के कलाम की तक़रीर है। और अ़ल्लामा ने फ़ल्सफ़े के मुतअ़ल्लिक़ जो फ़रमाया है वोह सह़ीह़ है, इसी लिये इमाम अज़रई ने फ़रमाया : फ़ल्सफ़े का ह़राम होना दुरुस्त है । रहा मन्तिक़ का मस्अला तो फ़लासफ़ा की मन्तिक़ का पढ़ना ह़राम, और अ़ल्लामा का

بندست ہیچ دیدۂ انساں
ہر چیزے را کہ دشمن دارد
باختیار خود باو ے عمر گزارد
وشبہا باو ے سحر کند ومدتہا
چنگ بدامنش زند وبحصولش
غلغلۂ تفاخر افگند وکلۂ
گوشہا بر آسمان شکند حاش
للہ ایں ہمہ علامات
رضا وایثار ست ورنہ بادشمن
ساعتی بسر بردن دشوار ست ،
یا غراب البین لیت بیني وبینك بعد
المشرقین!

ایں ست تقریر کلامش
برحسب مرامش رحمہ اللہ تعالٰی.
وماذکرہ فی الفلسفة صحیح ومن ثمّ
قال الأذرعي رحمہ اللہ تعالی تحریمھا
ھو الصحیح الصواب وأما ما ذکرہ في
المنطق فمنطق الفلاسفة ھو الذي
یحرم الاشتغال بہ ویدلّ لذلك قولہ

www.dawateislami.net

वोह कलाम कि "उन के शर के दरवाज़े को बन्द कर दे" और "वोह फ़लासफ़ा के अक़ाइद के क़ाइल हैं" इस पर दलालत कर रहा है اھ मुल्तक़तन, और इस में तवील बह़स है।

كف شرهم وقوله ومعتقد لعقائدهم،(1) اھ ملتقطاً وفيه طول كثير.

फ़क़ीर कहता है (और अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ मेरी मग़फ़िरत फ़रमाए) : कि फ़ल्सफ़े के ह़राम होने और इस की बुराई की दलील वोह ह़दीस है जो इमाम अबू अ़ब्दुर्रह़मान दारिमी ने "सुनन" में सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है कि : "या'नी ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तौरात का एक नुस्ख़ा लाए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तौरात का नुस्ख़ा है। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया,

فقیر میگویم واللّٰه سبحانه يغفر لي از اول دلیل بر تحریم تفلسف وتقبیح حالش حدیثی ست که امام عبد الرحمان دارمی در "سنن" خودش از سیّدنا جابر بن عبد اللّٰه رضی اللہ تعالی عنہما روایت کرده: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ أَتَى رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنُسْخَةٍ مِّنَ التَّوْرَاةِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ! هَذِهِ نُسْخَةٌ مِّنَ التَّوْرَاةِ فَسَكَتَ فَجَعَلَ يَقْرَأُ وَوَجْهُ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَغَيَّرُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ ثَكِلَتْكَ الثَّوَاكِلُ مَا تَرَى مَا بِوَجْهِ رَسُولِ اللّٰهِ

(1)......"الفتاوى الكبرى الفقهية" لابن حجر، كتاب الطهارة، باب الاستنجاء، ج١، ص٧٦.

www.dawateislami.net

उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक शिद्दते ग़ज़ब की वज्ह से एक ह़ालत से दूसरी ह़ालत की त़रफ़ बदल रहा था, और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ को इस की ख़बर न थी कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुझे रोने वाली औ़रतें रोएं तुम नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की ह़ालत नहीं देख रहे ? तब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ुज़ूर के चेहरए अन्वर को देखा और फ़ौरन कहा : अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल के ग़ज़ब से ख़ुदा की पनाह हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हुवे (इस बात से ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ग़ुस्सा ठन्डा हो गया और)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَنَظَرَ عُمَرُ إِلَى وَجْهِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ غَضَبِ اللّٰهِ وَغَضَبِ رَسُوْلِهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَضِيْنَا بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْإِسْلَامِ دِيْناً وَّبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ! لَوْ بَدَا لَكُمْ مُوْسَى فَاتَّبَعْتُمُوْهُ وَتَرَكْتُمُوْنِيْ لَضَلَلْتُمْ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيْلِ وَلَوْ كَانَ حَيًّا وَّأَدْرَكَ نُبُوَّتِيْ لَاتَّبَعَنِيْ))(1)

یعنی عمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ پیش سید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم نسخہ از توریت آورد وعرض داشت کہ یارسول اللّٰہ این نسخہ ایست از توریت سید عالم صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم پاسخ نداد وسکوت فرمود عمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ خواندن

---

(1)......"سنن الدارمي"، باب ما يتّقى من تفسير حديث النبي صلّى اللّٰه تعالى عليه وسلّم وقول غيره... إلخ، الحديث: ٤٣٥، ج١، ص١٢٦.

www.dawateislami.net

نबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! अगर तुम पर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ज़ाहिर होते और तुम मुझे छोड़ कर उन की इत्तिबाअ़ करते तो बेशक तुम राहे रास्त से भटक जाते और बेशक अगर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दुन्या में होते और मेरी नबुव्वत के ज़ुहूर के ज़माने को पाते तो मेरी पैरवी करते ।"

گرفت وچہرہ مبارک سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم از حالی بحالی گردید بجہت شدت غضب وعمر ہنوز ازیں معنی آگاہی نداشت تا آنکہ صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ گفت اے عمر ترا بگریند زنان گریہ کناں نمی بینی حالتیکہ در روئے مبارک سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پیدا است آنگاہ عمر نظر بالا کرد وجانب چہرۂ اقدس دید فوراً گفت بخدا پناہ میبرم از غضب خدا ورسول خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پسندیدیم خدائے را پروردگار واسلام رادین ومحمد رانبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وازیں کلمہا غضب سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرومی نشست پس سید عالم

www.dawateislami.net

صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود
بخدائے کہ جان محمد بقبضۂ
قدرت اوست اگر ظاہر شود
بہر شما موسٰی علیہ السلام و شما
اتباع او کنید و مرا بگزارید
ہر آئینہ راہ راست گم کردہ
باشید و اگر موسٰی بدنیا بودے
و زمانہ ظہور نبوتم دریافتی
بدرستی کہ مرا پیروی کردے
صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم.

حالا چشم انصاف کشادنی
ست توریت کہ کلام الٰہی
ست و قرآن بہ تصدیقش نازل
محض بوجوہ اختلاط تحریفات
کارش بجائے رسید کہ قرأتش
چنداں موجب غضب
سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ
وسلم شد ایں فلسفہ ملعونہ
بکفر و ضلال مشحونہ کہ جہلی

अब इन्साफ़ की आंख खोलनी चाहिये "तौरात" कि कलामे इलाही है और "कुरआने मजीद" ने इस की तस्दीक़ की है लेकिन सिर्फ़ इस बिना पर कि इस में तह़रीफ़ हो चुकी है इस का पढ़ना किस क़दर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब बना, येह मर्दूद फ़ल्सफ़ा जो कि कुफ़्रो ज़लालत से भरा हुवा और जहालतों का मजमूआ़ है और जिस ने दीन के

www.dawateislami.net

ख़ादिमों के लिये दीन का रास्ता बन्द किया हुवा है और फ़ल्सफ़ियों ने दीन की ज़न्जीर अपने गले से उतार फेंकी है (इ़ज़्ज़त तो अल्लाह ही के लिये है) वोह कब इस लाइक़ है कि उस का बहुत बड़ा सवाब गुमान किया जाए और उ़म्रें इस पर सर्फ़ कर दी जाएं और इस की मह़ब्बत को दिल में जगह दी जाए इस के बा वुजूद मह़फ़ूज़ रहें और शदीद ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ भी न हों ब ख़ुदा ! इस त़रह़ नहीं हो सकता अगर्चे झूटे इसे पसन्द न करें ।

چنداست برهم نشسته وراه
دین برخدامش بسته ورِبقۂ
یقین از گلوئے شان گسسته
العزة لله چه جائے آں دارد که
اورا اجر عظیم پندارند
وعمرها نظر بروے گمارند
وتخم ودادش بدلها کارند با
ایں همه سلامت روند غضب
اشد رامستحق نشوند لا والله لا
یکون ولو کره المبطلون

नीज़ इमाम अह़मद ने "मुस्नद" में और बैहक़ी ने "शोअ़बुल ईमान" में ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरवरे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि : हम यहूदियों से कई ऐसी बातें सुनते हैं जो हमें अच्छी लगती हैं क्या

باز احمد در "مسند" وبیهقی
در "شعب الایمان" از جابر رضی
الله تعالٰی عنه چناں آورده اند که
عمر رضی الله تعالٰی عنه باقدس
بارگاه عالم پناه سید عالم صلی
الله تعالٰی علیه وسلم حاضر آمد
وبعرض قدس رسانید که: إنَّا
نَسْمَعُ أَحَادِيثَ مِنْ يَهُودَ تُعْجِبُنَا، أَ
فَتَرَى أَنْ نَكْتُبَ بَعْضَهَا؟ ما از یهود

www.dawateislami.net

हमें इजाज़त है कि हम इन में से कुछ बातें लिख लिया करें ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम दीने इस्लाम के मुकम्मल और काफ़ी होने में हैरान व परेशान हो कि दूसरों की बातों की त़रफ़ तवज्जोह देते हो जैसे कि यहूदी और ईसाई अपने मज़हब में मुतहय्यिर हो गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुवे पर इक्तिफ़ा न कर के इधर उधर मसरूफ़ हो गए, और क़ीलो क़ाल में पड़ गए, मैं तुम्हारे पास येह वाज़ेह और पाकीज़ा शरीअ़त लाया हूं कि इस में न तो शको शुब्हे की गुन्जाइश है और न किसी और चीज़ की ज़रूरत, अगर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام दुन्या में होते तो उन्हें भी मेरी पैरवी के सिवा चारह न होता ।"

حدیثہا می شنویم کہ مارا خوش می آید آیا بروانگی باشد کہ چیزے ازانہا بنویسیم سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود : أَمُتَهَوِّكُونَ أَنْتُمْ كَمَا تَهَوَّكَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى آیا متحیرید دردین اسلام و کمال وتمام واغنائے تام او کہ دراحادیث دیگراں طمع دارید چنانکہ یہود ونصارٰی دردین خود متحیر شدند وبرعلم الٰہی قناعت ناکردہ درایں وآں فتادند ودرقیل قال زدند لَقَدْ جِئْتُكُمْ بِهَا بَيْضَاءَ نَقِيَّةً، من ایں ملت وشریعت راسپید وروشن وصاف وپاکیزہ آوردہ ام کہ نہ ہیچ شبہہ را درو دخلی نہ باوے سوئے چیزے دگر حاجتی وَلَوْ كَانَ مُوسَى حَيًّا مَا وَسِعَهُ إِلَّا اتِّبَاعِي))(1)

---

1 ......"المسند"، الحديث: ١٥١٥٨، ج٥، ص١٩٥،
و"شعب الإيمان"، الحديث: ١٧٦، ج١، ص٢٠٠.

www.dawateislami.net

وخود یهود واحادیث آنها چه لائق التفات باشد اگر موسٰی هم بدنیا بودے اورانیز جز پیروی من گنجایش نداشته صلی اللہ تعالٰی علیك وسلم

तो खुद यहूद और उन की बातें कैसे लाइक़े इल्तिफ़ात हो सकती हैं ?

ومعلوم ست که احادیثے که همچو عمررا خوش آید رضی اللہ تعالٰی عنه زنهار مخالف ملت ومنافی شریعت نباشد با ایں همه نهی نمودند وامت رابر استغنا بشرع مطهر ازهمه اغیارش دلالت فرمودند فکیف که دامن کفار یونان گیرند وبحر صافی راپس پشت انداخته درتیه ضلالت بتلخی میرند لا یأتي ذلك إلّا من سفه نفسه.

ज़ाहिर है कि जो बातें उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी शख़्सिय्यत को पसन्द आई हों वोह हरगिज़ शरीअ़त के मुख़ालिफ़ न होंगी इस के बा वुजूद हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया और बता दिया कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा के होते हुवे किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं, तो येह किस त़रह़ जाइज़ होगा कि साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ दरया (शरीअ़ते मुक़द्दसा) को पसे पुश्त डाल कर यूनान के काफ़िरों का दामन थामा जाए और गुमराही के जंगल में मुसीबत की मौत मोल ली जाए येह वोही शख़्स कर सकता है जिस ने अपने आप को ह़क़ीरो ज़लील बना दिया हो।

بالجمله ضرر فلسفه وضلال متفلسفه از شمس ازهر واز امس اظهر پس در تحریمش

अल ह़ासिल येह फ़ल्सफ़े का नुक़्सान और फ़ल्सफ़े के दा'वेदारों की गुमराही सूरज से ज़ियादा रौशन और गुज़श्ता दिन से ज़ियादा ज़ाहिर है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा इस की हुरमत में सिर्फ़ वोही शख़्स शक करेगा जिस का दिल बीमार और ईमान कमज़ोर हो, और **अल्लाह** की पनाह और उसी पर भरोसा है।

ارتیاب نکند مگر مریض القلب ضعیف الایمان والعیاذ باللّٰہ وعلیہ التکلان

आइये ताकि अस्ल मत़लब की त़रफ़ तवज्जोह दें कि मज़्कूरए बाला शख़्स, फ़ल्सफ़े का दा'वेदार उस चीज़ पर फ़ख़्र करता है कि बिनाए बर ईं अपने आप को फ़ज़ीलत वाला और इमामत के ज़ियादा लाइक़ समझता है जिसे उ़लमा ने ह़राम कहा है वाज़ेह़ है कि इस से बढ़ कर इस फ़े'ले ह़राम की ता'रीफ़ व तह़सीन क्या हो सकती है ! (**अल्लाह** की पनाह) इस में तो एक पहलू कुफ़्र का भी निकलता है चुनान्चे, उ़लमा ने बहुत से मसाइल में तस्रीह़ की है, इमामे अजल्ल ज़हीरी और इमाम फ़क़ीहुन्नफ़्स क़ाज़ी ख़ान के शागिर्द इमाम अ़ब्दुर्रशीद बुख़ारी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی "ख़ुलासा" में फ़रमाते हैं : (जिस शख़्स ने शरई क़बीह़ के मुर्तकिब को कहा कि तू ने अच्छा किया तो वोह काफ़िर हो गया)

بیا تا عنان بمطلب گردانیم متفلسف مذکور ایں حرام علم را ذریعۂ تفاخر و وسیلۂ تفضیل و باعث تقدیم در مناجات رب جلیل دانست پیداست کہ کدام تحسین بالاتر ازیں باشد وایں معنی العیاذ باللّٰہ پہلو بکفر زند چنانکہ علماء در فروع کثیرہ تنصیص کردہ اند وامام عبد الرشید بخاری تلمیذ امام اجل ظہیری وامام فقیہ النفس قاضی خان رحمہم اللّٰہ تعالٰی در "خلاصہ" فرماید: من قال: أحسنت لما هو قبيح شرعاً أو جودت كفر.[1]

---

1 ......انظر "منح الروض الأزهر"، فصل في الكفر صريحاً وكناية، ص١٨٩، (عن "الخلاصة").

www.dawateislami.net

یارب مگر متفلسفان برخویشتن نمی بخشایند کہ برفعل محرم بس ناکردہ زبان بتکبر وتفاخر مے کشایند ﴿ كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴾(پ ۳۰، المطففين: ۱٤)، وَنَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَافِيَةَ.

ऐ रब ! शायद येह फ़ल्सफ़े के दा'वेदार अपने ऊपर रह़्म नहीं करते कि ह़राम फ़े'ल की बिना पर फ़ख़्र और तकब्बुर करते हैं : (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने) । और हम **अल्लाह** से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं ।

بستم: آنکہ فضل تفلسف رابر فضل تفقہ ترجیح دادن کہ ادعائے اولویت بامامت رامنشا ومنزع ہموں تواند بود متضمن تحقیر علم دین ست کما لایخفی وتحقیر ش بروجہ صریح کفر قطعی ست اینجا چوں پائے تضمن درمیان ست نزاع لزوم والتزام عیان ست کما بینّاہ في "مقامع الحدید"[1] واللّٰه الهادي إلى المسلك السديد.

बिस्तुम : फ़ल्सफ़े की फ़ज़ीलत को तरजीह़ देना फ़िक़्ह की फ़ज़ीलत पर क्यूंकि इमामत के ज़ियादा लाइक़ होने के दा'वा की येही वज्ह हो सकती है इस में ज़िमनन इ़ल्मे दीन की तौहीन है जैसे कि ज़ाहिर है और इ़ल्मे दीन की सराह़तन तौहीन कुफ़्र है यहां चूंकि येह बात ज़िमनन आ गई है इस लिये येही कहा जाएगा कि इ़ल्मे दीन की तौहीन लाज़िम आई है उस शख़्स ने इस का इल्तिज़ाम नहीं किया (इस लिये कुफ़्र का क़ौल नहीं किया जाएगा) जैसा कि हम ने ''मक़ामिउ़ल ह़दीद'' में बयान किया ।

---

[1].....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत علیہ الرحمۃ का येह रिसाला "مقامع الحدید على خدّ المنطق الجدید" फ़तावा रज़विय्या सत्ताईसवीं जिल्द में मौजूद है जिस में आप علیہ الرحمۃ ने मौलवी मुह़म्मद ह़सन संभली की ख़ुराफ़ाते फ़ल्सफ़ा पर मुश्तमिल किताब "المنطق الجدید لناطق الناله الحدید" का रद्दे बलीग़ फ़रमाया है ।

www.dawateislami.net

(ایں بست وجہ است) نجیح ووجیہ مفید فقیہ ومبید سفیہ کہ برنہج ارتجال بحال استعجال سپرد خامہ نمودہ شد وماناکہ اگر غوری رود وجوہ دیگر منجلی شود اما ہمیں قدر بسند ست وتطویل مملل ناپسند حالا مسلماناں نگہ کنند کہ شرع مطہر امامت فاسق رانہ پسندیدہ تا آنکہ بسیارے ازعلما امامتش رامکروہ تحریمی قریب حرام وآناں راکہ بتقدیمش بردارند مبتلائے اثام گفتہ اند.

علامہ ابراہیم حلبی رحمہ اللہ تعالٰی در "شرح کبیر منیہ" عبارت "فتاوی الحجۃ" نقل کردہ می فرماید: فیہ إشارۃ إلی أنّھم لو قدموا فاسقاً یأثمون بناء علی أنّ کراھۃ تقدیمہ کراھۃ تحریم لعدم اعتنائہ بأمور دینہ وتساھلہ في الإتیان بلوازمہ فلا یبعد منہ الإخلال ببعض

येह बीस उ़म्दा और बेहतरीन वज्हें फ़क़ीह के लिये मुफ़ीद और बे वुक़ूफ़ के लिये तबाह कुन, क़लम बरदाश्ता फ़िल बदिय्या लिख दी गई हैं अगर मज़ीद ग़ौर किया जाए तो और वुजूह भी ज़ाहिर हो सकती हैं ताहम इन्हीं पर इक्तिफ़ा किया जाता है ज़ियादा की ज़रूरत नहीं । अब मुसलमानों को ग़ौर करना चाहिये कि शरीअ़ते मुक़द्दसा ने फ़ासिक़ की इमामत को पसन्द नहीं किया ह़त्ता कि बहुत से उ़लमा ने इसे मकरूहे तह़रीमी ह़राम के क़रीब फ़रमाया है और ऐसे शख़्स को इमाम बनाने वालों को गुनाहे अ़ज़ीम में मुब्तला क़रार दिया है ।

अ़ल्लामा इब्राहीम ह़लबी "कबीर शर्ह़े मुनिया" में "फ़तावा अल ह़िज्जा" से नक़्ल कर के फ़रमाते हैं : इस में इशारा है कि फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनहगार होंगे क्यूंकि उसे इमाम बनाना मकरूहे तह़रीमी है, इस लिये कि वोह उमूरे दीन का कोई ख़ास ख़याल नहीं करता और शरीअ़त के लाज़िमी उमूर के अदा

www.dawateislami.net

करने में सुस्ती से काम लेता है कुछ बईद नहीं कि वोह नमाज़ की बा'ज़ शर्तों को भी तर्क कर दे और नमाज़ के मुख़ालिफ़ कोई काम कर बैठे बल्कि उस के फ़िस्क़ के पेशे नज़र येही ग़ालिब गुमान है, इसी लिये इमाम मालिक के नज़्दीक और एक रिवायत में इमाम अहमद के नज़्दीक भी उस के पीछे नमाज़ बिल्कुल जाइज़ नहीं, "तबिय्यीनुल ह़क़ाइक़ शर्हे कन्ज़ुल दक़ाइक़" में इमाम ज़ैलई के इरशाद का भी येही मत़लब है, अ़ल्लामा ह़सन शुरुम्बुलाली "नूरुल ईज़ाह़" की शर्ह़ "मराक़िले फ़लाह़" में और अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद त़ह़त़ावी ने "ह़ाशिया मराक़ी" में भी इसी त़रह़ फ़रमाया ।

شروط الصلاة وفعل ما ينافيها بل هو الغالب بالنظر إلى فسقه ولذا لم تجز الصلاة خلفه أصلاً عند مالك وفي رواية عن أحمد[1].

وهمین ست مفاد ارشاد امام زیلعی در "تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق"[2]. وعلامہ حسن شرنبلالی در "مراقی الفلاح"[3] شرح متن خودش "نور الایضاح" ذکر کردش وعلامہ سید احمد طحطاوی در "حاشیہ مراقی"[4] رحمة الله عليهم أجمعين

سُبْحٰنَ الله जब उस शख़्स की इमामत दुरुस्त नहीं जिस में एक फ़िस्क़ पाया जाता हो तो उस शख़्स को इमाम बनाना

سبحان الله چوں امامت فاسق بفسق واحد اورا نوبت باینجا رسیدست این کس که وجوه

1 ......"غنية المتملي في شرح منية المصلّي"، فصل في الإمامة، ص٥١٣-٥١٤.

2 ......"تبيين الحقائق"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج١، ص٣٤٥.

3 ......"مراقي الفلاح"، صـ٧٠.

4 ......"طحطاوي على المراقي"، صـ٣٠٣.

www.dawateislami.net

عدیدہ ازفسق جمع کردہ
کہ ازآنہا بعضے روئے بسوئے
کفر آوردہ والعیاذ باللّٰہ تعالی ہیچ
محل آں باشد کہ امام
کردن او روا دارند
یادرحرمت اقتدایش نزاعی
آرند گیرم کہ نمازپس
فاسق وجہ حلت دارد اما
کسیکہ درنفس اسلامش
خلاف راگنجایشے باشد
کیست کہ امامت او را حلال
انگارد ألا ترى أنّ في تقديمه تعظيمه
وهو حرام عند الشرع بالقطع، مع هذا
علماء ما ازامام ابویوسف رضی
اللّٰہ تعالٰی عنہ روایت کردہ اند
کہ امامت متکلمان
جائزنیست اگرچہ باعتقاد
صحیح باشند کما نقله الإمام
الأجل الهندواني والزاهدي صاحب
"القنية" و"المجتبى" والإمام البخاري

किस त़रह़ दुरुस्त होगा जिस में कई वज्ह से फ़िस्क़ पाया जाता है और उन में से बा'ज़ वज्हें कुफ़्र तक पहुंचाती हैं والعیاذ باللّٰہ تعالی. क्या कुछ गुन्जाइश है कि उ़लमा ऐसे शख़्स के इमाम बनाने को जाइज़ रखें या उस की इक़्तिदा के नाजाइज़ होने में कुछ इख़्तिलाफ़ करें येह दुरुस्त है कि फ़ासिक़ के पीछे नमाज़ जाइज़ होने की एक सूरत है लेकिन जिस शख़्स के इस्लाम ही में इख़्तिलाफ़ पाया जाता हो उस की इमामत को कौन ह़लाल गुमान करेगा ? क्या तुझे ख़बर नहीं कि उसे इमाम बनाने में उस की ता'ज़ीम है और वोह शरअ़न क़त़ई त़ौर पर ह़राम है इस के बा वुजूद हमारे उ़लमा इमाम अबू यूसुफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि मुतकल्लिमीन की इमामत जाइज़ नहीं अगर्चे उन का अ़क़ीदा सह़ीह़ हो जैसे कि इमामे अजल्ल हिन्दवानी ज़ाहिदी साह़िबे "कुनिया" व "मुज्तबा",

www.dawateislami.net

इमाम बुख़ारी साहिबे "ख़ुलासा" और इब्ने हुमाम साहिबे "फ़त्हुल क़दीर" ने नक़्ल किया, इमामुल अजल्ल शम्सुल अइम्मा हलवानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे में जो उन के ख़त मुबारक से पाया गया येही बात लिखी है जैसे कि "ख़ुलासा" में है इस रिवायत को तमाम अइम्मए कामिलीन ने क़बूल किया और इस की मुराद मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से बयान फ़रमाई है, अक्सर इस त़रफ़ गए हैं कि इस जगह मुतकल्लिम से मुराद वोह शख़्स है जो इल्मे कलाम के मुख़्तलिफ़ फ़ुनून में ज़रूरत से ज़ियादा मश्ग़ूलिय्यत रखता हो और शुकूक व शुब्हात की कसरत में उम्रे अ़ज़ीज़ को ज़ाएअ़ कर दे, येह मत़लब इमाम हिन्दवानी ने बयान फ़रमाया।

صاحب "الخلاصة" والإمام العلامة المحقق حيث أطلق في "الفتح"[1] وبهميں معنى فتواے امام اجل شمس الائمه حلوانى رحمة الله تعالى عليه بخط مبارك يافته اند كما نص عليه في "الخلاصة"[2] وايں روايت راهمه ائمه ممدوحين بقبول وتقرير گرفته اند ودرتوضيح مراد وتنقيح مفادش طرق عديده رفته محط كلام اكثرے آنست كه اينجا مراد بمتكلم كسے ست كه درفنون كلاميه زائد برحاجت توغل دارد ودرتكثير شكوك وشقاشق عقليه عمرعزيز ضائع برد أفاد ذلك الإمام الهندواني.

और अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी "ह़दीक़ए नदिय्या" शर्ह़ "त़रीक़ए وعلامه عبد الغني نابلسي در "حديقه نديه شرح طريقهٔ محمديه"

1 ..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج١، ص٣٠٤.

2 ..... "خلاصة الفتاوى"، كتاب الصلاة، الفصل الخامس، ج١، ص١٤٩.

www.dawateislami.net

मुह़म्मदिय्या'' में फ़रमाते हैं कि : इमाम अबू यूसुफ़ से जो येह रिवायत नक़्ल की गई है कि मुतकल्लिम अगर्चे सह़ीह़ अक़ाइद रखता हो उस की इमामत नाजाइज़ है, इस का मत़लब येह है कि जो शख़्स ज़रूरत से ज़ियादा इल्मे कलाम में तवज्जोह और ह़द दरजे का शग़फ़ रखता हो उस के पीछे नमाज़ नाजाइज़ है जैसा कि कहा गया है कि जिस ने कलाम के ज़रीए इल्मे दीन को त़लब किया वोह ज़िन्दीक़ (बे दीन) हो गया मुतकल्लिम से इमाम अबू यूसुफ़ की मुराद वोह शख़्स नहीं जो फ़लासफ़ा के क़ानून पर कलाम करता हो क्यूंकि फ़ल्सफ़ियों की अब्ह़ास को इल्मे कलाम नहीं कहा जाता क्यूंकि वोह तो क़ानूने इस्लाम ही से ख़ारिज हैं और येह अज्ज़ा ह़द में से है, जैसा कि ''बज़ाज़िया'' में है । जब इल्मे कलाम में ग़ुलू करने वालों के पीछे नमाज़ नाजाइज़ है तो फ़ल्सफ़े के दा'वेदारों के पीछे ब त़रीक़े औला नाजाइज़ होगी, जैसा कि मख़्फ़ी नहीं ।

گوید: المروي عن أبي يوسف رحمه الله تعالى أنّ إمامة المتكلم وإن كان بحق لا تجوز محمول على الزائد على قدر الحاجة والمتوغل فيه كما قيل من طلب العلم بالكلام تزندق ولا يريد المتكلم على قانون الفلاسفة لأنّه لا يطلق على مباحثهم علم الكلام لخروجه عن قانون الإسلام وهو من أجزاء الحد، كما في "البزازية"[1]، پس امامت متفلسفان اولٰی واجدر بعدم جوازست كما لا يخفى.

1 ....."الحديقة الندية"، النوع الثاني من الأنواع الثلاثة، ج١، ص٣٣٢.

www.dawateislami.net

अल ह़ासिल शरीअ़ते मुत़ह्हरा हरगिज़ पसन्द नहीं करेगी कि सय्यिद मौसूफ़ को इतने फ़ज़ाइल और मुस्तह़िक़ होने के बा वुजूद मन्सबे इमामत से बर त़रफ़ कर दिया जाए और उस शख़्स को तमाम गुनाहों, ममनूअ़ ह़रकतों के बा वुजूद उन की जगह मुक़र्रर कर दिया जाए यक़ीनन जो शख़्स येह ना पसन्दीदा काम करेगा वोह गुनाह और उस की इमदाद, ईज़ा, जुल्म, शाने सियादत और इ़ल्म की तौहीन और बहुत सारी साबिक़ा क़बाह़तों में फ़ल्सफ़े के उस दा'वेदार का शरीक होगा जैसे कि **साह़िबे शर्रे सद्र पर मख़्फ़ी नहीं**[2], **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न करो ।

بالجملہ شرع مطہر زنہار نہ پسندد کہ سید موصوف را باوصف چنیں فضائل واستحقاق کل از منصب امامت بر آرند وایں کس را با آں ہمہ معاصی ومناہی ودواہی وتباہی بجایش بردارند لاجرم ہر کہ بایں کار واجب الانکار پردازد شریك آں متفلسف باشد در اثم ومعاونش در ایذا وظلم ومستخف بشان سیادت وعلم ومورد بسیاری از شنائع مذکورۃ الصدر کما لا یخفی علی المنشرح الصدر واللّٰہ الہادي في کلّ ورد وصدر

حضرت حق جل وعلا فرماید:

﴿لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪﴾[1]

مدد ہمدگر مکنید بر گناہ وستم

---

1 .....پ٦، المائدة: ٢ .

2 .....कुशादा दिल वाले पर पोशीदा नहीं ।

www.dawateislami.net

وحاکم وعقیلی وطبرانی وابن عدی وخطیب بغدادی باسانید خود ها ازعبداللّٰه بن عباس رضی اللّٰه تعالٰی عنهما روایت کنند که جناب سیدعالم صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم می فرمایند: ((مَنِ اسْتَعْمَلَ رَجُلاً مِّنْ عَصَابَةٍ وَفِيْهِمْ مَنْ هُوَ أَرْضٰى لِلّٰهِ مِنْهُ فَقَدْ خَانَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالْمُؤْمِنِيْنَ)) [1] یعنی هر که مردے را ازجماعتی بر کارے از کارهائے ایشاں نصب کرد ودر ایشاں کسے ست که پسندیده تر ست ازوے نزد خدا پس بتحقیق او خیانت کرد خدا ورسول ومسلماناں را وأخرج أبو يعلى عن حذيفة بن اليمان رضي اللّٰه تعالى عنه يرفعه إلى النبي صلى اللّٰه تعالى عليه وسلم: ((أَيُّمَا رَجُلٍ

और हाकिम, अ़क़ीली, त़बरानी, इब्ने अ़दी और ख़त़ीब बग़दादी ने अपनी सनदों से अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "या'नी जो शख़्स एक जमाअ़त में से किसी आदमी को उन के किसी काम पर मुक़र्रर करता है हालांकि उन लोगों में उस से ज़ियादा मक़्बूले बारगाहे इलाही आदमी मौजूद है तो बेशक उस ने अल्लाह व रसूल और मुसलमानों की ख़ियानत की।" और अबू या'ला ने हुज़ैफ़ा बिन यमान से रिवायत की, कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने दस आदमियों की जमाअ़त पर एक शख़्स को मुक़र्रर किया हालांकि उसे इल्म है कि उन दस आदमियों में मुक़र्रर शुदा आदमी से अफ़्ज़ल मौजूद है तो बेशक उस ने

1 ..... "المستدرك"، كتاب الأحكام، الحديث: ٧١٠٥، ج٥، ص١٢٦، بألفاظ متقاربة، و"كتاب الضعفاء"، ترجمة حسن بن قيس، ج١، ص٢٦٧، بألفاظ متقاربة.

www.dawateislami.net

अल्लाह व रसूल और मुसलमानों से ख़ियानत की।''

اِسْتَعْمَلَ رَجُلاً عَلٰى عَشْرَةٍ أَنْفُسٍ وَعَلِمَ أَنَّ فِي الْعَشْرَةِ أَفْضَلُ مِمَّنِ اسْتَعْمَلَ فَقَدْ غَشَّ اللّٰهَ وَغَشَّ رَسُوْلَهُ وَغَشَّ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِيْنَ))[1].

अल्लामा मनावी ''तैसीर शर्हे जामेए सग़ीर'' में साबिक़ा ह़दीस या'नी ((من استعمل رجلاً من عصابة)) जो शख़्स एक जमाअ़त में से किसी आदमी को उन के किसी काम पर मुक़र्रर करता है, के तह़त फ़रमाते हैं कि أي: نصبه عليهم أميراً أو قيماً أو عريفاً أو إماماً للصلاة، या'नी ऐसे शख़्स को उन पर अमीर या मुह़ाफ़िज़ या नुमाइन्दा या नमाज़ का इमाम बना देता है जिस से ज़ियादा मक़्बूले इलाही उन में मौजूद था तो वोह ख़ाइन है।

علامہ مناوی رحمہ اللہ تعالٰی در ''تیسیر شرح جامع صغیر'' زیر حدیث اول گوید: من استعمل رجلاً من عصابة أي نصبه عليهم أميراً أو قيماً أو عريفاً أو إماماً للصلاة[2].

امام بخاری در ''تاریخ'' وابن عساکر از ابو امامہ باہلی وطبرانی در ''معجم کبیر'' از مرثد غنوی رضی اللہ تعالٰی عنہما

इमाम बुख़ारी ने ''तारीख़'' में, इब्ने अ़साकिर ने अबू उमामा बाहिली से और त़बरानी ने ''मो'जमे कबीर'' में मर्सद ग़नवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि

1 .....''کنز العمال''، کتاب الأمارة، قسم الأفعال، الحديث: ١٤٦٤٩، الجزء٦، ص٩.

2 .....''التيسير''، حرف الميم، تحت الحديث: ٨٤١٤، ج٦، ص١٠٤.

www.dawateislami.net

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं (और येह ह़दीस अबू उमामा से मरवी है) कि : "अगर तुम्हें पसन्द है कि तुम्हारी नमाज़ मक़्बूल हो तो ऐसा शख़्स इमाम बने जो तुम में से अफ़्ज़ल हो ।"

راوینـد کـه سیدعالم صلی اللّٰه تعالی علیه وسلم فرماید: (وهذا حدیث أبي أمامة) ((إِنْ سَرَّكُمْ أَنْ تُقْبَلَ صَلَاتُكُمْ فَلْيَؤُمَّكُمْ خِيَارُكُمْ))[1]. اگر شما را خوش آید که نمازِ شما مقبول شود پس باید که شمارا بهترین شما امامت کند.

दारे क़ुत़नी और बैहक़ी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अपने में से बेहतरीन लोगों को इमाम बनाओ क्यूंकि वोह तुम्हारे और तुम्हारे रब के दरमियान नुमाइन्दे हैं ।"

دارقطنی وبیهقی از عبداللّٰه بن عمر رضی اللّٰه تعالی عنهما روایت دارند، سید عالم صلی اللّٰه تعالی علیه وسلم فرماید: ((اِجْعَلُوْا أَئِمَّتَكُمْ خِيَارَكُمْ فَإِنَّهُمْ وَفْدُكُمْ فِيمَا بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رَبِّكُمْ))[2] بهترانِ خود را امام کنید که ایشان سفیر شمایند میانِ شما وپروردگار شما عزوجل.

इस बारे में त़बरानी ने "मो'जमे कबीर" में वासिला इब्ने अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी रिवायत की है ।

وفي الباب عن واثلة بن الأسقع رضي اللّٰه تعالى عنه أخرجه الطبراني في "المعجم الكبير".

---

1 ......"كنز العمال"، كتاب الصلاة، قسم الأقوال، الحديث: ٢٠٤٢٩، الجزء٧، ص٢٤٣.

2 ......"سنن الدارقطني"، كتاب الجنائز، باب تخفيف القراءة لحاجة، الحديث: ١٨٦٣، ج٢، ص١٠٨، بتغير قليل.

www.dawateislami.net

ख़ुलासए जवाब येह है कि : येह शख़्स बद तरीन फ़ासिक़ो फ़ाजिर है और बे शुमार वुजूह की बिना पर सख़्त सज़ा का मुस्तहिक़ है इस की इमामत नाजाइज़ और ममनूअ़ है और मुसलमानों को इस की सोह्बत से परहेज़ करना चाहिये और हरगिज़ इजाज़त नहीं कि उस सय्यिद फ़क़ीह (आ़लिमे दीन) को इमामत से बर तरफ़ किया जाए और फ़ल्सफ़े के इस दा'वेदार बे वुक़ूफ़ को उस की जगह मुक़र्रर किया जाए जो शख़्स इस काम के दरपे होगा वोह ख़ुद सज़ा का मुस्तहिक़ और गुनहगार होगा, तक़्दीमे इमामत तो दूर की बात बल्कि उस शख़्स को चाहिये कि मज़्कूरए बाला ख़राबियों से बाज़ आए और ना शुक्री का दाग़ अपने माथे से धोए और मर्दूद फ़ल्सफ़े को रुख़्सत करे और इल्मे दीन की फ़ज़ीलत और उस के हक़ की बुज़ुर्गी पर ईमान लाए फ़ल्सफ़ा परस्ती, तकल्लुफ़ और बेहूदगी को बुरा समझे और ना पसन्द रखे और

(الحاصل خلاصۂ حکم آنست) کہ ایں کس از بدترین فسّاق وفجّار ست وبوجوہ چند درچند تعزیر شدید راسزوار وامامتش ممنوع ونارو ا بلکہ مسلمانان را از صحبتش احتراز اولٰی وزنہار رخصت نباشد کہ آں سیّد فقیہ را از امامت براندازند وایں متفلسف سفیہ را بجایش مقرر وموقر سازند ہر کہ متصدی ایں کار شود خود واجب التعزیر وگنہگار شود تقدیم کو وامامت از کجا بلکہ ایں کس رامی شاید کہ از شناعات مذکورہ خود باز آید داغِ کفران از جبینش شوید وفلسفہ ملعونہ را وداع گوید وبرفضل علم دیں وبزرگی حقش ایمان آرد وتکلف تفلسف وتشدق تصلف راقبیح پندارد وشنیع انگارد واز سرنو

www.dawateislami.net

अज़ सरे नौ कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर इस्लाम की तजदीद इस के बा'द तजदीदे निकाह़ करे इसी में एह़तियात़ है, जैसा कि ''दुर्रे मुख़्तार'' वग़ैरा बड़ी मो'तबर किताबों को देखने से ज़ाहिर हो जाएगा। واللّٰه سبحانهٗ وتعالى أعلم وعلمه جلّ مجده أتمّ وأحكم۔

کلمۂ طیبہ اسلام خواند وبعدازاں تجدید نکاح بتقدیم رساند فإنّ ذلك هو الأحوط كما يظهر بمراجعة "الدرّالمختار" وغيره من أسفارالكملة، واللّٰه سبحانه وتعالى أعلم وعلمه جلّ مجده أتم وأحكم.

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نمبرشمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	القرآن الكريم	كلام الله عزّ وجلّ	ضياء القرآن، كراچی
2	كنز الإيمان	إمام أهل السنة أحمد رضا خان البريلوي ت ١٣٤٠هـ	ضياء القرآن، كراچی
	كتب الحديث		
3	صحيح البخاري	محمد بن إسماعيل البخاري ت٢٥٦هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
4	صحيح مسلم	مسلم بن حجاج القشيري ت٢٦١هـ	دار ابن حزم، بيروت، لبنان
5	سنن الترمذي	محمد بن عيسى الترمذي ت ٢٧٩هـ	دار الفكر، بيروت
6	سنن أبي داود	أبو داود سليمان بن أشعث ت٢٧٥هـ	دار إحياء التراث، بيروت
7	سنن ابن ماجه	محمد بن يزيد ابن ماجه ت٢٧٣هـ	دار المعرفة، بيروت
8	سنن النسائي	أحمد بن شعيب النسائي عليه الرحمة ت٣٠٣هـ	دار الجيل، بيروت
9	سنن الدارمي	عبد الله بن عبد الرحمن الدارمي ت٢٥٥هـ	قديمي كتب خانه، كراچی
10	شرح السنة	محمد الحسين بن مسعود البغوي ت٥١٦هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
11	شعب الإيمان	أحمد بن الحسين البيهقي ت٤٥٨هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
12	سنن الدارقطني	علي بن عمر الدارقطني ت٣٨٥هـ	نشر السنة، ملتان
13	السنن الكبرى	أحمد بن الحسين البيهقي ت٤٥٨هـ	دار الكتب العلمية، بيروت

www.dawateislami.net

14	المسند	الإمام أحمد بن حنبل ت ٢٤١هـ	دار الفكر، بيروت
15	المصنف في الأحاديث والآثار	عبد الله بن محمد بن أبي شيبة الكرفي ت٢٣٥هـ	دار الفكر، بيروت
16	الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان	علي بن بلبان الفارسي ت٧٣٩هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
17	المعجم الأوسط	سليمان بن أحمد الطبراني ت٣٦٠هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
18	مسند أبي يعلى	أبو يعلى أحمد بن علي الموصلي ت ٣٠٧هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
19	المقاصد الحسنة	محمد بن عبد الرحمن السخاوي ت٩٠٢هـ	دار الكتاب العربي، بيروت
20	الجامع الصغير	جلال الدين عبد الرحمن السيوطي ت٩١١هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
21	المعجم الكبير	سليمان بن أحمد الطبراني ت٣٦٠هـ	دار إحياء التراث العربي، بيروت
22	المعجم الصغير	سليمان بن أحمد الطبراني ت٣٦٠هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
23	المستدرك على الصحيحين	محمد بن عبد الله النيسابوري ت٤٠٥هـ	دار المعرفة، بيروت
24	فردوس الأخبار	شيرويه بن شهردار الديلمي ت٥٠٩هـ	دار الفكر، بيروت
25	كشف الخفاء	إسماعيل بن محمّد عجلوني ت١١٦٢هـ	دارالكتب العلمية،بيروت
26	الترغيب والترهيب	زكي الدين عبد العظيم المنذري ت٦٥٦هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
27	كنز العمال	علاء الدين علي المتقي الهندي ت٩٧٥هـ	دار الكتب العلمية، بيروت

www.dawateislami.net

28	مجمع الزوائد	علي بن أبي بكر الهيثمي ت٨٠٧هـ	دار الفكر، بيروت
29	مشكاة المصابيح	محمد بن عبد الله ولي الدين التبريزي ت٧٤٢هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
30	نوادر الأصول	محمد الحكيم الترمذي ت٣١٨هـ	البركة للتجليد الغني، دمشق
31	السنة	أبو بكر أحمد بن عمرو ابن أبي عاصم ت٢٨٧هـ	دار ابن حزم،بيروت، لبنان
	شروح الحديث		
32	مرقاة المفاتيح	علي بن سلطان القاري ت١٠١٤هـ	دار الفكر، بيروت
33	التيسير شرح الجامع الصغير	عبد الرؤوف المناوي ت١٠٣١هـ	دار الحديث، مصر
	كتب التأريخ وأسماء الرجال		
34	تأريخ دمشق = ابن عساكر	علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي ت٥٧١هـ	دار الفكر، بيروت
35	الكامل	عبد الله بن عدي الجرجاني ت٣٦٥هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
36	الطبقات الكبرى	محمّد بن سعد ابن سعد ت٢٣٠هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
	كتب الفقه		
37	حلبي كبير	إبراهيم الحلبي الحنفي ت٩٥٦هـ	سهيل اكيڈمي، لاهور
38	خلاصة الفتاوى	طاهر بن عبد الرشيد البخاري ت٥٤٢هـ	مكتبه رشيديه، كوئٹه
39	تبيين الحقائق	فخر الدين عثمان بن علي الزيلعي ت٧٤٣هـ	دار الكتب العلمية، بيروت
40	التاتارخانية	عالم بن علاء أنصاري دهلوي ت٧٨٦هـ	إدارة القرآن، كراتشي

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-579-880-5
0101164
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com